कीतलसर का कलहंस

(महाकाव्य)

आशीर्वाद :

स्वाध्याय शिरोमणि पूज्य आचार्य
श्री सोहनलालजी म. सा.

रचनाकार :

डॉ. शशिकर 'खटका राजस्थानी'

सम्प्रेरणा :

प्रवचन प्रभाकर श्रद्धेय
वल्लभ मुनिजी म. सा.

प्रकाशक :

श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्यायी संघ
गुलाबपुरा (राज.) ३११०२१ / फोन : 23592

सौजन्य :

श्रीमान् जीवराजजी धनेराजजी दिनेशचन्दजी लूणावत
तिलौरा - (राज.)

मुद्रक :

मंगल मुद्रणालय (ऑफसैट प्रिन्टर्स)
महावीर सर्किल, गंज, अजमेर / फोन : 432626

प्रथमावृत्ति :

अगस्त, १९९७

मूल्य :

लागत मात्र ५०/- रुपये

प्रस्तावना

प्रात: स्मरणीय गुरुदेव श्री पन्नालालजी महाराज एक युग पुरुष थे । समय पर जिसके व्यक्तित्व की छाप पड़ जावे और समय को अमर कर दे वही युग पुरुष या कलहंस कहलाता है ।

डॉ. शशिकर 'खटका राजस्थानी' का पुण्य जागा कि उनके हृदय में गुरुदेव महाप्रज्ञ पन्ना के प्रति भक्ति उदित हुई और महाप्रज्ञ के जीवन पर एक महाकाव्य रच डाला । महाकाव्य रचना कोई मामूली बात नहीं है । भक्ति जब गहराई में जाती है तब अन्तर के बोल फूटते हैं और तब गद्य पद्य बन जाते हैं । 'खटकाजी' ने महाप्रज्ञ पन्ना का बाल काल से लेकर अन्तिम समय तक के जीवन की सारी बातें बहुत ही विस्तृत रूप से दी हैं । महाप्रज्ञ की बचपन की छोटी-छोटी घटनाएँ, संयम व्रत स्वीकार करने और साधु जीवन में निडरता, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, वाणीसिद्धि और उस समय की कुरीतियों पर कुठाराघात आदि को बहुत ही सुन्दर ढंग से अंकित किया है ।

पन्नालालजी महाराज साहब का राजस्थान विशेषकर अजमेर, भीलवाड़ा और नागौर जिलों में वर्चस्व रहा है । इनके प्रभावशाली व्यक्तित्व ने हजारों लोगों के जीवन को नया मोड़ दिया है और आज भी उनकी प्रेरणा से अनेकों समर्पित संस्थायें गरीबों के कल्याण, शिक्षा प्रसार और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं । धर्म को मात्र क्रियाकाण्ड या पूजा पाठ न मान कर जीवन में शुद्ध आचरण और जन कल्याण से जोड़ने की हमेशा प्रेरणा दी है । उनकी जीवनी पर एक वृहत् पुस्तक पहले छप चुकी है लेकिन महाकाव्य जैसी रचना प्रथम बार बनी है और डॉ. शशिकर 'खटका राजस्थानी' को अनेक साधुवाद कि उन्होंने अपनी भक्ति का गहरा रस महाकाव्य में प्रकट किया है । आशा है सभी श्रृद्धालु इस महाकाव्य को पढ़ कर न केवल महाप्रज्ञ के प्रति अपनी श्रृद्धांजली प्रकट करेंगे बल्कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपना व भावी पीढ़ी का जीवन प्रशस्त करेंगे ।

महाकाव्य को नौ सर्गों में बांटा है । प्रथम तीन सर्गों, 'मंगल प्रवेश', 'मंजुल परिवेश' और 'पावन पलायन' में बालक पन्ना का जन्म और उनके परिवार के बारे में परिचय मिलता है । माली जाति में जन्मे इस बालक को कैसे जैन संस्कार मिले यह भी एक संयोग है । परिवार का झगड़ा जागीरदार से हो जाता है और गाँव कीतलसर छोड़ने को मजबूर हो जाता है । थाँवला जाते हैं और एक जैन परिवार का सहारा लेते हैं और यहीं नानकरामजी महाराज के सम्प्रदाय के मोतीचंदजी महाराज से सम्पर्क होता है और कुछ ही समय में "मोती' 'पन्ना' का जोड़ बन जाता है।

माता श्रीमती तुलसा के गर्भ में जब बालक आया तब ही जो स्वप्न आते और माता की जो भावना बनती उसका वर्णन निम्न पद में किया गया है -

स्वप्न में वह वीर देखा चेहरा जिसका शान्त था ।
देखकर वीरों को पीड़ा मन ही मन में क्लान्त था ॥
शस्त्र सारे त्याग करके शास्त्र लेकर चल रहा था ।
देख कर के भीड़ को उसका मुखाम्बुज खिल रहा था ॥

गर्भाधान के दौरान माता तुलसा के भाव निम्न पद में मुखर हो उठे -

ज्यों हुआ कबीर में, मुझ में ऐसा हो रहा है ।
आत्मा परमात्मा का बोध कोई बो रहा है ॥

उन दिनों जागीरदारों का जुल्म बहुत चलता था और गरीब किसानों को बेगार के लिये बुलाया जाता था । इस प्रथा का व इसके विरुद्ध बालूरामजी का आक्रोश का चित्रण भी बहुत सुन्दर किया है । बालक पन्ना को भी इस बेगार में जाना पड़ा जिससे बालक में तत्काल विद्रोह के भाव जाग उठे और फिर कभी न जाने का प्रण कर लिया । जागीरदार और क्रूर हो उठा और उसने बालूरामजी को लठैतों से बुलवा भेजा और उसके बैल भी उठाकर ले गये । परन्तु कहाँ से बालूरामजी में इतनी हिम्मत आई कि उन्होंने लठैतों की लाठी छीन कर जागीरदार पर तान दी और लठैत वहाँ से भाग गये । इस घटना से जागीरदार ने और आतंक बढ़ा दिया और बालूरामजी के परिवार को खुद की व बालक की रक्षा करने हेतु वहाँ से भागने के अलावा और कोई राह नहीं थी । रातों रात भाग कर थाँवला गये और जैन परिवार की शरण ली । यहीं पर गुरुदेव मोतीलालजी महाराज से बालक पन्ना का परिचय हुआ और जैन संस्कारों के बीजों का वपन हुआ । पूर्व संस्कारों की देन से ही शीघ्र गुरु मोतीलालजी महाराज के प्रवचनों का तत्काल असर हुआ और बालक ने गुरुदेव की शरण पकड़ ली ।

माली कुल में जन्में बालूरामजी को पहले शंका थी कि जैन मुनि के संसर्ग में वे आ सकते हैं या नहीं । उन्हें क्या मालूम था कि जैन धर्म जाति-पाँति से काफी ऊपर उठ कर जन-जन हिताय कार्य करता है । जन्म की बजाय कर्म को महत्व देता है । बालक पन्ना में पूर्व संस्कार थे इसलिए जैन मुनि का चोला खूब भाया और जब लोगों को सामायिक में बैठा देखा तो घर जाकर वह भी मुँहपत्ति और श्वेत कपड़ा लाकर सामायिक में बैठ गया । उसका वर्णन चौथे सर्ग 'पन मन-भावन' में निम्न प्रकार किया -

अद्भुत रूप देख पन्ना का अचरज सबको था भारी ।
देखो देखो पन्ना की यह सूरत है कितनी प्यारी ॥

वर्ण, गेहुँआ, बदन गठीला अद्भुत है इसकी काया ।
दीप्त नयन वाला यह पन्ना सबके ही मन को भाया ॥

बालक ने सहज भाव से गुरुदेव से प्रश्न किया –

मैं मुंहपत्ति को बाँध यहाँ पर क्या साधु हो जाऊँगा ।
वसन बदल कर मुनि जैसा ही क्या मैं भी बन जाऊँगा ॥

मुनि आश्चर्यचकित हो पूँछते हैं –

अरे ! पुत्र बोल तेरे मन में भाव यह कैसे आया ।
पहली बार ध्यान से देखा तू मेरे मन को भाया ॥

फिर बालक कहता है –

आप जैसा ही साधु बन कर आगे कदम बढ़ाऊँगा ।
गुरुवर शरण चरण में दे दो नहीं कहीं मैं जाऊंगा ॥

चातुर्मास समाप्त होने के बाद जब महाराज जाने लगे तो बालक ने हठ कर ली और बोला –

ले चलने की हाँ न करी तो आप नहीं जा पायेंगे।
जाने के अरमान आपके सभी धरे रह जायेंगे॥
देख बाल हठ बालू तुलसा बोले मुनिवर हाँ कर दो।
पन्ना न रुकने वाला है आप अभी से हाँ भर दो॥

बालक गुरुवर के साथ चला गया परन्तु बाद में किसी ने बालूरामजी को भड़का दिया और पन्ना को वापस लाने चले गये । बालक पन्ना ने जवाब दिया वह भी अविस्मरणीय है –

पन्ना बोला प्राण दूँ पर लौटना नहीं हाथ है ।
प्राण के आधार गुरुवर अब यही मेरे नाथ हैं ॥
लौटना वश में नहीं अब पिताजी लौट जाओ ।
कायर नहीं सुत आपका मन में समझ जाओ ॥

इस जवाब के बाद पिता को लौटने के अलावा कोई राह नहीं थी । उन्होंने लिख कर अनुमति पत्र दिया और इससे पन्ना बालक को अति हर्ष हुआ । इसके बाद शीघ्र ही आनन्दपुर कालू में ग्यारह वर्ष की उम्र में बड़े शान से दीक्षा हुई। बालक पन्ना मुनि पन्नालाल बन गया और गुरु मोतीलालजी ने सुघड़ बनाने का जिम्मा लिया । दीक्षा के समय मुनि पन्नालालजी ने कविता भी सुनाई और अपनी वाणी से व सुन्दर मुख कांति से जन-जन का मन मोह लिया –

गीत सुना तो गद्‌गद सब नर नारी थे ।
देख देख पन्ना को सब वलिहारी थे ॥
हाथ जोड़ पन्ना ने अब शीश झुकाया ।
कई गुना कर दूँगा जो गुरु से पाया ॥

सचमुच मुनि पन्नालालजी ने गुरु से पाया उसे कई गुना किया और पूरे अजमेर, मारवाड़ व मेवाड़ में गुरु का व अपना नाम रोशन किया और जैन धर्म का दीप जलाया ।

अब मुनि पन्नालालजी गुरुदेव के साथ विचरण करने लगे व ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना करने लगे । परन्तु संयोग था कि गुरुदेव मोतीलालजी का संसर्ग, अधिक समय तक नहीं मिला और अजमेर में उनका स्वर्गवास हो गया । बाल मुनि पन्नालाल को गहरा धक्का लगा लेकिन विचलित नहीं हुए बल्कि अधिक दृढ़ता से मार्ग पर प्रशस्त हुए । उन्हें नवकार मन्त्र में अटूट श्रद्धा थी और कुछ मनचले नवयुवकों ने जब उनको चमत्कार दिखाने को मजबूर किया तो शक्तिपात किया और ऊपर खड़े लोग अचानक खुदी हुई खाई में गिर गये । वे सब डर गये और उन्होंने माफी मांगी । जब वापस आकर अपने गुरु धूलचंदजी को घटना बताई तो उनको प्रताड़ना दी और कहा -

विद्या पा विवेक खोया तो जिन्दगी बेकार है ।
ऊर्ध्वगामी होना ही तो सुसाधना का सार है ॥

गुरु ने सही वक्त पर बाल मुनि का सही मार्ग निर्देशन किया अन्यथा कई लोग इन छोटे मोटे चमत्कारों से गर्वित हो पथ भ्रष्ट हो जाते हैं और धर्म का मार्ग भूल कर लोगों को चमत्कार दिखाना ही धर्म का मार्ग समझ बैठते हैं ।

अजमेर से चातुर्मास समाप्त कर जनपद में विहार कर ग्रामानुग्राम विचरण किया और जन सम्पर्क बढ़ाया । उनकी प्रतिभा और साधना का परिचय लोगों को मिलने लगा और उनके प्रति भक्ति भाव बढ़ने लगा । धीरे-धीरे मुनि गजमलजी, धूलचंदजी आदि सन्त भी काल कर गये ।

षष्ठम सर्ग 'महातपस्वी - दिव्य तपस्वी' में मुनि श्री पन्नालालजी का एक नया पक्ष उजागर किया । केवल आत्मोन्नति और अध्यात्म पर ही उनका ध्यान नहीं था बल्कि राष्ट्र धर्म भी कोई चीज है और उसका भी धर्म से पूरा सम्बन्ध है । भारत उस वक्त अंग्रेजों की गुलामी का शिकार था और स्वतन्त्रता आंदोलन चल रहा था । गुरुदेव पन्नालालजी महाराज स्वतन्त्रता के इन सैनानियों को प्रोत्साहन देते व मनोबल बढ़ाते । इस बात को यूँ दर्शाया -

जिनवाणी के संग संग पन्ना जिस ग्राम नगर में जाते थे ।
भारत माँ की आजादी का वे हर पल अलख जगाते थे ॥

स्वतन्त्रता सैनानी जैसे जयनारायण व्यास जो बाद में राजस्थान के मुख्यमंत्री भी बने और जोधपुर स्टेट से निष्कासित थे वे गुरुदेव पन्नालालजी के पास प्रेरणा व आशीर्वाद लेने आते थे और नई स्फूर्ति लेकर जाते थे ।

नसीराबाद में सभाओं पर पाबंदी होते हुए भी धर्म सभा हुई तो इसे कानून का उल्लंघन समझ कर सेना का अंग्रेज अधिकारी पूछताछ के लिये आया लेकिन निर्भीकता से उत्तर देने पर वह चला गया । उसी दिन पुलिस किसी बन्दी को ढूँढ रही थी परन्तु कुछ लोगों ने समझा कि शायद गुरुदेव को पकड़ने पुलिस आई है अतः गुरुदेव को परामर्श दिया कि वे चुपचाप विहार कर दें या छुप जायें लेकिन उन्होंने मना कर दिया और अपने स्थान पर डटे रहे । उन्होंने कहा कि जब अपराध किया ही नहीं तो डरना क्या । बाद में सब श्रावक शर्मिन्दा हुए कि उन्होंने गलत समझ लिया था और गुरुदेव को गलत खबर व परामर्श दिया । गुरुदेव की हिम्मत व निडरता इससे भी स्पष्ट थी कि डाकू मोड़सिंह 'खरवा' जो कानून का बागी था उससे सब लोग डर रहे थे और गुरुदेव निर्भीक होकर व्याख्यान दे रहे थे । सब दंग रह गये जब उसने गुरुदेव के चरण छू कर अपनी भक्ति का प्रदर्शन किया। ऐसे कई आख्यान मिलेंगे तो गुरुदेव की निडरता व निर्भीकता का प्रदर्शन करते हैं और इस महाकाव्य में उनका सुन्दर चित्रण किया है । कुछ दुष्ट लोगों ने सांप लाकर भी गुरुदेव का परीक्षण किया परन्तु तनिक भी नहीं हिले और सांप अपने आप वापस चला गया ।

देवी देवताओं के स्थान पर पशु बलि की प्रथा कई स्थानों पर चल रही थी। धर्म के नाम पर निरीह प्राणियों की जान ली जा रही थी । कुछ कुल गुरु अपने लोभ के कारण लोगों को गुमराह कर रहे थे । ऐसे स्थानों पर जाकर स्वयं गुरुदेव ने प्रेरणा दी और धर्मान्ध कुल गुरुओं से सीधी टक्कर ली । उनका जोश कभी उनको मर्यादा से बाहर भी ले गया परन्तु शीघ्र ही प्रायश्चित कर अपनी सीमा में वापस आ गये । इस प्रकार की भूल यदि श्रावक वर्ग ने भी इंगित की तो उसका बुरा न मान कर जो सत्य है उसे स्वीकार किया । जगह-जगह पर अहिंसा का प्रचार किया और इसके लिये सभी धर्मों के शास्त्रों में निहित उपदेशों या सूत्रों का उल्लेख कर लोगों को समझाते कि किसी भी धर्म ने हिंसा का समर्थन नहीं किया। सब जाति व धर्म के लोगों से सम्पर्क करते व उनको प्रेरणा देते । केवल एक समाज में सीमित होकर नहीं रहे । कुरान का उद्धरण देने से सरवाड़ में साम्प्रदायिक तनाव की स्थिति भी आ गई लेकिन विद्वान मौलवी ने पहले गुरुदेव से सीधा सम्पर्क कर समाधान करने की कोशिश की और वह गुरुदेव से इतना प्रभावित हुआ कि उनकी प्रेरणा से मांस भक्षण बंद कर दिया । कुरान की आयतों को सुना कर मौलवी की आँखें खोल दीं । सर्व धर्म समभाव और अहिंसा की प्रेरणा से जैन-जैनेतर सब

लोग आकर्षित होते थे और जन-जन का सैलाब उनके लिये उमड़ता था ।

धर्माचरण के साथ समाज में व्याप्त विषमता, कुरीतियाँ और शिक्षा के अभाव की ओर भी गुरुदेव का ध्यान गया । गरीबों की मदद के लिये नानक श्रावक समिति का गठन कराया जिससे गरीबों व विधवाओं की मदद की जा सके । शिक्षा प्रसार के लिये जैन गुरुकुल, गुलाबपुरा जो आज गाँधी विद्यालय के रूप में मौजूद है की स्थापना कराई जिससे संस्कारी शिक्षा दी जा सके । गुरुकुल नाम इसलिये रखा कि पुराने जमाने की गुरुकुल के अनुरूप शिक्षा मिले । बाद में वित्तीय साधनों की कमी के कारण विद्यालय सहायता प्राप्त गाँधी विद्यालय बन गया और आवासीय हिस्से को जैन गुरुकुल छात्रावास बना दिया जहाँ आज भी छात्रों को जैन धर्म की व अच्छे संस्कारों की शिक्षा दीक्षा दी जाती है ।

गुरुदेव भविष्यद्द्रष्टा थे और बोले कि साधुओं की संख्या कम हो जाएगी और बहुत से ग्राम नगर बिना साधुओं के चातुर्मास के रहेंगे । ऐसे समय में जनता धर्माचरण कैसे करेगी । अत: स्वाध्याय संघ का गठन किया जिसमें गृहस्थों को शास्त्रों का ज्ञान कराया जाता है और पर्युषण में साधुओं का जहाँ चातुर्मास नहीं होता वहाँ जाकर श्रावक श्राविकाओं को धर्माराधन कराते हैं और व्याख्यान दे कर धर्म का प्रचार प्रसार करते हैं । स्वाध्यायियों का प्रशिक्षण स्वाध्यायी संघ की आधारभूत प्रक्रिया है और आज उसी स्वाध्यायी संघ के अधीन महिलाओं के स्वाध्याय मंडल 32 स्थानों पर चल रहे हैं और क्रमानुसार परीक्षा दे कर महिलाएँ उच्चस्थ परीक्षा पास कर रही हैं । अब महिलाएँ भी स्वाध्यायी के रूप में जा कर सेवा देने लगी हैं । स्वाध्यायी संघ का मुख पत्र 'स्वाध्याय संदेश' प्रति माह छपता है ।

गुरुदेव की हमेशा प्रेरणा रही कि मानव की सेवा करें । शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में जगह-जगह पर संस्थाएँ कार्य कर रही हैं उनमें कुछ उनके समय में चलीं और कुछ उनके बाद स्थापित हुई । गुरुदेव के बाद में प्रवर्तकों व आचार्यों ने उसी परम्परा को निभाया है । प्राज्ञ महाविद्यालय व प्राज्ञ बाल मन्दिर विजयनगर में चल रहे हैं, प्राज्ञ मृगी समिति हजारों मृगी के रोगियों की सेवा कर रही है और अजमेर में सोहन चिकित्सालय चल रहा है । ऐसी और भी कई संस्थाएँ हैं ।

कुरीतियाँ निवारण में मृत्यु भोज न करने का नियम जगह-जगह पर दिलाये और इस प्रथा को रोकने का प्रयास किया । महाराज के दर्शनार्थ आने वाले भाइयों और बहनों को भोजन कराने के लिये जगह-जगह पर बारी प्रथा चलती है जिसमें जिस दिन जिस श्रावक का नम्बर होता है उसके यहाँ भोजन व्यवस्था होती है । इसमें भी भोजन में मिठाई बनाने का रिवाज था और एक दूसरे से होड़ लगती थी कि कौन कितनी मिठाई बनाता है व भोजन को खर्चीला बनाता है । इससे गरीब व मध्यम वर्ग के श्रावकों पर अत्यधिक भार पड़ रहा था और कई लोग कर्जा लेने में उलझने लगे । गुरुदेव ने व्यवस्था दी कि बारी में कोई भी मिठाई

मिठाई नहीं बनायेगा । बाहर से आने वाले श्रावक श्राविकाओं के लिये भोजन व्यवस्था आवश्यक थी क्योंकि गाँवों में होटल ढाबे आदि नहीं होते और आतिथ्य गाँवों की परम्परा है उसे तोड़ना भी नहीं चाहिये लेकिन इसकी आड़ में मिठाइयाँ आदि बना कर खर्चीली व्यवस्था भी नहीं कायम होनी चाहिये । यह व्यवस्था आज भी कायम है और स्वाध्यायी सम्मेलन के दिन के अलावा बारी में कोई भी मिठाई नहीं बनती। यह उस वक्त का प्रगतिशील कदम था ।

गुरुदेव जबरदस्त भविष्यदृष्टा थे । वे जो कुछ बोलते थे करीब सत्य ही हो जाता था या हो गया । एक दृष्टान्त तो इस पुस्तक में दिया है । जब गाँधी विद्यालय के छात्र बाहर भ्रमण पर जा रहे थे तो निर्देश दिया कि या तो अनजान जंगल में जावें नहीं और जावें तो कोई भी अनजान फल खावें नहीं । इस निर्देश का पालन कुछ छात्रों ने नहीं किया और वे बेहोश हो गये । इसी प्रकार शादी ब्याह व अन्य अवसरों पर अत्यधिक खर्चों को देखकर बोले कि 'तुम अभी अनाज व्यर्थ कर रहे हो । अभी तो तुम मुट्ठी में नोट ले जाते हो और बोरी भर कर अनाज लाते हो। समय आ रहा है जब बोरी भर कर नोट ले जाओगे और मुट्ठी भर अनाज लाओगे ।' यह बात आज की बढ़ती महंगाई को देखकर स्पष्ट ही दृष्टिगोचर हो रही है ।

महाप्रज्ञ पन्ना का 'महानिर्वाण - मुक्त प्राण' नवम् सर्ग, में वर्णन किया है। पंडित मरण या समाधिमरण का वर्णन कर यह दर्शाने की कोशिश की है जीवन उसी का सफल है जिसने सही ढंग से मृत्यु का वरण किया । महाप्रज्ञ ने बसंत पंचमी को प्रातःकाल समाधि ली और 80 साल की वय में 68 वर्षावास कर जन-जन को सचेत व जागृत कर स्वयं लम्बी नींद में सो गये । सभी भक्तजन स्तब्ध रह गये । परन्तु महाप्रज्ञ का अतिशय इतना जबरदस्त है कि लोगों को विश्वास है कि उनके नाम से पत्थर भी तैरता है । इस महाकाव्य के रचयिता ने भी माना कि महाप्रज्ञ ने ही उनके मन के संकल्प को पूरा किया । कुछ शब्द इस प्रकार हैं -

मैं अल्पज्ञ भला कैसे आज उत्तुंग शिखर छू पाऊँगा ।
हृदय में संशय भारी था कि मैं कैसे कलम उठाऊँगा ॥
शीश नवाया श्रद्धा से और कर जोड़ प्रभु का नाम लिया ।
फिर महाकाव्य के नायक को मन ही मन प्रणाम किया ॥
उस प्राज्ञ पुरुष का तेज मेरे अन्तर में समा गया ।
कवि मेरा हुआ समर्थ, नाम फिर महाकाव्य को रचा गया ॥
उनका मात्र नाम लेने से काम सफल हो जाते हैं ।
निश्चित महाकाव्य पूरा होगा हम तुमको बतलाते हैं

जब महाप्रज्ञ की 100वीं जन्मतिथि आई पुष्कर से कीतलसर

की गई और यह प्रथम पद यात्रा थी । काफी लोग इसमें जुड़े और गाँव-गाँव में जाकर पद यात्रियों ने लोगों को व्यसन मुक्त होने की प्रेरणा दी । एक सप्ताह बाद कीतलसर पहुँचे । इसके पूर्व वहाँ गाँव में अगुआ दल ने पहुँच कर पन्ना गुरु की बात कही तो उनके कुछ रिश्तेदार मिले और उन्होंने जानकारी दी कि कहाँ उनका जन्म हुआ । जब बताया कि वे प्रसिद्ध जैन संत हुए तो गाँव वालों में गहरी भक्ति जागी और वहाँ उनकी स्मृति में एक अस्पताल बनाने की बात चली । एक रात में जमीन मिली और वही जमीन मिली जहाँ उनका जन्म हुआ था । उस पर शिलान्यास हुआ और करीब 2 लाख लगा कर अस्पताल बनाने की घोषणा हुई । परन्तु महाप्रज्ञ का अतिशय कि वह करीब 10 लाख का भवन बना और करीब एक या डेढ़ साल में ही पूरा हो गया । इस काम को पूरा करने के लिये महेश्वरी समाज के श्री मदनलालजी खटोड़ ने वृद्धावस्था के बावजूद सारा जिम्मा लिया और इस निर्माण कार्य को पूरा किया । गाँव के सब लोग इस अस्पताल में एकत्र हो पन्ना गुरु की भक्ति करते हैं और उनके गुणगान करते हैं । उनके अतिशय से काफी मरीज आज लाभ उठाते हैं । महाप्रज्ञ का अतिशय सब महसूस करते हैं और उनका नाम लेकर जो भी कार्य प्रारम्भ करते हैं शीघ्र पूरा हो जाता है । कवि ने महाकाव्य में जो भावना व्यक्त की है वह जन-जन की भावना है ।

मंगलाचरण हर सर्ग के प्रारम्भ में दिया है उसमें भक्ति भावना व्यक्त की है, जैन अणुव्रत व महाव्रतों का उल्लेख किया है और महाप्रज्ञ के कर्तव्य और वक्तव्य का पूरा वर्णन किया है । प्रगतिशील कवि होने के कारण शशिकरजी की कलम उन विषयों पर और प्रखर हुई है जहाँ विषय बेगार प्रथा, आजादी की जंग और मृत्यु भोज बंद करने जैसे उपस्थित हुए हैं । महाप्रज्ञ महाकाव्य में भी भक्ति-भाव पूर्णतः प्रदर्शित किया है । इसके अतिरिक्त नानक वंश की प्रशस्ति भी दी है जिसमें साध्वीगण का भी पूरा वर्णन किया है क्योंकि अधिकांश प्रशस्तियाँ साधुओं पर ही हैं और साध्वीगण की बहुत कमी मिलती है ।

स्वाध्यायी संघ गुलाबपुरा महाप्रज्ञ की देन है । अपने ही प्राणदाता का महाकाव्य प्रकाशित कर स्वाध्यायी संघ धन्य हो उठा है । इसको छपाने में जिन महानुभावों ने अर्थ योग दिया है उनको भी साधुवाद । यह महाकाव्य और इसके अंश लोगों की जबान पर चढ़ जावें यह हमारी अपेक्षा है ।

रणजीतसिंह कूमट
अध्यक्ष
श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा

प्रकाशकीय

महाकाव्य महापुरुषों के जीवन की अनुकृति होते हैं । दैवीय गुण-सम्पन्न, सात्विक वृत्तिवाले धीरोदात्त या धीर प्रशान्त व्यक्ति इसके नायक होते हैं । वे प्राय: राजन्यवर्ग के धीर, वीर, गंभीर पराक्रमी व्यक्ति होते हैं जो इतिहास प्रसिद्ध होकर जन-मानस में बसे हुए होते हैं । शृंगार वीर या शान्त रस में एक रस की प्रधानता होकर शेष रस गौणरूप से प्रयुक्त होते हैं ।

संस्कृत साहित्य में एवं तत्परंपरानुवर्ती हिन्दी साहित्य में महाकाव्य लेखन की परम्परा रही है जिनमें महान् आत्माओं के महान् जीवन का वर्णन किया गया है। वर्णन-शैली भी अन्य काव्यों की अपेक्षा महानता लिए होती है ।

भगवान महावीर एवं महात्मा बुद्ध के आविर्भाव के बाद ऐसे महाकाव्य भी लिखे गए जिनमें संसार की विनश्वरता का अनुभव करने वाली विरक्त आत्माओं को नायक बनाया गया है एवं उनमें वैराग्यभाव-वर्द्धक शान्तरस की प्रधानता रही है ।

प्रस्तुत महाकाव्य 'कीतलसर का कलहंस' भी एक ऐसे ही विरक्तात्मा महापुरुष के जीवन से संबंधित है जो बाल्यकाल से ही अपने लिए न जीकर दूसरों के लिए जीया है । जिसके यशस्वी एवं वर्चस्वी जीवन में क्षमा, दया, निर्भीकता, वात्सल्य, परदु:खकातरता आदि वे सभी सात्विक गुण विद्यमान रहे जिनकी किसी महाकाव्य के नायक में परिकल्पना की जा सकती है । उन्होंने मानव जीवन से संबंधित सांस्कृतिक क्षेत्र के कोने का संस्पर्श कर अपने ऐतिहासिक अस्तित्व को प्रमाणित किया है ।

यशस्वी कविवर श्री शशिकरजी 'खटका राजस्थानी' प्राय: उनके जयन्ती महोत्सवों (भादवा शुक्ला ३) पर व अन्य मुख्य अवसरों पर प्रवचन-श्रवणार्थ उपस्थित होते रहते थे । पूज्य गुरुवर्य श्री के उदात्त जीवन-प्रसंगों को सुनकर, उन्हें काव्यरूप में निबद्ध करने की भावना जगी । श्रद्धेय स्वाध्याय शिरोमणि आचार्यप्रवर श्री सोहनलालजी म. सा. एवं प्रवचन-प्रभाकर श्रद्धेय वल्लभ मुनिजी म. सा. से उन्होंने संपर्क किया। उनसे, एवं साध्वी प्रमुखा श्रद्धेया जयवंत कँवरजी म. सा. से पूज्य गुरुवर्य श्री के जीवन से संबंधित अनेक घटनावृत्त सुनकर उन्हें रोमांच हो आता था । फलस्वरूप गुरुवर्य से संबंधित महाकाव्य लिखने का उनका विचार संकल्प-रूप में परिणत होकर प्रस्तुत रूप में हमारे समक्ष आ सका है । इसे महाकाव्यत्व के धरातल पर सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने की कवि-हृदय श्री शशिकरजी ने पूरी कोशिश की है, इसके लिए हम उनके आभारी हैं ।

श्रद्धेय गुरुवर्य प्रवचन प्रभाकर श्री वल्लभ मुनिजी म. सा. ने इसे आद्योपान्त पुनः पुनः पढ़ा, घटनाक्रमों की प्रामाणिकता की उपलब्ध अभिलेखों से जाँच की तथा अपने सुझाव भी दिए । हम चाहते थे कि उनके जीवन-काल में ही यह प्रकाशित होकर भक्तजनों के कर-कमलों में आ जाय किन्तु 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' के अनुसार समय-समय पर कई विघ्न उपस्थित होते रहे एवं यह महाकाव्य प्रकाशित रूप में उनके दृष्टिपथ में नहीं आ सका, इसका हम सभी को अफसोस रहा ।

वर्तमान आचार्य शासन-गौरव श्रद्धेय सुदर्शनलालजी म. सा. के आशीर्वाद से इसके प्रकाशन ने पुनः गति पकड़ी, अतः उनके प्रति हम अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति करते हुए सादर नमन करते हैं ।

इसके प्रकाशन में तिलौरा के श्रेष्ठीवर्य श्रीमान् जीवराज जी सा. लूणावत के परिवार ने आर्थिक सहयोग प्रदानकर अपने द्रव्य का सदुपयोग करते हुए गुरुभक्ति, का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है, अतः उनके प्रति भी हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं ।

पाठकगण, इसे पढ़कर पूज्य गुरुवर्य श्री के उदात्त जीवन से प्रेरणा प्राप्तकर अपने जीवन को उन्नत बनायेंगे तो इस परिश्रम की सार्थकता सिद्ध होगी । किंवहुना।

नेमीचन्द खाबिया
मंत्री
श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्यायी संघ
गुलाबपुरा

गुलाबपुरा
दि. 15 अगस्त, 1997

धर्म एवं समाज सेवा में संलग्न -

तिलौरा का लूणावत परिवार

राजस्थान में अजमेर जिलान्तर्गत तिलौरा नामक ग्राम अपनी प्राकृतिक छटा के कारण सुविख्यात है । यहाँ प्रियधर्मी सुश्रावक श्रीमान् छीतरमलजी सा. लूणावत के परिवार में श्रीमान् जीवराजजी सा., श्रीमान् बनेराजजी सा. एवं श्रीमान् अभयराजजी सा. नाम से तीन पुत्रों ने जन्म लिया। तीनों ने ही अपनी ईमानदारी, मिलनसारिता और परिश्रमशील स्वभाव के कारण व्यावसायिक क्षेत्र में अतिशीघ्र कुशलता अर्जित कर ली एवं समाजसेवा व धार्मिक निष्ठा की दृष्टि से अग्रगण्य बन गए।

श्रीमान् जीवराजजी सा. के धार्मिक संस्कार एवं व्यावसायिक कुशलता के गुण आपके सुपुत्र श्रीमान् सुरेशचंदजी सा. में भी स्पष्टरूप से विकसित हुए। सरलता एवं सादगीमय जीवन बिताने वाले श्री सुरेशचंदजी सा. का अतिथि-संस्कार एवं कर्त्तव्य परायणता का गुण तो अनुकरणीय ही है । आपका व्यवसाय वर्तमान में तिलौरा, पुष्कर, इचलकरंणजी में प्रगति पर है । श्रीमान् सुरेशचन्दजी के सुपुत्र श्रीमान् सतीशचन्दजी (इचलकरंणजी), श्री नवीनकुमारजी, श्री मुकेशकुमारजी लूणावत हैं।

श्रीमान् बनेराजजी सा. लूणावत लगभग ३५ वर्षों पूर्व मद्रास पधार गए जहाँ आपके सुपुत्र श्रीमान् सम्पतराजजी, श्रीमान् ज्ञानचन्दजी एवं श्रीमान् अशोककुमारजी ने क्रमशः पांडिचेरी, कोडम्बाकम् व चेन्नै में अपने व्यवसाय का प्रसार कर विपुल ख्याति अर्जित की ।

श्रीमान् अभयराजजी सा. का परिवार, आपके सुपुत्र श्रीमान् दिनेशचन्दजी, श्रीमान् महेशचन्दजी, श्रीमान् प्रकाशचन्दजी ब्यावर में व्यवसायरत हैं एवं प्रामाणिकता व उदारता में अग्रणी परिवारों में हैं ।

लूणावत परिवार के सभी सदस्यों में गुरुभक्ति समाज सेवा की भावना एवं धार्मिक संस्कार प्रारम्भ से ही कूट-कूट कर भरे गए हैं। आचार्य प्रवर श्रद्धेय सोहनलालजी म. सा. के प्रति सम्पूर्ण परिवार सदैव श्रद्धाशील रहा है ।

गुरु-भगवंतों के प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति के लिए, इस परिवार ने प्रस्तुत महाकाव्य के प्रकाशन में अनुकरणीय सहयोग प्रदान कर उदारता प्रदर्शित की है अतः सम्पूर्ण परिवार धन्यवादार्ह है ।

❂ ❂ ❂

मानस-तरंग

जीवन के जिस क्षण में आत्मा का झरोखा खुलता है उसी क्षण अन्तर में कविता की उर्मियाँ उठने लगती हैं। जन रंजन के लिए लिखते समय जब जब भी मैं खामोशी के क्षणों में गुजरता तब अन्तर वीथियों से निकल कर कई विचार प्रश्न बनकर सामने खड़े हो जाते कि जो कुछ लिखा जा रहा है क्या वह शाश्वत है। जब तक तुम हो इन शब्दों को बांटते रहोगे उसके बाद क्या होगा ?

जैन महाकाव्यों पर शोध करते समय कई बार विचार हुआ कि भविष्य में यदि विशिष्ट सृजन का भाव बना तो एक महाकाव्य की सृजना अवश्य करनी है। जैन धर्म एवं उसके सन्तों से मेरा लगाव बाल्यकाल से ही रहा है, उसी का प्रतिफल है कि जैन महाकाव्यों पर शोध करने की प्रेरणा मुझे मिली। मेरे शोध निर्देशक डॉ. नरेन्द्र भानावत जी से जब जब भी काव्य रचना पर चर्चा होती वे हर बार यही कहते आपको भी ऐसी कोई अनुपम कृति का सृजन करना चाहिए। उनकी भावना को समझ कर मैं उन्हें सदैव यही विश्वास दिलाता कि आप जैसे गुरुजनों का आशीर्वाद रहा तो मैं यह कार्य अवश्य करूँगा।

शोध कार्य की समाप्ति के उपरान्त बिजयनगर में आयोजित एक धर्म सभा में महासती जयवन्त कंवरजी की सुशिष्या डा. कमलाजी से महाकाव्यों पर चर्चा हुई तब मैंने अपने भाव उनके समक्ष प्रकट किये कि मैं यह महाकाव्य लिखने की सोच रहा हूँ मगर किस पर लिखूं यह अभी तक तय नहीं कर सका। जन मानस में जो श्रद्धा के केन्द्र रहे हैं उनमें किसे अपनी कविता का केन्द्र बनाऊँ क्या आप मेरा मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। उन्होंने तत्काल ही मेरे विचारों को सहारा देकर कहा कि पूज्य गुरुदेव पन्नालाल जी महाराज का जीवन त्याग, तप, दया एवं प्रेम का अद्भुत संगम है। गुरुदेव प्राज्ञ किंकर श्री वल्लभ मुनि जी म. सा. द्वारा उनके जीवन की आद्योपांत मर्मस्पर्शी जीवन गाथा जो स्वयं में ही करुणा का काव्य है सुनकर तो मन गदगद हो उठा।

वर्तमान युग की भौतिक चकाचौंध में कुछ पुण्य पुरुष ही ऐसे होते हैं जो स्वयं भी मुक्ति का पथ अपनाते हैं एवं दूसरों को भी उसकी प्रेरणा प्रदान करते हैं। आज का संसारी जीव सत्य से दूर निकलता जा रहा है, प्रतिकूलता के प्रांगण में उसका मन उद्विग्न हो उठता है। जीवन का हर क्षण उसके अनुकूल हो इसकी उसे छटपटाहट लगी रहती है। इस वातावरण में प्रज्ञा पुन्ज पन्नालाल जी जैसे संत ही युग के मार्गदर्शक बनकर धरती को निहाल करते हैं।

काव्य लेखन हेतु जिस क्षण मैंने लेखनी उठाई मुझे लगा कि मैं स्वयं नहीं बल्कि कोई दैविक शक्ति ही यह कार्य कर रही है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। मेरे

भावों का ताल शनैः शनैः सागर के समान बनने लगा। भाव और भाषा की मधुर झंकार मेरे मन में उठने लगी। पूज्य श्री पन्नालाल जी का जीवन तो जन्म से लेकर निर्वाण तक संसार के लिए उपकारी रहा है। आज पूरी मानव जाति उनके प्रति कृतज्ञ बनकर नत मस्तक है। वे ऐसे सुमन थे जो संघर्षों के शूलों में खिलकर अपनी सौरभ से सभी को सुवासित कर गये। वे पद दलित दयनीय जीवों के प्रति सदैव दयालु बन कर रहे। दीन दयाल, दया सागर, दिव्य ज्ञान दाता, प्रेम प्रदाता, दिक्भ्रमित हुई मानवता को सुमार्ग दिखाने वाले दिग्देवता, धरती के दिव्यांशु को मेरा शतशत नमन है। साधना के कंटकाकीर्ण मार्ग पर अहर्निश आगे बढ़ते हुए जिन्होंने जीवन लक्ष्य को पाया। अपने सुमधुर कंठों से जिनवाणी के गीतों को गाया। कर्मठ साधक बनकर जप तप से जीवन को ऊपर उठाया। करुणा की कादम्बिनी बन कर के जो शुष्क हृदयों पर सतत बरसे, सत्य का बोध कर जिनसे कापालिक हरषे। हे सत्य-अहिंसा, प्रेम-दया, ज्ञान-चारित्र की लहरों पर विचरण करने वाले कीतलसर के कलहंस यह संसार आपका आभारी है।

यह कृति महाकाव्य की कसौटी पर चाहे खरी न उतरे, उसका मुझे कभी भी मलाल नहीं रहेगा। मेरी लेखनी उस दिव्य सन्त के नाम को लिख सकी यही उसकी सफलता है। इसमें जो अच्छा है उस पर सुधी पाठकों का अधिकार है जो सामान्य है वह मेरे हिस्से का है। काव्य के आलोचकों को इसमें अलंकारों का सघन उपवन देखने को न मिले न सही मगर ज्ञान, दर्शन व चारित्र की त्रिवेणी का प्रवाहक अदृश्य हिमालय उन्हें अवश्य आकर्षित करेगा।

कृति को मूर्त रूप में लाने के लिए जहाँ डॉ. श्री कमल प्रभाजी की प्रेरणा, आचार्य सोहनलाल जी म. सा. का आशीर्वाद एवं श्री वल्लभ मुनिजी का मार्गदर्शन सदैव मेरे मानस पटल पर अंकित रहेगा। मैं उन सभी सन्तों का जिन्होंने मुनि श्री पन्नालालजी की गौरव गाथा सुनाकर मेरे मन को आल्हादित कर दिया उनमें राष्ट्र सन्त श्री गणेश मुनि शास्त्री, लोक मान्य संत श्री रूप मुनिजी, उपप्रवर्तक श्री सुकन मुनिजी के साथ-साथ डॉ. नरेन्द्र भानावत प्रो. राजस्थान विश्व विद्यालय एवं डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली प्रो. राज. महाविद्यालय, अजमेर का भी चिर ऋणी रहूँगा जिन्होंने कृति की संरचना में मुझे सहयोग दिया। अपनी धर्मपत्नी सीता पारीक पूजा श्री का भी मैं आभारी हूँ जिसने रचना कर्म में हर क्षण अपनी सहभागिता प्रदर्शित की।

प्रस्तुत कृति को पाठकों के कर कमलों में पहुँचाने का गुरुत्व भार ग्रहण कर स्वाध्याय संघ गुलाबपुरा ने जो पहल की उसके लिए मैं उसे भी साधुवाद प्रदान करते हुए पुनः कीतलसर के कलहंस पूज्य प्रवर्तक दीनदयाल श्री पन्नालाल जी म. सा. को वन्दन करता हूँ।

पर्युषण पर्व-99 — डॉ. खटका राजस्थानी

7, कवि कुटीर, बिजयनगर — एम.ए.,पीएच.डी

श्रद्धेय माता-पिता
के साथ
जन मन के आराध्य देव
आत्म विजयी
अभय अजयी
महिमा मयी
मंगल कारी
जग उपकारी
भव भय हारी
पूज्य प्रवर्तक
धर्म संवर्द्धक
प्रज्ञा सर्जक
दीन दयाल
महा कृपाल
श्री पन्नालाल
जी तुम्हें प्रणाम !
पावन चरणों में अर्पित
कृति यह अभिराम !!

डॉ. शशिकर खटका राजस्थानी
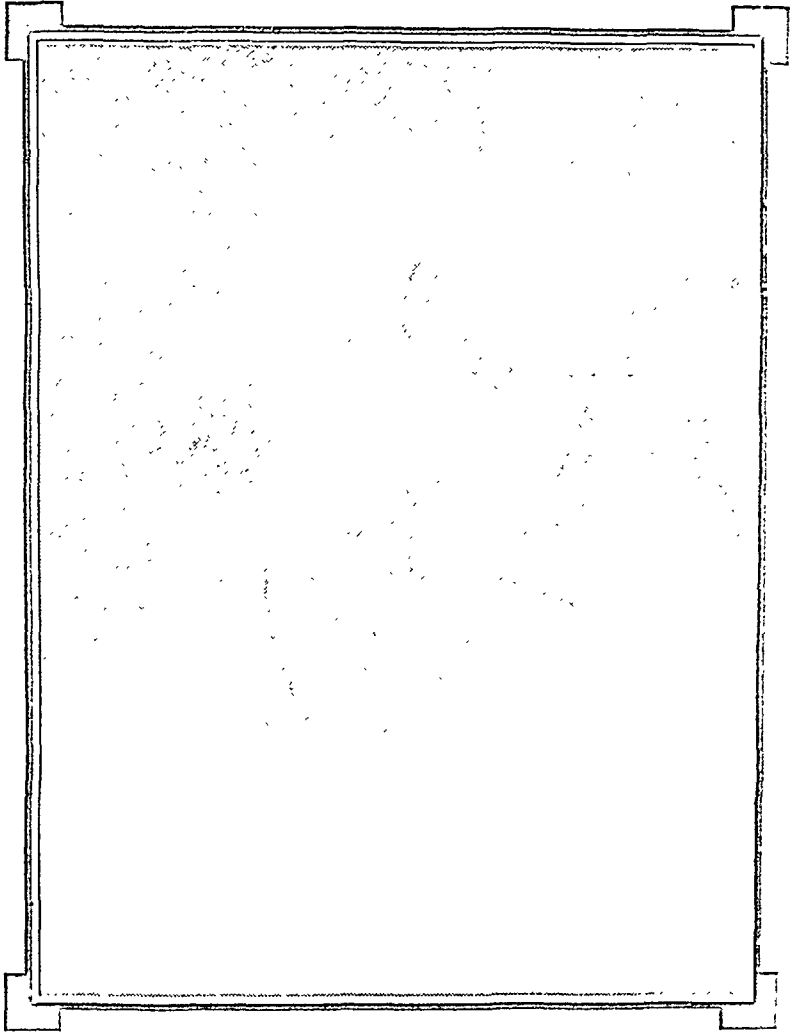
श्रीमान् स्व. सेठ सा. श्री अभयराजजी लुणावत
तिलौरा (अजमेर)
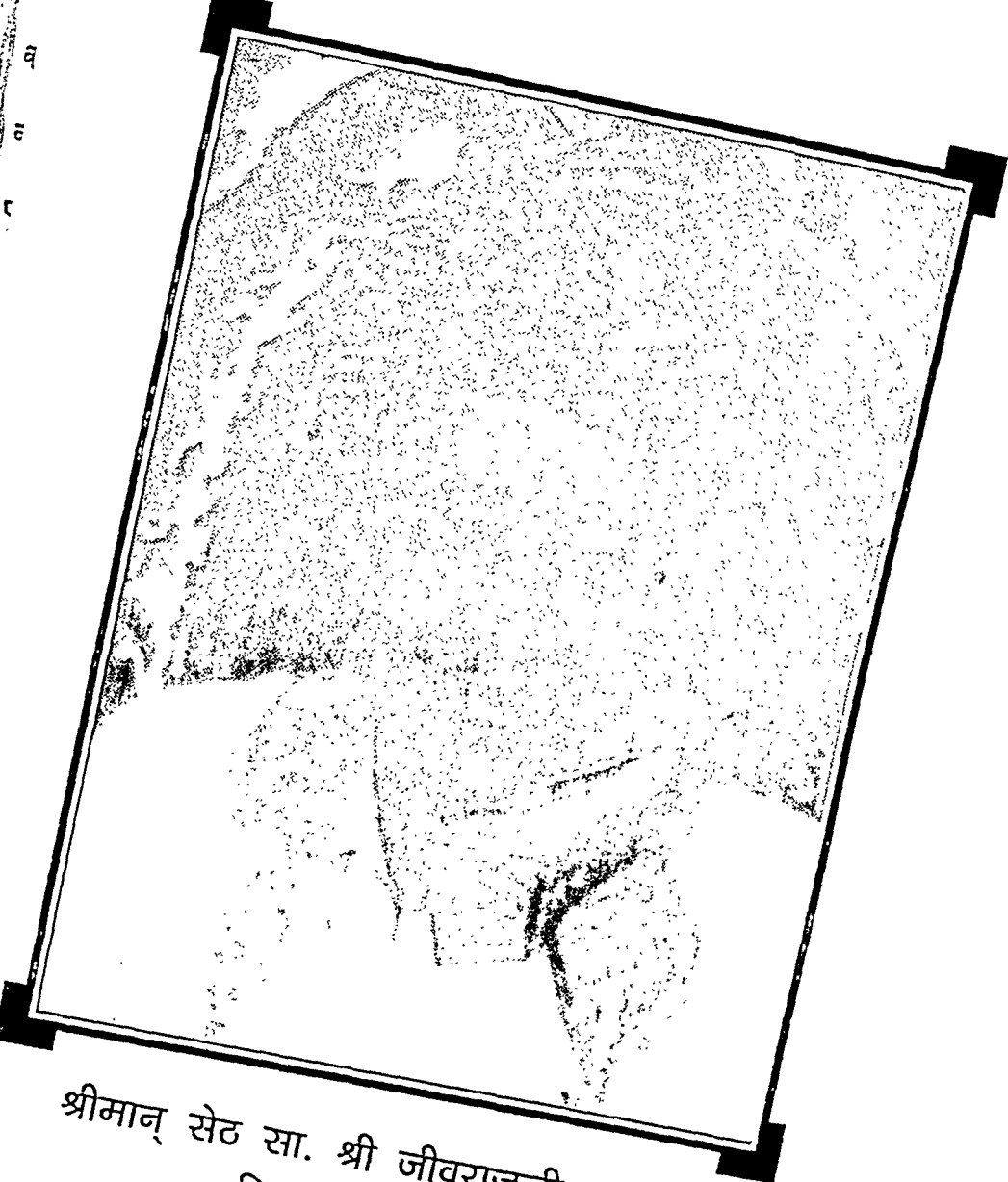
श्रीमान् सेठ सा. श्री जीवराजजी लुणावत
तिलौरा (अजमेर)

अनुक्रम

प्रथम सर्ग

मंगल प्रवेश

मंगलाचरण

हे दिव्य शक्ति ! हे दिव्य तेज ! आलोक आपका छाया है ।
दान-दया का हे दयानिधे, अवनि ने आपसे पाया है ॥

हम दया पात्र तुम दया पूर्ण,
सुध आप हमारी फिर ले लो ।
पृथ्वी पीड़ित है दया बिना,
अब हमें अंक में तुम भर लो ॥

हर ओर दशानन फैले हैं, क्यों जग तुमनें बिसराया है ।
हे दिव्य शक्ति ! हे दिव्य तेज ! आलोक आपका छाया है ॥

दायित्व सभी भूले अपना,
दारिद्र्य सभी दिखलाते हैं ।
सागर भी पोखर के आगे,
आकर कर फैलाते हैं ॥

दीप्ति आपकी तृप्ति प्रदायक, नवज्योति रूप चमकाया है ।
हे दिव्य शक्ति ! हे दिव्य तेज ! आलोक आपका छाया है ॥

दारुण दुःख फैला चहुँ ओर,
अशान्ति ज़गत को खाती यहाँ ।
आर्तनाद से हमने स्वामी,
नित तुम्हें पुकारा कहाँ कहाँ ॥

हे वीतराग जिन देव प्रभो, गुण गान आपका गाया है ।
हे दिव्य शक्ति ! हे दिव्य तेज ! आलोक आपका छाया है ॥

अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य देव,
जो धरती की पीड़ा हरते ।
जिनवाणी की गंगा लाते,
हम नमन उन्हें निशदिन करते ॥
तमस हटा पाया है वो ही, जिसने भी दीप जलाया है ।
हे दिव्य शक्ति ! हे दिव्य तेज ! आलोक आपका छाया है ॥

ओज भरी वाणी प्रकटा कर,
जीवन को जिनने धन्य किया ।
मानव को मानवता सिखला,
जिनने संचय था पुण्य किया ॥
गुरुदेव बने पन्ना जग में, जग ने नित शीश झुकाया है ।
हे दिव्य शक्ति ! हे दिव्य तेज ! आलोक आपका छाया है ॥

सर्व प्रथम जिन ने जाना है मानवता का क्रन्दन, ।
आदीश्वर के चरण कमल में मेरा शत शत वन्दन ॥

हे आदीश्वर तुमने जग को,
नूतन पाठ पढ़ाया था ।
जीवन को कैसे जीना है ?
तुमने ही बतलाया था ॥
मुक्ति के हेतु प्रभो आपने काटे जग के बन्धन ।
आदीश्वर के चरण कमल में मेरा शत शत वन्दन ॥

संग असि मसि के कृषि कर्म की,
जग को राह सुझाई थी ।
मुक्ति ही जीव का चरम लक्ष्य,
तप की ज्योति जलाई थी ॥
नित मन मरुदेवी नाभिराय के सुत का करे नमन ।
आदीश्वर के चरण कमल में मेरा शत शत वन्दन ॥

हे ऋषभ देव इस भारत की,
लेने को फिर सुध आओ ।

या फिर कोई दिव्य शक्ति को,
इस धरती पर भिजवाओ ॥

प्रभो आपके कारण भारत की मिट्टी है चन्दन ।
आदीश्वर के चरण कमल में मेरा शत शत वन्दन ॥

यह महावीर का शासन तो,
सचमुच में वैभव शाली है ।
मावस की काली रातें भी,
इसके कारण उजियाली है ॥

दिव्य लोक का दिव्य तेज, जब
इस धरती पर आया था ।
अपना नव आलोक व्योम से,
वसुधा पर बिखराया था ॥

समवशरण करके देवों ने;
सबसे पहले जिनको पूजा ।
उन महावीर के सिवा नयन
में, चित्र बनेगा क्यों दूजा ॥

अन्तर में जिनकी मूरत है,
सूरत है जिनकी आँखों में ।
नित लगे समाहित शक्ति रूप,
वे मुझे विहग की पाँखों में ॥

वो ही जल में वो ही थल में,
वो ही तो रूप हवा में है ॥
अग्नि में है अंबर में है,
वो ही तो रूप दवा में है ॥

जड़ के संग चेतन में भी,
नित मैंने उनको पाया है ।
इसीलिए तो शब्द-शब्द में,
गीत उन्हीं का गाया है ॥

तेबीस और तीर्थंकर सम,
जो शक्ति लेकर आये थे ।
ठूंठ बने वृक्षों ने भी निज,
डाली पर सुमन खिलाये थे ॥

सजल हुई सूखी सरिता, जो
सोये थे सभी सचेत हुए ।
कुछ लगे चेतने चेत देख,
कुछ कुछ तो यहाँ अचेत हुए ॥

मेरी कविता का वर्ण-वर्ण,
जिनके रस में है पगा हुआ ।
आठों याम मेरा मन रहता,
जिनके चरणों में लगा हुआ ॥

उनकी गुण गाथा गा गाकर,
मैं मोद सदा ही पाता हूँ ।
फिर नये रूप से, मैं भावों
की, गागर को छलकाता हूँ ॥

जय महावीर ! जय परम वीर !
जय महाधीर ! गुण के सागर !
यह धरती तुम्हें बुलाती है,
अब आओ आओ गुण आगर ॥

हे वीणा वादिनी हंस वाहिनी तुमको निशदिन नमन मेरा ।
यहाँ अपना आशीर्वाद लुटाकर करदो सुरभित चमन मेरा ॥
है जिन पर आशीर्वाद तुम्हारा, वे हो जायें जग में ज्ञानी ।
हे मात शारदे ! इसीलिए, तो तेरी शक्ति सबने जानी ॥

हे माँ ! गिरा नित्य कवियों की तेरे हर पल गीत सुनाती है ।
गिरा वही फिर उठ ना पाया माता तू ना जिसे उठाती है ॥
तुलसी, सूर, कबीरा, केशव, भूषण ने तुम्हें प्रणाम किया है ।
देव, बिहारी, पद्माकर ने नित उठकर तेरा नाम लिया है ।

वाल्मीकि और कालीदास के अन्तर में आप समाई थी ।
कलम व्यास ने सर्वप्रथम जग में माँ तुमको यहाँ झुकाई थी ॥
जय शंकर प्रसाद, निराला निशदिन महादेवी संग पंत ने ।
माँ तेरा गौरव गान सुनाया सदा सरस काव्य के ग्रन्थ ने ॥

हे वीणा पाणि ! प्रगतिवाद भी भूल नहीं तुमको पाया था ।
प्रयोग हुए कविता में लेकिन सिर सबने तुम्हें झुकाया था ॥
रस बदला नित्य भाषा बदली छन्दों ने नव रूप संयोया ।
लिया कवियों ने नाम तेरा ही फिर स्याही में कलम डुबोया ॥

आंगन यही हिमालय का है,
बहे गंग की धारा ।
नित खेत सदा सोना उगले,
ग्राम - नगर है प्यारा ॥

गंगा, यमुना, राबी झेलम,
कृष्णा अरु कावेरी ।
प्यास बुझाती इस धरती की,
बन सरिताएँ चेरी ॥

ब्रह्मपुत्र के संग नर्मदा,
कल कल कल कल बहती ।
जो इतिहास रचा कूलों पर,
उनको हर पल कहती ॥

सतपुड़ा, विन्ध्याचल हरपल,
गगन चूमते रहते ।
व्यथा कथा मरुधर की जग को,
आडावल है कहते ।

चरण पखारे जिसके सागर,
नीरद आंचल धोये ।
उजड़ न जाये जंगल जिससे,
पवन बीज को बोये ॥

सदा असि, मसि व कृषि के कारण,
उन्नत जो धरती है ।
जल, पवन और अग्नि जिसकी,
पीड़ा को हरती है ॥

देवों को भी इस धरती से,
निशदिन प्यार रहा है ।
प्रेम-भाव का सबने इसको,
नित आगार कहा है ॥

ऋषभदेव से महावीर तक,
सब तीर्थंकर पाये ।
ऐसी पावन मिट्टी का हम
क्यों ना तिलक लगायें ॥

आर्य भूमि हे भारत माता !
मम वाणी सुन लेना ।
पुनर्जन्म यदि पाऊँ तो मैं,
गोद आपकी देना ॥

दुनियाँ के देशों में महान है हमारा देश,
देवता भी इसकी तो महिमा वखानते ।
वो अर्क जहाँ सभ्यता का प्रथम उद्योत हुआ,
ज्ञान गुण जिसके तो हर कोई जानते ॥

पश्चिम में फैला हुआ प्रान्त एक मनोहारी,
इस राजस्थान को सब ही पहचानते ।
जो भक्ति और शक्ति के सागर में डूबा हुआ,
वड़े वड़े वीर भी लोहा नित मानते ॥

जो एक आँख, एक हाथ, एक पांव भेंट कर,
अरियों के वीच अस्सी घाव लिए चलते थे ।
यहाँ शेर सी दहाड़ जब करता वह वीर तो,
वादशाह वेगमों के गर्भ जहाँ गलते थे ॥

नित्य मात करे वैभव विराट इन्द्र लोक को,
बस सुन सुन अरियों के सीने यहाँ जलते थे ।
रजपूती वैभव के संग देख वीरता को,
सीमाओं पर खड़े खड़े म्लेच्छ कर मलते थे ॥

यहाँ कौन करे होड़ उस शूरमा प्रताप की,
जान से भी जिसे ज्यादा जानवर प्यारा था ।
प्राण को बचाने हेतु प्राण दिये चेतक ने,
पूत की तरह ही जिसे नित्य पुचकारा था ॥

जय कह भवानी की उठाता भाला युद्ध में,
नाहीं सपनों में जिसको झुकना गवारा था ।
नाम से ही अकबर डरता था हमेश जिससे,
कहे राजस्थान तो प्रताप वह हमारा था ॥

नारियों की महिमा का जहाँ कोई पार नहीं,
युद्ध में विहंस कर प्रिय को पठाती थीं ।
कोई प्रिय मांगे प्यार में प्रतीक यदि प्रिया से,
सेवक के हाथ सिर काट भिजवाती थीं ॥

स्वामी को बचाने हेतु कलेजा पत्थर बना,
मौत की गोदी में माँ सुत को सुलाती थी ।
वहाँ काम आया राष्ट्रहित शौहर को जानकर,
वीर क्षत्राणियाँ कर जौहर दिखाती थीं ॥

वीर दुर्गादास ने दिखाया तेज तेग का,
शरम से लाल किला हुआ तब नीचा था ।
अरियों के शोण की धारा बही धोरों में तो,
सिर मारवाड़ का हुआ और ऊँचा था ॥

बाबा रामदेव की तो महिमा बखाने विश्व,
देवी करमा का खिचड़ा तो कृष्ण को रुचा था ।
भक्तिमती मीरां को जब विष का कटोरा भेजा,
समझ पीयूष पीया उसने समूचा था ॥

धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ।
कलुष भाव को जला देती है जिस भूमि की सदा तपन ॥
दूर-दूर तक जिसके ऊपर रेत का सागर फैला है ।
आये वर्ष काल को जिसने अपने ऊपर झेला है ॥
बरस के पानी बन जाता है यहाँ जिसके लिए सपन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ॥

जहाँ रेत पर खड़े खेजड़े ताके नित्य आकाश को ।
सूखा सावन डिगा न पाता जिनके निज विश्वास को ॥
भूखे प्यासे उष्ट्र जहाँ पर करते रहते नित्य गमन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत-शत बार नमन ॥

पानी जैसे ही गहरे हैं लोग वहाँ पर रहने वाले ।
सूखी सूखी सरिताएँ हैं भूखे हैं भू के नाले ॥
जहाँ प्राण भले ही चले जायें पर जाने देते नहीं वचन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत-शत बार नमन ॥

वर्षा की ऋतु मारवाड़ को मोहक बहुत बनाती है ।
मखमल जैसी हरी दूब की चादर वहाँ बिछाती है ॥
नित बंसी की टेर सुनाये लम्बी ग्वाला बना मगन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ॥

मोठ बाजरी खड़ी खड़ी जब खेतों में लहराती हैं ।
साथ बनाकर कामनियाँ जीवन का राग सुनाती हैं ॥
फिर उठी कलायण अंबर में अब घर आओ लौट सजन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ॥

आंजलिया नयनों में काजल चूनरियाँ फिर लहराई ।
देखी मेंहदी हाथ की गोरी खुद से खुद ही शरमाई ॥
हर पल नथनी होठों पर आ झूले मन में लिए लगन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ॥

हाथों में हथफूल झूलते नित बजे पांव में पेंजनिया ।
हंसली पहन गले के ऊपर खेत को जाये साजनिया ।।
प्रियतम के पांवों को जाने वह तो अन्तर खिले सुमन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ।।

सिर पर धरी दही की मटकी रोटी उसके ऊपर है ।
ठुमक ठुमक कर चले उर्वसी जैसे कोई भू पर है ।।
अब भूखे पेट में चूहे कूदे यह कैसी है उदर अगन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ।।

कहीं भेड़ के एवड़ चरते तो कहीं गाय के टोले ।
अलगोछे पर गीत प्रीत के कोई जंगल में बोले ।।
गागर पर गागर धर चलती रुनक झुनक पनिहारिन ।
धोरों की पावन धरती को मेरा शत शत बार नमन ।।

केर सांगरी खेजड़े फैले हैं चहुं ओर ।
मारवाड़ में इक जिला, कहलाता नागौर ।।
कई बड़े कस्बे बसे, छोटे सुन्दर गांव ।
स्पर्श हेतु तरसे सदा, सुर, नर, मुनि के पांव ।।

कई धर्म अरु जाति के, रहते जिसमें लोग ।
एक दूसरे का सदा, करते हैं सहयोग ।।
स्नेह युक्त व्यवहार से, रहता मन में मोद ।
मन-मयूर नाचे सदा, नभ में देख पयोद ।।

मंदिर में घड़ियाल नित, मस्जिद होय अजान ।
स्थानक में साधु रमे, करे प्रभु गुण गान ।।
आते जाते साधु जन, करते धर्म प्रचार ।
अपने अपने धर्म के, कहते सभी विचार ।।

बसा प्रकृति गोदी में, कीतलसर इक ग्राम ।
पुण्य उदय उसके हुए, फैला घर घर नाम ।।

नयन जहां तक दौड़ लगाते, देता यही दिखाई है।
कुदरत ने अपने हाथों से, भू पर रेत बिछाई है।।
सूरज अंगारे बरसाये, दिन भर चमक चमक करके।
उनको शीतल कर देते हैं, तारे दमक दमक करके।।

सर में शीतल जल की लहरें, टकराती हैं कूलों से।
कब तक मरुथल यहां तपेगा, पूछे पथिक बबूलों से।।
शीतल जल से भरे सरोवर, शनैः शनैः होते खाली।
वृक्ष ठूंठ बन खड़े हो रहे, पत्र हीन है हर डाली।।

सावन आया भादव आया, आकर सूखा चला गया।
पनघट भी प्यासा है अबके, मौसम सबको जला गया।।
कूप ओर बावड़ियों का तल, लगता सूखा सूखा है।
बिन पानी के धरती प्यासी, मरुधर भूखा भूखा है।।

जिसकें पास बैठकर के मन, शीतल भाव जगाता था।
शीतल निर्मल जल पीने को, सबका मन ललचाता था।।
मौसम का चक्का बदल गया, मरुधर प्यासा का प्यासा।
वर्षा का मौसम आकर के, दे जाता था बस झांसा।।

शनैः शनै. शीतल सर लगता, कीतलसर में बदल गया।
देख काल और महामारी को, मन देवों का पिघल गया।।
फिर से झड़ी लगी सावन की, तालों में आया पानी।
कीतलसर के खेतों में फिर, लहराई चूनर धानी।।

कीतलसर की धरा उर्वरा, खेतों में उपजाती सोना।
मोठ, बाजरी पाकर के बस, भर जाता हर घर का कोना।।
सावन-भादव खूब बरसते, धोरों की धरती सरसाती।
वर्षा की बूंदें अंबर से, मानो मोती बरसाती।।

नये धान्य से कीतलसर का, महके अब कोना कोना।
सोना निपजा है खेतों में, साथी मेरे अब सो ना।।
प्रफुल्लित हैं सबके चेहरे, खुशियां बरसी अब घन से।
नाच रहे सब ता ता थैया, सभी सुखी अपने मन से।।

वातावरण ग्राम का सुन्दर, हैं सब सुख दुःख के साथी ।
ऐसे रहते हिल मिल सारे, जैसे दीपक अरु बाती ।।
उदधि के संग नौका रहती, लोग सभी ऐसे रहते ।
कोई भी पीड़ा होती तो, आपस में उसको कहते ।।

गोधन भरा सभी के घर में, गायें नित रंभाती थीं ।
सांझ पड़े सब दौड़ी दौड़ी, अपने घर को आती थीं ।।
चाट चाट अपने बछड़ों को, मां का प्यार लुटाती थीं ।
ओट किये घूंघट की वधुएँ, घर को पांव बढ़ाती थीं ।।

घर घर होती मात यशोदा, हर घर होता था कान्हा ।
हर घर दूध दही की मटकी, कैसा वह अहा जमाना ?
हर घर से नित उठकर कान्हा, गाय चराने जाता था ।
हर घर से बलराम कृष्ण हित, भोजन लेकर आता था।।

ताल किनारे बैठी गैया, हरी घास को चरती थी ।
पीकर वहां ताल का पानी, बड़े मजे से फिरती थी ।।
वातावरण बड़ा ही सुन्दर, थी बच्चों की किलकारी ।
प्रेम भाव से रहते सारे, नहीं वहां मारा मारी ।।

प्रदूषण ना किसी बात का, उसके बाहर जंगल था ।
जो चाहे जंगल दे देता, सभी बात का मंगल था ।।
चीते, मृग, भालू अरु बन्दर, शशक उसी में रहते थे ।
रंग बिरंगे अहि शावक भी, निर्भय बने विचरते थे ।।

ना तो वे मानव से डरते, ना ही मानव डरता था ।
नित अपनी सभी जरूरत पूरी, मानव वन से करता था ।।
खेत नहीं जो चीजें देते, वे जंगल से आती थीं ।
कई जातियां जंगल में रह, अपना समय बिताती थीं ।।

जंगल और ग्राम के अन्दर, सदा समन्वय रहता था ।
पर्यावरण सन्तुलन सचमुच, पवन प्राण बन बहता था ।।
सर के सहित वापिकाओं में, रहता था निर्मल पानी ।
पानी को दूषित करने की, करे न कोई मनमानी ।।

जल को कहा गया है जीवन, इसे न दूषित होने दो।
जो जल पीने का होता है, वस्त्र न उसमें धोने दो॥
धुवां हवा को दूषित करता, इसे नहीं तुम फैलाओ।
जीना चाहो बहुत वर्ष तक, दूर धुएं से हट जाओ॥

फैला आज प्रदूषण इतना, देख देख डर लगता है।
धूल धुएं के अन्दर मानव, कब सोता है, जगता है॥
पहले ऐसी नादानी तो, मानव कभी नहीं करते।
जीते लम्बी उम्र सभी थे, समय पूर्व वे ना मरते॥

कीतलसर में शुद्ध हवा थी, शुद्ध भरा उसमें पानी।
लाना दिव्य पुंज धरती पर, देवों ने मन में ठानी॥
कीतलसर सी पुण्य धरा हम, और कहाँ पर पायेंगे।
प्रज्ञा पुरुष को अवनी ऊपर, यहीं कहीं प्रकटायेंगे॥

हिन्दू मुस्लिम सभी धर्म के, लोग यहाँ पर हैं प्यारे।
स्नेह ज्योति अंतर में जलती, नहीं बरसते अंगारे॥
सदाचार सबके ही अन्दर, दुराचार का नाम नहीं।
वैर भाव जिस कारण बढ़ते, वैसे करते काम नहीं॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब, रहते प्रेम से गांव में।
पीड़ित होते अगर चुभे जब, कंटक किसी भी पांव में॥
आकर के कभी वैष्णव साधु, मानस की कथा सुनाते थे।
आते जाते जैन सन्त भी, करुण भाव प्रकटाते थे॥

सन्तों की वाणी सुनने को, आतुर रहते नर नारी।
बच्चे जय जय कार लगाकर, करते रहते किलकारी॥
धर्म ध्यान के कारण धरती, नित्य उगलती थी सोना।
सुमनों से सुरभित था कण-कण, रत्न उगलता हर कोना॥

चातक, कीर, पपीहा प्रतिपल, गीत सुनाते बागों में।
जल खग, सर में सदा तैरते, बोलें मीठी रागों में॥
मन में राग नहीं वे पालें, राग पालते कंठों में।
रस की धारा सब में ही थी, न थी ईख के गंठों में॥

उस कीतलसर ग्राम में, रहते बालूराम।
पत्नी तुलसां संग में, करते कृषि का काम ।।
जाति मालाकार यहां, पैदा करे प्रसून।
घर की बगिया बिन शिशु, उनको लगती सून ।।

पैदा करके सब्जियां, पालें निज परिवार।
कृषि कर्म उनका रहा, युग युग से आधार ।।
गाजर, मूली, मोगरी, पालक, शक्करकन्द।
शलजम, लोकी, मिर्च को, सब जन करें पसन्द ।।

बेंगन, बथुआ, टीनसी, बोते गोभी, प्याज।
मैथी, ककड़ी, आल के, चाहक सभी समाज ।।
चवला, टमाटर, तुरही, भींडी की भरमार।
हर्षित मन उनका रहे, लख कर फली गवार ।।

सत् संगति निश दिन करें, जपते प्रभु का नाम।
जीवन यापन हित करें, धर्म युक्त हर काम ।।
समय निकलता जा रहा, तुलसां थी बेचैन।
सूनी आंगन देखकर, भर लेती निज नेन ।।

संत सती को भाव से, दोनों करें प्रणाम।
दर्शन कर कहते सदा, आओ स्वामी ग्राम ।।
समय पूर्व मिलता नहीं, सब कर्मों का खेल।
जीव मुक्त होता नहीं, जब तक कर्म नकेल ।।

कर्म कटे मुक्ति मिले, मानव करो प्रयास।
इच्छा पूरण हो सभी, प्रभु का हो विश्वास ।।
तुलसी का बिरवा लगा, तुलसां पूजे नित्य।
नमस्कार कर सूर्य को, कहे सुनो आदित्य ।।

प्रथम पुत्र मेरे हुआ, रहे वह ननिहाल।
चाह यही घर में वजे, फिर कांसी का थाल ।।
एक आंख क्या आँख है, एक हाथ क्या हाथ।
फिर मेरी झोली भरो, विनती तुमसे

जाकर के हरदेव तो, वैठ गया ननिहाल।
महाप्रभु सुनिये मेरी, ममता है वेहाल ।।
आर्तभाव से आरती, तुलसां करती नित्य।
प्रभो कृपा से फिर उगा, उस घर में आदित्य ।।

वही ग्रन्थ नायक वने, पाया पन्ना नाम।
मरकत वन चमके सदा, चमके उनके काम ।।
हुए पुत्र दो और भी, तिलोक-तेजा राम।
तापस हुए तिलोक तो, तजा लोक आराम ।।

अल्पायु में तेजा ने, तजदी अपनी देह।
तीन रत्न को दे सकी, तुलसां अपना नेह ।।
श्रीमान हरदेव जी, वनकर रहे गृहस्थ।
एक पुत्र दो पुत्रियां, पाई उनने स्वस्थ ।।

प्रभुलाल के संग यहां, धापू, वगता नाम।
देख पोते व पोतियां, हर्षित वालू राम ।।
भाग्यवान प्रभुलाल जी, हुई पांच संतान।
तीन पुत्र दो पुत्रियां, किया वंश उत्थान ।।

केला, छोटी संग में, पाया था प्रह्लाद।
मोहन तुलसाराम को, देख मिला आल्हाद ।।
पहले सुत के वाद में, भरी नहीं जव कोख।
तुलसां करती अर्चना, अपने आंसू रोक ।।

मेरा मन रहे नित्य वेचैन।
टपकते रह रह दोनों नैन ।।

तुलसां तो इक दिन यह वोली।
प्रभु मेरी भर दो झोली ।।

देखूं किसी गोदी में वाल।
हृदय मेरा होता वेहाल ।।

तड़फता मन मेरा तत्काल।
कोख में कव आयेगा लाल ।।

पय से कब भीगेगी चोली।
प्रभु मेरी भर दो झोली।।

तुमने मेरी नहीं सुनी तो।
मैं फिर से, मां नहीं बनी तो।
लोग करेंगे कैसी बातें।
कटना मुश्किल होंगी रातें।
और करो ना आप ठिठोली।
प्रभु मेरी भर दो झोली।।

दीनबन्धु तुम कहलाते हो।
घाव दीन के सहलाते हो।
फिर क्यों मुझको घाव दिया है।
ऐसा क्यों बर्ताव किया है।
मैं करूं अर्चना नित भोली।
प्रभु मेरी भर दो झोली।।

मेरे घर क्यों यह अंधेरा?
स्वामी कर दो पुनः सवेरा।
तुम मेरे घर आओ स्वामी।
अब तो सुन लो अन्तर्यामी।
इक सूरत मन में संजोली।
प्रभु मेरी भर दो झोली।।

तुलसां मेरी बात सुन कहता तुझको आज मैं।
देर पर अंधेर है नहीं उस विभु के राज में।।
पुण्य जिस दिन प्रकट होंगे गोद फिर भर जायेगी।
शुभ घड़ी जब आयेगी नाम तू कर जायेगी।।

एक पंडित ने कहा कि सुत अनोखा पायेगा।
तेरा सुत ही वंश के नाम को दीपायेगा।।
धर्म में रख आस्था विश्वास यहां खोना नहीं।
समय पर मिलता सभी कुछ व्यर्थ में रोना नहीं

यदि किये शुभ कर्म तो दीप को जलना पड़ेगा।
दूर होगा तमस अब रात को ढलना पड़ेगा॥
संत सेवा हृदय से मैं नित्य ही करता रहा।
पाप की मैं छांव से ही सर्वदा डरता रहा॥

फिर प्रभु रूठे हुए क्यों यह जान मैं पाया नहीं।
बदले धूप के हम पर, आती क्यों छाया नहीं?
आज नहीं कल देखना भावना अपनी फलेगी।
आयेगा वह सूर्य कि रोशनी सबको मिलेगी॥

ग्रीष्म भी आता समय पर,
समय पर ही शीत आता।
भाग्य में जो कुछ लिखा है,
समय पर हर मनुज पाता॥

खाद पानी पादपों में,
कितना ही दे जायेगा।
फल समय से पूर्व मानव,
तनिक भी ना पायेगा॥

चक्र की भांति समय तो,
सतत चलता ही रहा है।
सूर्य इसका साक्षी यहां,
जो उगा ढलता रहा है॥

सर्दियों की इक सुबह थी,
कुछ तप रहे थे आग को।
शीत के खाता थपेड़े,
वह जा रहा था बाग को॥

कंपा दे जो हड्डियों को,
अब आज ऐसी ठण्ड है।
आ गई छू के हिमालय,
यह पवन भी वरबंड है॥

पक्षियों ने घोंसले भी,
आज तो छोड़े नहीं हैं।
हाथ हमने सूर्य को भी,
ठण्ड से जोड़े नहीं हैं।।

कर रहे किसके लिए तुम,
कौन तुम्हारा खायेगा।
यह रात दिन का श्रम सभी;
यहाँ निरर्थक जायेगा।।

कह रहे हो आप लेकिन,
यही श्रम मेरा धर्म है।
परिश्रम कर पेट भरना,
बस यही मानव कर्म है।।

सांस जब तक कर्म में रत,
नित हमें रहना चाहिए।
सतत शीत को व ताप को,
बन भूमि सहना चाहिए।।

समय का ना ज्ञान जिसको,
वही सदा पछताता है।
समय ही संसार में तो,
लौट कर नहीं आता है।।

भावनाएं आपकी सब,
अच्छी तरह मैं जानता।
क्या है मन में आपके,
उसको सदा पहचानता।।

एक बाला आ के बोली उसके कर को थाम कर।
काका अपने घर चलो तुम आती हूँ मैं काम कर।।
सुन के बालूराम का मन भय से कम्पित हो गया।
बस उल्टे पावों से वह फिर लौट कर घर को गया।।

जोर से उल्टी हुई थी जीव भी मिचला रहा था ।
आंख में आंसू भरे थे समझ कुछ ना आ रहा था ।।
एक वृद्धा देख तुलसां तनिक मुड़ कर मुसकराई ।
अनुज मेरे लड्डू बाँटो दे दो घर घर में बधाई ।।

लगा बालूराम को तो हवा जैसे थम गई है ।
पोष की शीतल सुबह में बूंद जल की जम गई है ।।
सूर्य भी था आज शीतल अंश उसका खो गया हो ।
बिखरे मोती स्नप्नों के नव सवेरा हो गया हो ।।

हरी तुलसां हो गई पर अब शर्म से वह लाल थी ।
पोष ने भर कोष डाला अब मोहनी वह चाल थी ।।
जीव तुलसां कुक्षी में तो पुण्य शाली आया है ।
अन्य वर्षों से अधिक ही खेतों ने उपजाया है ।।

मधु ऋतु से पहले ही अब,
बगिया में बहार आई ।
बैठ कोकिल आम्र ऊपर,
राग मधुरिम गुनगुनाई ।।

होड़ कलियों में लगी है,
हम सुमन सब जल्दी बनें ।
जनक उस शुभ जीव के फिर,
आ के हमें जल्दी चुनें ।।

सब्जियों के पौध बढ़ते,
बेल पल पल बढ़ रही थी ।
गले मिल कर वृक्ष के वे,
आज ऊपर चढ़ रही थी ।।

साग इतनी कहाँ बेचूं,
जो चाह थी वह पा लिया ।
कमाना इस वर्ष जितना,
वह मैंने तो कमा लिया ।।

कह दिया उसने सभी को,
सब्जियाँ जो भी चाहिए।
बिना पैसे तोड़कर के,
घर प्रेम से ले जाइये।।

ग्राम वासी सब खुशी से,
अब सब्जियां लेने लगे।
बालू भैया जीओ तुम,
आशिष वहां देने लगे।।

स्वप्न तुलसा देखती थी,
वह पूरा होने वाला है।
प्रतीक्षा जिसकी सभी को,
अब वह आने वाला है।।

जिस पल पति को वह देखे,
शर्म से मुख लाल होता।
पुत्र होगा या कि पुत्री,
दोनों में सवाल होता।।

स्वप्न तुझको कैसे आये क्या वे मुझे बतलायेगी।
स्वप्न तुझको जैसे आये सन्तान वैसी पायेगी।।
निज नयन करके बंद तुलसां अब स्वप्न में ही खो गई।
स्वप्न जो देखे थे उसने तैयार कहने को हो गई।।

स्वप्न में वह वीर देखा चेहरा जिसका शान्त था।
देखकर औरों की पीड़ा मन ही मन में क्लान्त था।।
शस्त्र सारे त्याग करके शास्त्र लेकर चल रहा था।
देखकर के भीड़ को उसका मुखाम्बुज खिल रहा था।।

पदारविन्द स्पर्श कर जय कार जग करने लगा।
धरती के दु:ख क्लेश सारे वह देव वन हरने लगा।।
जयकार होते देखकर जय नाद करने लग गई।
बस उसी पल ही नींद टूटी नाथ मैं भी जग गई।।

यहां धीर की व वीर की सत्य तुम माता बनोगी।
जगत में जयकार होगी तुम नई गाथा बनोगी।।
सुमन सुरभि युक्त होगा माली सब कुछ जानता है।
देख कर के बीज को वह वृक्ष को पहचानता है।।

खाने पीने में कमी स्वयं हित होने ना देना।
नाम लेना नित प्रभु का दिवस में सोने न देना।।
शक्ति से ज्यादा किया श्रम तो तुम्हें रोना पड़ेगा।
निज गर्भ के शिशु रत्न से हाथ को धोना पड़ेगा।।

नाथ मेरी भावना है,
मैं सदा इत उत फिरूं।
संत-मुनि, ऋषि राज के,
जा कहीं दर्शन करूं।।

यहाँ मन लगता नहीं,
पांव बाहर पड़ रहे।
साधकों के वचन सुनने,
कर्ण पल पल उड़ रहे।।

हो कथा प्रभु राम की नित,
ले चलो उस ठोर पर।
दर्शन श्रवण करके त्वरित,
चैन लूं कर जोड़ कर।।

पास डेगाना नगर में,
देखे वहां महन्त हैं।
उपाश्रय में नजर आये,
साधना रत सन्त हैं।।

लेने सौदा गृहस्थ का,
कल सवेरे जा रहा।
सौभाग्य दर्शन का यहां,
पुण्य मौका आ रहा।।

चलो मेरे साथ तुम भी,
पथ वह कट जायेगा।
धर्म की वाणी सुनेंगे,
जागृति मन पायेगा।।

स्वामी की. वाणी सुनी, हर्षित हुई अपार।
धन्य धन्य कहने लगी, प्रभु को बारम्बार।।

दम्पति डेगाना गये, लेकर मन में नेह।
बिना धर्म किस काम की, स्वामी मानव देह।।

डेगाना में पहुंचकर, किये जरूरी काम।
सन्तों की वाणी सुनी, लिया विभु का नाम।।

प्रभु के आशीर्वाद से, सब कुछ अपने पास।
जीवन में सुख आ रहा, मन में है विश्वास।।

स्वामी सन्तों ने कहा, भूल गये क्या बोल।
सुख-दुःख सारे कर्म के, जीवन है अनमोल।।

□□

द्वितीय सर्ग

मंजुल परिवेश

मंगलाचरण

जो चराचर में समाहित, नमन है उस शक्ति को।
चरणों में सब हैं समाहित भावना संग भक्ति को॥
कर्ण को नित नाम का हर वर्ण भाता ही रहा।
मन मेरा निश दिन प्रभु के गीत को गाता रहा॥
जल में, थल में, अग्नि में, आकाश में जो व्याप्त है।
जानलो बहते पवन में रूप जिसका प्राप्त है॥

वह जो चाहे तो हिमालय भी यहां हिल जाता है।
महर जिस पर हो प्रभु की वह उसे मिल जाता है॥
घोर कलियुग में न भूले उस प्रभु की वाणी को।
जाना ही निश्चित पड़ेगा संसार में हर प्राणी को॥

बन गुब्बारा तनिक सी फूंक से क्यों फूल जाऊं।
सर्व शक्ति युक्त वही मैं उसे क्यों भूल जाऊं॥
प्रभु कृपा से आतम का मैल सारा हट रहा है।
उदय होते पुण्य से पाप सारा कट रहा है॥

नाम मंगल काम मंगल वह मंगल कारी है।
शान्ति हो इस विश्व में सुखी नर और नारी है॥
भावना मंगल यहां आचरण मंगल है मेरा।
उऋण हो सकता नहीं प्रभु इतना ऋण है तेरा॥

प्रज्ञा है नादान मेरी आपका बस साथ है।
पूर्ण करना प्राज्ञ गाथा आपके ही हाथ है॥
आतम बल मेरा बढ़े बस यही है आराधना।
आपका साया रहे नित आप से ही प्रार्थना॥

चला आया कुक्षी में अब पुण्यशाली जीव था।
सुख को जीवन मिल गया दुःख हुआ निर्जीव था ।।
फूल को भी तोड़ना तो अब उसे भाता नहीं।
कहे मालाएं पिरोना अब मुझे आता नहीं ।।

तोड़ना हमको नहीं अब जोड़ना ही चाहिए।
पुण्य के सुपंथ पर मन मोड़ना यहां चाहिए ।।
सोचती हूं आज कोई दे रहा सन्देश है।
अब दे रही मुझको प्रकृति कुछ नया उपदेश है ।।

स्वयं तोड़े प्रकृति तो आज नहीं बाधक बनूंगी।
प्रकृति की साधना हित स्वामी मैं साधक बनूंगी ।।
बात तेरी प्रिय मुझे तो समझ में ना आ रही।
ज्ञान मुझ में है कहां जो तू मुझे समझा रही ।।

दोनों ही अनपढ़ मगर तू बात करती ज्ञान की।
छू नहीं पाई पवन तुझको कभी अभिमान की ।।
यह जगत सारा जानता कि तू प्रिया मैं कंत हूँ।
चर्चा ऐसी कर रहे कि तू सती मैं संत हूँ ।।

तुम नहीं यह जानती कि जैसा मन का भाव हो।
कुक्षी में पलते शिशु पर वैसा ही प्रभाव हो ।।
संत वाणी सुनी तो बस सोचने वह लग गई।
सत्य बोलो, भावना वैराग्य की क्या जग गई ।।

विचार स्वतः ही उठे वे कह दिये सब आपको।
पास में आने न देना प्रिय कभी तुम पाप को ।।
ज्यों हुआ कबीर में मुझ में ऐसा हो रहा है।
आत्मा परमात्मा का बोध कोई बो रहा है ।।

चौक में बैठे हुए वे बात करते जा रहे।
झोंके पवन के फागुनी वहां रह रह आ रहे ।।
चंग की आवाज अब कुछ दूर से आने लगी।
घुंघरू की रुनझुन के संग नारियां गाने लगी ।।

ग्राम के बाहर बने तालाब का जो कूल है।
होली का प्रतीक वहाँ रोपा गया बबूल है॥
पूर्णिमा की सांझ को होली जलाई जायेगी।
युवकों के संग युवतियां नृत्य करके गायेगी॥

फसलें अच्छी खेत में सो गांव में उमंग है।
नृत्य कर गाओ सभी मिल बोलती वह चंग है॥
नृत्य मैं ना कर सकूंगी विवशता को जानिए।
नाचें गायें आप पर सच मेरा भी मानिए॥

'इस बार होली चाह कर खेल मैं न पाऊंगी।
बैठ सखियां संग में रसिया ही बस गाऊंगी'॥
'चंग ने आवाज दे दी मैं वहीं पर जा रहा।
रखना तुम खाना बना त्वरित ही मैं आ रहा'॥

बाल मण्डली गा रही, मन में ले उल्लास।
चंग बजाना किस तरह, समझाते जा पास॥
लोक गीत व नृत्य सब, हैं संस्कृति के अंग।
हमें बजाना चाहिए, ढोलक, ताल, मृदंग॥

संस्कृति से ही राष्ट्र की, होती है पहचान।
'शशिकर' उन्नायक बने, इसको दे सम्मान॥
बालाएं भी आ गईं, कर सोलह श्रृंगार।
सबने मिलकर के किया, वहां उनका सत्कार॥

मिलकर सब गाने लगी, मधुर कंठ से गान।
'शशिकर' युवक नाचते, कुछ सुनते दे ध्यान॥

आगई आगई आगई होली,
आज हवाएं बोल रही।
अरे जंगल जंगल टेसू फूले,
रंग अनोखे घोल रही॥

शीतल मंद पवन के झोंके,
तन को छू छू जाते हैं।
नाच रहे कुछ मस्ती में तो,
कुछ उठ चंग बजाते हैं॥

आज सखी सहेली इक दूजी के,
अन्तर भाव टटोल रही।
आगई आगई आगई होली,
आज हवाएं बोल रही॥

आज खेत में फसल नाचती,
झूमे बालियां धान की।
शीतल जल मन शीतल करता,
यही है कुंजी ज्ञान की॥

अहा! नव वधुएं वातायन घर के,
रह रह कर के खोल रही।
आगई आगई आगई होली,
आज हवाएं बोल रही॥

ना ऊंचा ना कोई नीचा,
सारे प्रेम पुजारी हैं।
भर रंगों की मार रहे अब,
सारे ही पिचकारी हैं॥

अपने रंगों में सबको रंगने,
टोली घर घर डोल रही।
आगई आगई आगई होली,
आज हवाएं बोल रही॥

भेद भाव तजकर के सारे,
सब को रंग लगाना है।
जो कल हम से रूठ गये थे,
उनको आज मनाना है॥

अब देवर के संग भाभी आकर,
कैसी बातें बोल रही।
आगई आगई आगई होली,
आज हवाएं बोल रही।।

बच्चे बालूराम से, लगे बोलने बोल।
काका रसिया गाइये, मिश्री वाणी घोल।।

याद नहीं मुझको अभी, कल पर देओ छोड़।
मैं गाऊंगा देखना, मीठा रसिया जोड़।।

कल किसने देखा यहाँ, करो आज की बात।
शुरू करो तुम टेर बस, सारे देंगे साथ।।

जैसी इच्छा आपकी, हो जाओ तैयार।
चंग मुझे दो हाथ में, साथ तुम इस बार।।

बालक, वृद्ध, युवक सभी, बालाएं दो ध्यान।
नये रंग का सब सुनो, रसिया आज सुजान।।

लेके मन में उमंग सब गाओ रसिया।
आज स्नेह दीप मन में जलाओ रसिया।।

मन में उठती हर्ष हिलोरें,
मनवा गाये नाचे।
प्यार की मेंहदी गोरी के,
हाथ पांव में राचे।।

आजादी का गीत अब सुनाओ रसिया।
लेके मन में उमंग सब गाओ रसिया।।

जमींदार अरु गोरों ने मिल,
इस जनता को चूसा।
दाना दाना वे खा जाते,
हम पाते बस भूसा।।

तुम सोया देश मिलकर जगाओ रसिया।
लेके मन में उमंग सब गाओ रसिया।।

नहीं समझ में आता मुझको,
कैसे लोग अनाड़ी।
अपना खून पसीना ठाकुर,
भर ले जाये गाड़ी।।

भूखे मन को भजन ना कराओ रसिया।
लेके मन में उमंग सब गाओ रसिया।।

भूख गरीबी अपने तन को,
दीमक बन कर चाटे।
रोटी पैदा करने वाला,
भूखा रह दिन काटे।।

अब भेद इसका मुझको बताओ रसिया।
लेके मन में उमंग सब गाओ रसिया।।

बस बस भैया अब मत गाओ रखो अपना भी ध्यान।
तुमको मालुम कि होते हैं हर दीवारों के कान।।
जालिम ठाकुर जान गया तो खिंचवा लेगा खाल।
गाँव गाँव में बसे हुए हैं लुक छिप कई दलाल।।

होली पर तो छूट सभी को इसीलिए मैं बोला।
मन में जो गुब्बार भरा था आज नाच कर खोला।।
जूतों के बल खेल रहे हैं यहां शोषण का खेल।
समय आने पर निकलेगा ही इनका सारा तेल।।

सुबह सुबह मुझको आया था एक अनोखा सपना।
गाँव की धेनु चरा रहा था जमींदार वह अपना।।
उलटे लटक रहे चिमगादड़ गढ़ में उल्लू बोला।
जाने किसकी भीख मांगता ठाकुर लटका झोला।।

बालू भैया ऐसा सपना हमको नहीं सुनाओ।
बुला रही है भाभी तुमको जल्दी से घर जाओ ॥
ना सुन पाओगे इस कारण मैंने नहीं सुनाया।
दीवाली के रोज यह सपना उठते उठते आया ॥

अच्छा भाई घर पर जाओ रसिया खूब सुनाया।
जितनी दूर रहे अच्छी है उस ठाकुर की छाया ॥
नर पिशाच से पिंड हमारा जाने कब छूटेगा।
जब तक वह जीवित है हमको मार मार लूटेगा ॥

वह सदी थी उन्नीसवीं फिरंगी का जोर था।
जुल्म जमीदारों का इस देश में हर ओर था ॥
फिरंगी जो लूटते जाता इंगलिस्तान को।
चूहे कुतरते जा रहे नित्य हिन्दुस्तान को ॥

राजा-राणा देश के सब ऐश में डूबे हुए।
अखण्ड भारत राष्ट्र के खण्डित सभी सूबे हुए ॥
क्रान्ति के हर चिन्ह को यहां फिरंगी धो चुके थे।
दास खंजर बन गये गुलाम भाले हो चुके थे ॥

दो पाट में इस देश की जनता पिसती जा रही।
उनके शिकंजे में फंसी वह फंसती जा रही ॥
राजा सारे ही नशे में मस्त बन सोते रहे।
बच्चे, बूढ़े, भूख के अभ्यस्त बन रोते रहे ॥

वे आदमी बन आदमी का नित लहू पीते रहे।
गोदाम को जिसने भरा वे पेट से रीते रहे ॥
गाय को जो पालते थे वे दूध भी ना पी सके।
जो महल के बन कर रहे वे चैन से ना जी सके ॥

दर्द में डूबी हुई बस छप्परों की हर कथा है।
मसि से अधिक मिली तब मुझको यहां उनकी व्यथा है ॥
बैठा तमस के पीछे दिवस इसलिए जग मौन है।
रात यह ढल जायेगी फिर पूछता यहाँ कौन है ॥

बुद्धि और सम्पन्नता इनकी दासी क्रीत है।
बोलती कुछ भी नहीं वे वक़्त से भयभीत है॥
एक दिवस जुल्म की तलवार यह थक जायेगी।
जुल्म की यह दासता स्वयं ही रुक जायेगी॥

बोध जब यहाँ बुद्धि को सत्य का हो जायेगा।
मन दे ठोकर महल को सड़क पर सो जायेगा॥
यहाँ जगेगी चेतना, जागरण होगा अनोखा।
आदमी का देखना आचरण होगा अनोखा॥

देखना यह रात काली बहुत जल्दी जायेगी।
जब खुलेगी आँख तो सुबह सुहानी आयेगी॥
तोष था यहां आदमी को इसलिए सुख चैन था।
आंसू में डूबा हुआ मां भारती का नैन था॥

गधों को बतलाते घोड़े कवि चारण भाट थे।
गाते नहीं विरुदावली जीभ लेते काट थे॥
ठाकुरों के नित्य जूते चाटते वे धन्य थे।
काग अपने आपको तब समझते मूर्धन्य थे।

दादुरों के शोर में दब कोयलों के स्वर गये।
समय ने झटका दिया ना जाने सब किधर गये॥
चक्र सबका बदलता है अहम् कोई ना करे।
चाहिए इंसान को भगवान से हरपल डरे॥

सस्मित बने घर को चले, अब श्री बालू राम।
पहरा देना खेत का, करना है कुछ काम॥
तुलसां देहरी पर खड़ी, देख रही थी बाट।
पति को आया जानकर, तुरत बिछा दी खाट

रसिया गाया कौनसा, किसने नाचा नाच।
कौन कौन आये वहाँ, कहना मुझको सांच।।
तू चलती तो देखती, जमा खूब ही रंग।
गाकर रसिया आज तो, खूब बजाई चंग।।

मुझको तो तू जानती, कहता हूँ मैं स्पष्ट।
रसिया में मैंने कहा, ठाकुर पूरा भ्रष्ट।।

मुझको डर भगवान का, वे हैं पालनहार।
दुष्टों को मैं क्यों कहूं, हैं जीवन आधार।।
डर कर डाकू को कहूं, जीवन दाता आप।
झूठ बोलने से अधिक, नहीं जगत में पाप।।

स्वामी का चेहरा निरख,
तुलसां तनिक बोली नहीं।
भावना की गांठ बांधी,
उसने क्षणिक खोली नहीं।।

एक लम्बी सांस लेकर,
शून्य को बस ताकती थी।
घड़ियां गिन गिन कर वह वस,
जिन्दगी को आंकती थी।।

लोटा जल का पी के अब,
पति घर से जा रहा था।
मस्ती में डूबा वह बस,
गुनगुना मुसका रहा था।।

लौट आना नाथ जल्दी,
खीचड़ा बनवा रही हूँ।
पड़ौसी से छाछ लेने,
अभी उठके जा रही हूँ।।

सुनी को अनसुनी करके,
पति सदन से जा चुका था।
उतर सिर से सूर्य का रथ,
दिशा पश्चिम आ चुका था॥

पति का हित तुलसां मन में,
आज रह रह सोचती थी।
ध्यान बोली का नहीं वह,
केश अपने नोंचती थी॥

बात ठाकुर तक गई तो,
खत्म सारा खेल होगा।
होगा गुड़ गोबर हमारा,
फिर कभी ना मेल होगा॥

विनती तुमसे कर रही, सुन लेना हे राम।
कृपा आपकी ना रहे, जीवन होय हराम॥

जीवन होय हराम, चरण में मस्तक मेरा।
गाऊँ सुबह शाम, प्रभुजी मैं गुण तेरा॥
'शशिकर' करना क्षमा, भूल हो जाये हमसे।
शीश झुका कर आज, करती मैं विनती तुमसे॥

तुलसां की कुक्षी के अन्दर जीव हर पल बढ़ रहा था।
पत्नी के भावों को निशदिन पति पल पल पढ़ रहा था॥
उस चमन में मधुमास आया भ्रमर गुंजन कर रहे थे।
कलियां चटकती जा रही थीं सुमन झर झर झर रहे थे॥

आ के चल दिया पतझड़ वहां से ना किसी का ज्ञान था।
वो ठहरता कैसे वहां पर उसका नहीं सम्मान था॥
ऋतुराज का सन्देश देने दूत बन कर आया था।
पिक के संग अलिवृन्द को वहां साथ अपने लाया था॥

अब मंद शीतल पवन बहती कुंज की सौरभ लुटाकर।
वह हर दिशा में डालती थी सुमन के मधुकण उठाकर।।
आम्र की हर डाल पर अब प्रतिदिन फूटती थी मंजरी।
हरपल दिशाएं सौरभ लुटाती नित्य भर के अँजुरी।।

खेत की फसलें कटी फिर वे सब आ गई खलिहान में।
दाने निकल कर चल दिये थे वे जाने किस विहान में।।
वहां मनुज सारे मौन थे पर सतत तरणि जल रहा था।
क्रोध किरणों में लिए बस वह अहर्निश चल रहा था।।

अब चेत ने दी चेतना थी वृक्ष की हर शाख को।
बैठा मनुज लाचार बनकर देखकर बैशाख को।।
तृतीया अक्षय पवित्र है अबूझ मुहूर्त आ गया।
यह विवाह का मुहूर्त भला सभी को यहां भा गया।।

वीर परशुराम की यही जयन्ती सब जानते हैं।
यह दिन है आदिनाथ का जैन सारे मानते हैं।।
प्रथम तीर्थंकर ने अपना पारणा इस दिन किया था।
तप की शक्ति का उन्होंने विश्व को परिचय दिया था।।

सदियों से पवित्र दिवस इसको सब जन मानते हैं।
शुभ दिन यह विवाह का ग्रामीण इसको जानते हैं।।
दूध मुंहे बालकों के विवाह होते ही जा रहे।
वर-वधु बन नन्हे मुन्ने अब भी रोते जा रहे।।

सद्ज्ञान की ज्योति अभी भी दूर बैठी गांव से।
अरे वधु घुटरन चल रही पर वर न चलता पाँव से।।
उस कड़ाके की ठंड में कृषक ने जो कुछ कमाया।
बालकों की शादी कर पानी में सारा बहाया।।

आकाश में फिर जेठ का सूरज पुनः तपने लगा।
पानी बनकर वहाँ पसीना रेत में रिसने लगा।।
वह कर्ज पहले का न उतरा चढ़ गया फिर ब्याज था।
होता इसलिए तो कृषक से राम भी नाराज था।।

जला वह सूरज के संग चर्म भी अपनी जलाई।
आषाढ आधा आ गया बादली तब दी दिखाई।।
बूंद पानी की गिरी तो मुस्कान से मुख खिल गया।
सावन बरसता देखकर भगवान मानो मिल गया।।

लेकर कृषक हल बैल अपने बीज बोते खेत में।
करना था सोना उन्हें पैदा महकती रेत में।।
छा गई कृषकों के सूखे होठों पर मुस्कान थी।
बढी रौनक खेत की मेड़ों पर जो सुनसान थी।।

गायें, भैंसें, भेड़ें, बछड़े, बकरियां भी उछलती।
घन घटाएं देखकर के अहा! चिड़िया रह रह फुदकती।।
हर्ष अब हर ओर छाया लगता प्रकृति खुद नाचती।
पवन पत्ते पत्ते पर पांत खुशी की बांचती।।

हरी चूनर ओढ़ धरती अब तो लहराने लगी।
मरुस्थल की मृदुल माटी पुनः मह महाने लगी।।
उत्तर दिशा से उठ कलायण छा रही चहुं ओर थी।
काली घटाएं बन गई सहज ही चित चोर थी।।

भर गया अब शुष्क तालों में लबालब नीर था।
सूखी सरिताओं में पानी बह रहा बन क्षीर था।।
चमकने जुगनू लगे और बोलने दादुर लगे।
मानों निशा में दीप ले कोई आरती करने लगे।।

टर्र टर्र की मधुर ध्वनि मोद मन में भर रही थी।
दिवस में टोली मयूरों की नर्तन कर रही थी।।
लताएं पाकर सहारा उठती ऊपर जा रही थी।
खेत जाती कृषक बालाएं रह रह गा रही थी।।

प्रकृति में वर्षा ऋतु से आ गई अल्हड़ जवानी।
हवाओं को देखकर के नदियों में आई रवानी।।
वर्षा ऋतु में मरुस्थल बहुत ही लगता सुहाना।
रेत के खेतों में मोहक फसल का वह लहलहाना।।

खेत में जो बीज डाला अंकुरित वह हो गया था।
देख उसको कृषक सारा पुनः पुलकित हो गया था॥
सुबह को सूरज निकलता सांझ को बादल बरसते।
बिजलियां भी चमकती थीं मेघ भी आ आ गरजते॥

आ गई जन्माष्टमी भी देवकी के कृष्ण जन्मे।
तुलसां तुम भी माँ बनोगी पर बतादो कितने दिन में॥
इसका पता मुझको नहीं मास अन्तिम चल रहा है।
दीप मेरे एक मन में देखती हूँ जल रहा है॥

कृष्ण गोकुल जायेगा तो मनसुखा भी आयेगा।
आठ दश दिन और देखो वह देर न लगायेगा॥
नित्य बालूराम का मन उमंगों में भर रहा था।
अपने सुत को देखने बन के आतुर फिर रहा था॥

भाद्रपद शुक्ला की तृतीया था दिवस शनिवार का।
दूत देवों का था आया ले के प्रण उपकार का॥
थाली बजते ही वहां पर सुरंग अनुपम छा गया।
देखो बालूराम के घर नन्हा मुन्ना आ गया॥

बिजलियों ने चमक कर के रोशनी अपनी लुटाई।
घन ने गरज कर नीर की धार धरती पर गिराई॥
प्यासे खेतों ने किया उस दिवस सुधा का पान था।
समीर के झोकों में उस दिन जन्म दिन का गान था॥

सभी बालूराम जी को अब बधाई दे रहे थे।
इस खुशी में सब मिठाई बाँटने की कह रहे थे॥
भेज डेगाना किसी को लड्डू मैं मँगवाऊँगा।
रखिये धीरज मिठाई हर घर यहाँ बटवाऊँगा॥

तालियां बच्चे बजाते लौट घर को जा रहे थे।
बड़े बूढ़े बधाई देने अभी तक आ रहे थे॥
मेघ बूंदें बरस कर के नृत्य मानो कर रही थी।
मंद शीतल पवन भी नृत्यांगना बन फिर रही थी॥

चलकर आया देव लोक से धरा पै जीव,
चहुँ ओर खुशियों का रहा नहीं पार है।
देव है कि देवदूत देखन को जाते सब,
तेज युक्त चेहरा वह तो अवतार है।।

आने की खुशी में घन ने धोया है चौक,
देखो आज हर्षित सारे घर द्वार है।
पुण्यवान जीव आया सब ही प्रणाम करो,
खुशियों का यह लाया आज अम्बार है।।

मन में बालूराम विचारे।
सुत को कैसे आज पुकारे।।
ब्राह्मण के घर जाना होगा।
नाम अभी निकलाना होगा।।

पास एक बच्चा बुलवाया।
घर से नारिकेल मंगाया।।
सोच रहा जाऊँ डेगाना।
तभी हुआ ब्राह्मण का आना।।

हाथ जोड़कर पास बैठाया।
नारिकेल को हाथ थमाया।।
कल नभ में जब सूरज आया।
घर वाली ने सुत को जाया।।

दान दक्षिणा यह संभालो।
सुत का सुन्दर नाम निकालो।।
देख जन्म पत्री वह हरसा।
बालू तेरे सोना बरसा।।

यह किसी से नहीं डरेगा।
कीतलसर का नाम करेगा।।

राजयोग इस में है आता।
जग भी जय जय कार लगाता ।।

धर्म ध्वजा फहराने वाला।
तेरे सुत के योग निराला ।।

पुण्य योग से पुत्र है पाया।
पन्ना नाम लगे सुख दाया ।।

भाग्यवान है इसकी माता।
जिसने जोड़ा उससे नाता ।।

पालन पोषण करना अच्छा।
नाम करेगा तेरा बच्चा ।।

तुमने सुरभित सुमन खिलाया।
नो दिवस का नहावन आया ।।

फिर मैं भी आ दर्शन लूंगा।
आशीष शिशु को मैं भी दूंगा ।।

हर्षित हो पण्डित चला, अपने घर की ओर।
खुश हो बालूराम भी, चले स्वयं की पौर ।।

देव कन्याएं वनी बालाएं वहां आने लगीं।
मधुर कंठों से वे कोकिल गान वहां गाने लगीं ।।
मेनका सी लग रही कुछ उर्वशी सी लग रही थीं।
आसमां से उतर मानो अप्सराएं भग रही थीं ।।

गीत गाती नाचती वे लग रही थीं सब सुहानी।
आई सारी ओढ़कर वे सभी चूनर तो धानी ।।
मां यशोदा कृष्ण को पाकर स्वयं हर्षा रही थी।
गोद में उसको उठाये वे वहां मुसका रही थी ।।

एक टक निहारे मां फिर ले रही उसकी बलैया।
नजर ना लग जाये मेरा लाड़ला यह कन्हैया ।।

देर तुमने क्यों लगाई मैं स्वयं से डर गई थी।
नित्य करती मैं प्रतीक्षा पुत्र आधी रह गई थी।।

स्वप्न जो देखा कभी था पा तुझे पूरा हुआ है।
दुश्मनों की कल्पना का आज सब चूरा हुआ है।।
प्रथम सुत की याद में, मैं सांझ रह रह काटती थी।
नयन से जो अश्रु झरते जीभ से नित चाटती थी।।

बोझ मेरे मन का बेटे तूने हल्का कर दिया।
जल रहा मेरा कलेजा तूने यहाँ शीतल किया।।
सुन लाल मेरे कह रही माँ देख तुझको आज है।
मेरे बेटे तुझको रखनी दूध की नित लाज है।।

सुत सीख मां की मानना यह भूल मत जाना कभी।
नित साथ रहना सत्य के यह सीख देती हूँ अभी।।
तप त्याग के पथ पर चले यह धर्म है इंसान का।
जीए औरों के लिए वही रूप है भगवान का।।

जीव जो भी है धरा पर सब में वो ही आत्मा है।
कर्म से छोटे बड़े पर सब में ही परमात्मा है।।
दूर तुझ से जा चुके हैं पास में उनको बुलाना।
भूखे को रोटी सदा, खाने से पहले खिलाना।।

मौन बन वहाँ पुत्र करता माँ के पय का पान था।
मां को सुत की सुरक्षा का पूरा पूरा ध्यान था।।
वे नृत्य करती वालिकाएं जब अचानक रुक गई।
आँख बालूराम की भी देख उन को झुक गई।।

क्या निकाला एक बोली नाम नहीं वतलाओगे।
ना नहावन से पूर्व तुम भाभी से मिल पाओगे।।
कहदो हमको कहना जो दूती वन हम जायेंगी।
सूचना तुम जो भी दोगे वो ही कह कर आयेंगी।।

तेरी महक हवाओं में है,
जल में भी तू छाई है।
सुमनों की सौरभ के अन्दर,
खुशबू तेरी आई है।।

मैं तेरी सौरभ को धरती के कण कण में फैलाऊँगा।
हे मातृभूमि की मिट्टी तेरी जय जय कार लगाऊँगा।।

मन में तेरा रूप समाया,
तन में रही तुझसे शक्ति।
आठों याम करूं हे मिट्टी,
कर को जोड़ तेरी भक्ति।।

शीश झुका कर के श्रद्धा से मैं तेरा तिलक चढ़ाऊँगा।
हे मातृभूमि की मिट्टी तेरी जय जय कार लगाऊँगा।।

तेरा रस पी बड़ा हुआ हूँ,
तू ने ही मुझको पाला।
मन करता है तेरी फेरुं,
मैं नित उठ कर के माला।।

नित्य अर्चना करने तेरी मैं घृत के दीप जलाऊँगा।
हे मातृभूमि की मिट्टी तेरी जय जयकार लगाऊँगा।।

क्षितिज से उठ सूर्य ज्यों आकाश में चढ़ने लगा।
सुत वह तुलसां का पन्ना अनवरत बढ़ने लगा।।
रैन आती दिवस जाता सूर्य भी ढलता रहा।
चन्द्रमा आ रैन में नित व्योम से मिलता रहा।।

कल बदलता आज में आज कल में बदल जाता।
रात का अजगर निकल नित्य दिन को निगल जाता।।
पंख फैला कर समय नित हंस सा उड़ता रहा।
उम्र के इतिहास में नित पृष्ठ नव जुड़ता रहा।।

शीत बदले ग्रीष्म में, फिर ग्रीष्म पावस में बदलता।
मुठ्ठियों से रेत निकले समय भी ऐसे निकलता ।।

अपने पिता के साथ पन्ना खेत पर जाने लगा।
वह आम पर चढ़ कोयलों के साथ में गाने लगा ।।

टोली बनाकर दोस्तों को देता वह आदेश था।
चिन्तन करने योग्य होता उसका हर उपदेश था ।।

जिद में आकर मां के कर को बन अनाड़ी खेंचता।
खुश जो होता सब्जी सिर धर गांव में जा बेचता ।।

उम्र के नव वर्ष पूरे बस इस तरह से हो गये।
कुछ ना कर पाया वह बालक स्वप्न सारे खो गये ।।

दूर घर से चला जाता रात तक आता नहीं था।
बहाना कुछ भी बनाकर रात में खाता नहीं था ।।

सिर पर ढोते सब्जियां, उम्र रही है बीत।
क्या खा पी सोना यही, इस जीवन की रीत ?

पढ़ लिख मैं पाया नहीं, कृपा करो हे नाथ।
जीवन की पतवार अब, मेरी तेरे हाथ ।।

नैया अब मँझधार है, सुनले खेवन हार।
विनती सुन मेरी मेरी प्रभो, तुमको रहा पुकार ।।

छोड़ा मुझको आपने, करो आप संभाल।
नीर नयन में भर करे, विनती पन्नालाल ।।

दिव्य पुंज नभ से उतर, गया हृदय में पैठ।
पन्ना पा आलोक को, गया धरा पर बैठ ।।

तृतीय सर्ग

पावन पलायन

मंगलाचरण

जो अन्तर अरि का दमन करे,
उन अरिहन्तों को नमन नमन।
जो सिद्ध शिला पर बैठे उन,
सिद्धों से चमके शिवायतन ॥

आचार्य देव भगवन्तों की,
महिमा का निश दिन गान करूं।
उपाध्याय के श्री चरणों का,
मैं शीश झुका सम्मान करूं ॥

सब सन्त-सती इस धरती के,
हैं, वन्दन योग्य सभी मेरे।
जब तक श्रद्धा इन पांचों पर,
फिर तमस धरा को क्यों घेरे ॥

है पूजनीय उपर्युक्त पंच,
मैं नित उठ उनको ध्याता हूँ।
श्रेष्ठ मंत्र नवकार सदा ही,
मैं "शशिकर" निशदिन गाता हूँ ॥

एक दिवस को खेत से, आते बालूराम।
अश्व चढ़े ठाकुर मिला, उसने किया प्रणाम ॥
मूंछों पर दे ताव को, उसने बोले बोल।
गढ़ में तू आता नहीं, क्यों करता है पोल ॥

समय मुझे मिलता नहीं, फैला इतना काम ।
सुबह जाता हूँ खेत को, संध्या लौटूं ग्राम ।।
कार्य बहुत फैला हुआ, पल भर भी ना चैन ।
कभी कभी हो जाती है, मुझे खेत पर रैन ।।

कृपा इधर कैसे करी, किधर जा रहे आप ?
स्नेह आपका मिल रहा, प्रभु का सभी प्रताप ।।
समाचार मैंने कहे, घर तेरे दस बार ।
कल से गढ़ आना तुझे, करने को बेगार ।।

बालू कुछ बोला नहीं, कुछ न पाया सोच ।
अश्व बढ़ा ठाकुर चला, आगे निःसंकोच ।।
सांस थमी उसकी रही, टूटे जैसे पांव ।
बीच धार में डोलने, लगी उसे अब नाव ।।

घर जाते ही खाट पर, गया धम्म से वैठ ।
रोम रोम पीड़ित हुआ, गई देह हो ऐंठ ।।
जल ले तुलसां आ गई, बोली मीठे वैन ।
पन्ना के बापू बने, क्यों इतने बेचैन ?

नहीं समझ में आ रहा, उठता मन में ज्वार ।
ठाकुर यह कह कर गया, करनी है वेगार ।।

यहां शक्ति शस्त्र चला कब तक,
शोषण के दीप जलायेंगे ।
महलों की प्यास बुझाने को,
हम कब तक लहू वहायेंगे ।।

महलों की नींव हिलाने को,
मन मेरा करता वार वार ।
मगर नहीं कुछ कर पाता हूँ,
वैठा रहता मन मार मार ।।

कह कर के वह तो चला गया,
पर जला गया मेरी छाती।
भगवान आप ही सुन लेना,
क्या दया आपको ना आती॥

चना अकेला भाड़ फोड़ने,
मन में यदि भाव जगायेगा।
हाथ नहीं कुछ आयेगा पर,
जग में वो हंसी करायेगा॥

ठाकुर के साथी गुण्डे हैं,
मुझ पर वह लट्ठ चलायेगा।
मैंने कुछ हिम्मत कर भी ली,
पर साथ न कोई आयेगा॥

जब देखो तब उस ठाकुर के,
हर कारिंदे का कहना है।
भरनी तुझको चिलम पड़ेगी,
यदि इसी गांव में रहना है॥

नहीं कहते भी नहीं बनती,
ना हाँ कहने की बनती है।
दाँत किटकिटाते हैं मेरे,
भौहें भी रह रह तनती हैं॥

लेकिन सभी नपुंसक यहाँ,
बेगार हमेशा करते हैं।
लाठी, जूते, गाली खाकर,
हा आह नहीं वे भरते हैं॥

शोषण का पोषण करने पर,
पीढ़ियाँ नपुंसक होती हैं।
भूल आज जो होती उसका,
फिर बोझ पीढ़ियाँ ढोती हैं॥

अब चाहे कुछ भी हो जाये,
मैं शोषण चक्र मिटाऊंगा।
बेगार बहुत करली मैंने,
छुटकारा उससे पाऊंगा।।

जल उठा दीप घर के अन्दर,
मन्दिर में भी टंकार लगी।
श्री बालूराम के हृदय में,
बस विप्लव की हूंकार जगी।।

अरे! आप क्या सोच रहे हैं,
क्या खाना आज न खाना है।
पन्ना का अब तक पता नहीं,
भैंसों को देना दाना है।।

पता नहीं जाने कहां गया,
मित्रों के बीच नहीं रहता।
बार बार मैंने पूछा पर,
मुझको कुछ यहां नहीं कहता।।

मेरी मानो ठाकुर के घर,
अपना पन्ना जा आयेगा।
थोड़ा बहुत काम होगा तो,
यह पन्ना ही कर आयेगा।।

वह उसके बस का काम नहीं,
कुछ काम गढ़ी का भारी है।
ठाकुर को तू नहीं जानती,
अरे! वह महा बीमारी है।।

गाली गलोच उसके मुख पर,
लहरों सी आती जाती है।
टिकता है उसके पास वही,
जिसकी लोहे की छाती है।।

तो फिर मैं ही चली जाऊंगी,
आप खेत पर होकर आना।
ठाकुर को मैं समझा दूंगी,
आप तनिक भी मत घबराना॥

तुलसां फिर ऐसा मत कहना,
कुछ नाग वहां पर रहते हैं।
उनका काटा ना मांगे जल,
नित यहाँ जमाने कहते हैं॥

मेरे रहते तू जायेगी,
सपना आये वह झूठा है।
डोली चढ़ी दुल्हन देख कर,
इसी कमीने ने लूटा है॥

डोली अर्थी में बदल गई,
ऐसा कुछ पुरखे कहते हैं।
यह सच कहता हूँ, तुलसां हम,
नागों के बिल में रहते हैं॥

तब तक पन्ना आ गया वहां,
बोला क्यों आज उदासी है।
मां बापू को क्या हुआ आज,
क्यों नजरें प्यासी प्यासी हैं॥

बेटा बड़ा हो गया है तू,
बापू का हाथ बंटाना है।
घर अपना भी ऊंचा आये,
तुझको भी काम उठाना है॥

ठाकुर ने तेरे बापू को,
बेगार हेतु बुलवाया है।
कल तू ही वहीं चले जाना,
इनको मैंने समझाया है॥

हाँ हाँ बापू जाऊंगा मैं,
कल देख गढी भी आऊंगा।
आप खेत पर हो आना कल,
बेगारी मैं कर आऊंगा।।

मुंह फट्ट है मुझ से ज्यादा,
बेटे तू मौन वहां रहना।
चुपचाप वहां करते जाना,
तू कारिंदों का हर कहना।।

ठाकुर पूछे तो कह देना,
कुछ काम जरूरी हो आया।
बेगार आपकी करने को,
बापू ने मुझको भिजवाया।।

तुलसां बोली मत देर करो,
सूरज पश्चिम में जाता है।
काली चादर ओढ़ धरा पर,
तम देखो दौड़ लगाता है।।

भोजन का थाल लगाती हूँ,
धोलो तुम अपने हाथों को।
मैं समझा दूंगी पन्ना को,
मत चावो तुम अब वातों को।।

यह कह कर के उसने अब तो,
आसन धरती पर बिछा दिया।
लोटा जल का भर दिया वहां,
थाली में भोजन लगा दिया।।

तीनों की थाली अलग अलग,
तीनों में तीन कटोरी हैं।
फूली फूली रोटियां वनी,
लगती वे सभी कचोरी हैं।।

दाल कटोरी में आकर के,
सौरभ अपनी फैलाती है।
सन्तोष जहां पर होता है,
बस शान्ति उसी घर आती है ।।

धीरे धीरे चबा चबा कर,
भोजन वे करते जाते हैं।
घर गली गांव अरु खेतों की,
वे करते जाते बातें हैं ।।

पन्ना खाने में जल्दी ना,
मां ने यह कहकर टोक दिया।
पन्ना ने भी मुसका कर के,
अपने हाथों को रोक लिया ।।

दांतों का काम यहां आंतों,
से, पुत्र यदि करवाओगे।
उदर शूल होगा भारी तो,
फिर करनी पर पछताओगे ।।

जिसका जो काम यहां होता,
वह उसको शोभा देता है।
कुंभकार क्या प्रक्षालन को,
वस्त्र दूसरों के लेता है ।।

अब गति हुई पन्ना की मंद,
वह धीरे-धीरे खाता था।
वहां देख पिता की ओर वह,
भोजन करते शरमाता था ।।

हाथों का प्रक्षालन करके,
उनने मुख पर हाथ फिराया।
घर के पिछवाड़े बाड़े में,
जो पशुओं पर हाथ घुमाया ।।

गाय भैंस खा पीकर सारी,
वहां अपना मुँह चलाती थी।
कामधेनु सी एक गाय तब,
बछड़े को दूध पिलाती थी॥

बछड़े को बांधा एक ओर,
डाली सबको ही पुनः घास।
डोले में पानी भर-भर कर,
अब गया पशुओं के वह पास॥

कुछ ने सूंघा उस डोले को,
कुछ ने गर्दन को हिला दिया।
बड़े प्रेम से सब पशुओं को,
उसने तो पानी पिला दिया॥

उठ, चल दिया चौपाल ओर,
बैठे थे कुछ लोग जहां पर।
बालूराम से बोले, अरे!
आओ बैठो पास यहां पर॥

बहुत दिनों के वाद इधर तुम,
भाई हमको दिये दिखाई।
काम बहुत मालूम हमें पर,
सुधि हमारी तुम्हें ना आई॥

सुधि आपकी मुझे ना आये,
ऐसी तो कोई बात नहीं।
काम खेत पर इतना रहता,
नित हो जाती है रात वहीं॥

समय मिला तो चलकर आया,
कुछ नई पुरानी वात कहो।
ठाकुर वेगार कराता है,
कल कौन जा रहा साथ कहो॥

इक बोला मैं पांच दिनों से,
हर रोज गढ़ी में जाता हूं।
हो रही सफेदी महलों की,
मैं चूना नित पुतवाता हूँ॥

बालू बोला - ठाकुर आया,
पर मैं तो ना जा पाऊँगा।
कल काम खेत पर ज्यादा है,
मैं पन्ना को भिजवाऊंगा॥

मत भूल तू ऐसी कर भैया,
पन्ना तो अब भी बच्चा है।
कठिन काम है दीवारों का,
तू आये तो ही अच्छा है॥

फसलों को पानी दे न सका,
सब गुड़ गोबर हो जायेगा।
महिनों के मेरे श्रम पर,
इससे पानी फिर जायेगा॥

फिर जैसा तुमको ठीक लगे,
वह पन्ना को समझा देना।
मैं नित्य सवेरे जाता हूं,
तुम उसको भी भिजवा देना॥

कुछ कहते कुछ सुनते जाते,
कुछ हंसते हंसते उठ जाते।
कुछ कहते वापिस आयेंगे,
पर लौट नहीं वे आ पाते॥

सूनी फिर चौपाल हो गई,
सब लोग घरों की ओर गये।
जाने किस घर चाँद गया फिर,
बुझ एक-एक कर दीप गये॥

आंगन में बिछी खाट पर जा,
बालू ने भी विश्राम किया।
आगई नींद ना जाने कब,
जागा मुर्गो ने बांग दिया ।।

जागा बालूराम, अरुण शिखा के शब्द सुन।
करना मुझको काम, छोडूं शैया मैं उठूं ।।

सर्व प्रथम उठकर के उसने वहां घास पशु को डाली है।
जाति से तो है ही लेकिन वह बालू धर्म से माली है ।।
उसके पीछे-पीछे ही अब तुलसां भी उठकर के आई।
दोहन उसे गाय का करना वह धोकर के बर्तन लाई ।।

बछड़े को दूध पिलाकर उसने किया गाय का दोहन है।
धारोष्ण दुग्ध तैयार अरे! क्यों सोया मेरे मोहन है ।।
आवाज सुनी पन्ना जागा उठ मात पिता को नमन किया।
दैनिक कर्मो से निवृत्त हो मां के हाथों से दुग्ध लिया ।।

परम तत्व को हाथ जोड़कर, कर गया दुग्ध का पान वहां।
मां जब भी जो दे देती उसको ले लेता ससम्मान वहां ।।
रोटियां बनाकर गर्म-गर्म कपड़े में उनको बाँध दिया।
गढ़में पन्ना को जाना हैं पहले ही उसको बता दिया ।।

हाथों में रोटी लटका कर चल दिया भोर के होते ही।
नभ में सूरज के आते ही वह चला सितारे सोते ही ।।
तुलसां के नयनों का पानी पलकों में आकर ठहर गया।
वह हँसता हँसता गया मगर उतर पेट में जहर गया ।।

पन्ना की ऊमर नहीं,
अभी दूध के दांत।
ठाकुर की वेगार है,
रक्षा करना नाथ ।।

टुकड़े टुकड़े हुआ नहीं क्यों मेरा कलेजा।
करने को वेगार हाय मैंने सुत क्यों भेजा ?

छोटा मेरा लाल काम क्या वहाँ करेगा।
कांप कांप उस ठौर हाय दश बार मरेगा ॥
कांच का बर्तन जान जिसे यहां रोज सहेजा।
करने को बेगार हाय मैंने सुत क्यों भेजा ?

गढ़ में बसते लोग लगे हैं मुझे दरिंदे।
उनसे ज्यादा दुष्ट उनके हैं सब कारिंदे ॥
मां होकर बोली यम तू मेरे सुत को ले जा।
करने को बेगार हाय मैंने सुत क्यों भेजा ?

अंतर उठता ज्वार नयन से आंसू बरसे।
कर के रोटी उसे थमा दी अपने कर से ॥
नाग तू डस ले जीभ बोल गया जैसे तेजा।
करने को बेगार हाय मैंने सुत क्यों भेजा ?

भय नहीं पन्ना के मन में वह हंसता जा रहा था।
सिर पे रखना रोटियां कभी हाथ में लटका रहा था ॥
और भी कुछ लोग उसके अब चल रहे थे साथ में।
वह पड़ौसी था कि बातें कल जिससे हुई थी रात में ॥

पन्ना का उत्साह उनके मन में भय को भर रहा।
ठाकुर बिगड़ जाये नहीं हर साथ वाला डर रहा ॥
पन्ना पहली बार वहां देख बेटा जा रहा है।
साथ चलता हर कोई उसको यह समझा रहा है ॥

चुपचाप करना काम बेटे कुछ नहीं तू बोलना।
ठाकुर तुझे गाली भी दे, जुबान को मत खोलना ॥
सुनता रहा चुपचाप पन्ना सिर हिलाता ही रहा।
आगे जो भी चल रहा पथ उससे मिलाता ही रहा ॥

ऊँची जगह पर सुन्दरी गढ़ी गांव से कुछ दूर थी।
अलग अपने को समझ कर नित गर्व से वह चूर थी।।
पक्की चूने से बनी वह पी के मद मदहोश थी।
गर्व में थे सब वहां पर बस नींव ही बेहोश थी।।

वे पंक्तियां बनकर खड़े थे सब गढ़ी के सामने।
की हुक्म की फिर उदूली उस दुष्ट बालूराम ने।।
एक बोला पन्ना उसका काम करने आया है।
खेत पर जाना जरूरी पुत्र यहां भिजवाया है।।

सारा गधे का काम है चूहा क्या कर पायेगा।
एक पत्थर गिर गया तो दबकर यह मर जायेगा।।
चलो सब पत्थर उठाओ आज सबको डालना है।
काम सब ही आज करना नहीं कल पर टालना है।।

सब लगे पत्थर उठाने कर्म पन्ना कर रहा था।
वह शक्ति से ज्यादा बड़े उपल सिर पर धर रहा था।।
दिन चढ़े ठाकुर ने आ अपनी नजरों को घुमाया।
लगता हरामी बालिया कहा फिर भी नहीं आया।।

किसका पिल्ला आ गया यह कौन इसको लाया है।
कहा—कारिंदे ने मालिक पुत्र उसका आया है।।
मेहनती लड़का मगर उसको भी आना चाहिए।
है वह हरामी बांध उसको अभी लाना चाहिए।।

कल ही मिला था वह मुझे कुछ सामने बोला नहीं।
ठाकुर की शक्ति को अभी उस मूर्ख ने तोला नहीं।।
यदि मैं जो चाहूँ तो उसे अभी मरवा सकता हूँ।
चमड़ी खिंचवा करके मैं नमक भरवा सकता हूँ।।

उस गधे से कहना कल बाप बेटे दोनों आयें।
हुक्म को माना नहीं, अंजाम को भी समझ जायें।।
कारिंदे ने पन्ना को कहा वह जाकर सुनाया।
नहीं आया बाप तेरा मालिक को गुस्सा आया।।

कल तू तेरे बाप को साथ में लेकर के आना।
वरना बहुत होगा बुरा बात मेरी समझ जाना।।
माघ का महिना ठिठुरता स्वेद से मजदूर भीगा।
और कुछ बस में नहीं था इसलिए मजबूर भीगा।।

एक दिन के उस श्रम ने पन्ना का तन तोड़ डाला।
अन्याय है अन्याय यह सिसककर मन मोड़ डाला।।
परिश्रम करके पशु भी सुस्ताते आराम करते।
आराम मानव को नहीं यहाँ पशु से अधिक पिलते।।

फिर भी इनके कर्म में तो फाके ही खाना लिखा।
इतना परिश्रम कर के भी इनके पछताना लिखा।।
कल नहीं मैं आऊंगा अब न ही बापूं आयेंगे।
लाभ ये मजबूरी का हमसे उठा न पायेंगे।।

घर गया सूरज कभी का मगर ये कहते नहीं हैं।
इसी गढ़ी में लगता मुझे आदमी रहते नहीं हैं।।
जल उठे वहां दीप तो कारिंदा बोला जोर से।
कल सभी को आना होगा यहां पहले भोर से।।

देर आने में करी तो लट्ठ की खानी पड़ेगी।
उठ न पायेगा कभी भी मार फिर ऐसी उड़ेगी।।

कठपुतलियों की तरह सारे सिर झुकाकर चल दिये।
पन्ना बोला इतनी मेहनत कर रहे हम किसलिए।।

उत्तर किसी के पास में भी देने का न वक्त था।
चलती भीड़ थी वह भेड़ की जमा जिसका रक्त था।।
यहां लौटकर श्मशान से जाते जैसे लोग हैं।
सभी जा रहे बस इस तरह कैसा यह संयोग है।।

हो गई सुप्त सबकी आत्मा इसलिए यह हाल है ।
अब जड़ के बदले सींचते जल से क्यों हम डाल है ।।

घर छोड़ कर जाना पड़ा तो भी इक दिन जाऊंगा ।
है प्रश्न मेरे चक्षुओं में ढूंढ़ कर हल लाऊंगा ।।

पंछी नीड़ों में लौट आये, मेरा लाल नहीं आया ।
लेकर दीप रोशनी आये, मेरा लाल नहीं आया ।।

पट मंदिर के भी बंद हुए, मेरा लाल नही आया ।
चुपचाप निगाहें फैलाए, मेरा लाल नहीं आया ।।

मन में भय छाता जाता है, मेरा लाल नहीं आया ।
क्यों कोई नहीं बताता है, मेरा लाल नहीं आया ।।

मन पल पल शूल चुभोता है, मेरा लाल नहीं आया ।
कुछ नहीं समझ में आता है, मेरा लाल नहीं आया ।।

पलक बिछाकर पथ को ताकूं, मेरा लाल नहीं आया ।
हिरणी सी इधर उधर झांकूं, मेरा लाल नहीं आया ।।

क्या उठा ले गये हैं डाकू, मेरा लाल नहीं आया ।
हर घर में है कां कू कां कू, मेरा लाल नहीं आया ।।

अधीर होके तुलसां घर की देहरी पर उदास खड़ी ।
श्री वालू भी भीतर बाहर आये जाये घड़ी घड़ी ।।

कल नहीं लाल को भेजूंगी चाहे कुछ भी हो जाये ।
धीरज धर तुलसां धीरज धर वालू राम यों समझाये ।।

गढ़ी दूर आता ही होगा नहीं अकेला पन्ना है ।
सोहन, मोहन, रामू, श्यामू, गया साथ में धन्ना है ।।

जाकर मैं पता लगाता हूं क्या वे भी ना आये हैं ।
पथ में दूर मुझे लगते कुछ निकट आ रहे साये हैं ।।

पन्ना की आवाज मुझे हां अरे ! सुनाई देती है।
खुश हो जा पन्ना की मां क्यों अरे सिसकियाँ लेती है ।।
अब तक पन्ना आ गया वहां आकर मां के लिपट गया।
बहुत देर से आया रे क्या काम वहां का निपट गया ।।

मां ठाकुर तो जल्लाद बड़ा सुबह सुबह ही वह आया।
कुछ का कुछ बोला मुझको कल बापू को भी बुलवाया ।।
मैंने गढ़ी देखली है कल नहीं वहां पर जाऊंगा।
बेगारी ऐसी करने से अच्छा मैं मर जाऊंगा ।।

मरें तेरे दुश्मन बेटे जिन्दा तुझे तो रहना है।
सौ बरस लाल जीना मेरे मेरा तुमको कहना है ।।
अब भूख लगी होगी बेटे हाथ पांव को धो आओ।
बाप-बेटे दोनों ही मिल चलो बैठो खाना खाओ ।।

तुमने क्या पहले खाया साथ हमारा ना दोगी।
उपवास आज है ग्यारस का तुमको तो मालुम होगी ।।
व्रत उपवास तुम्हारे मां जब देखो तब आ जाते हैं।
क्या होता इनके करने से कोई ना समझाते हैं ।।

थोड़ा और बड़ा होजा तू समझ सभी फिर जायेगा।
व्रत उपवास करेगा तो फल अच्छा उसका पायेगा ।।
भोजन कर पन्ना बोला श्रम किया आज मैंने भारी।
नींद नयन में आ बैठी मां कर सोने की तैयारी ।।

मेरे लाल मुझे मालुम पहले से बिस्तर लगा दिया।
बिस्तर पर पन्ना जा पहुँचा सिर तकिये पर टिका दिया ।।
सोते ही आई नींद पड़ी लोरी भी नहीं सुनानी।
सदा तंग करता था मां मुझे सुनाओ नई कहानी ।।

आज चिन्ता बालू को यह खा रही थी।
क्या करूंगा कल समझ नहीं आ रही थी ।।
वहां सोचता त्यों त्यों उलझता प्रश्न था।
भगी निंदिया दूर उससे जा रही थी ।।

क्या सोचते हो आज क्या सोना नहीं ?
कर्म में जो कुछ लिखा बस होना वही ।।
व्यर्थ ही चिन्ता में चित्त न ले जाइये ।
यहां सुमन हेतु शूल को बोना नहीं ।।

कहना तुम्हारा ठीक है पर करुं क्या ?
गढ़ी में जाना पड़ेगा मैं डरुं क्या ?
मुझे और कोई रस्ता दिखता नहीं ।
समझ में आता नहीं अब मैं मरूं क्या ?

मरने से तो प्रश्न हल होता नहीं है ।
बीज जब तक कर में फल होता नहीं है ।।
सोचना जो आपको वही सोचलो अब ।
जिन्दगी में कल कभी होता नहीं है ।।

बेगार करने मैं गढ़ी ना जाऊंगा ।
मैं अपने स्वाभिमान को दिखलाऊंगा ।।
अब तलक दब कर रहा यहाँ मैं हमेशा ।
दब चुका हूं और दब ना पाऊंगा ।।

भोर में ही खेत पर जाना मुझे ।
पन्ना को भी साथ ले जाना मुझे ।।
यहाँ ढोर वन में भेज कर सारे ।
रोटियां ले खेत पर आना तुझे ।।

पीछे से कोई यदि आ जायेगा ।
प्रश्न का उत्तर यहां क्या पायेगा ?
मैं कहूँगी वे गये सभी काम पर ।
क्या मेरा उत्तर यह चल जायेगा ?

निश्चिन्त वह तो चित्त में अब हो रहा ।
नींद में तो बेच घोड़े सो रहा ।।
काम तेरा है यही कि जल्दी जगाना ।
लो नींद के आगोश में मैं खो रहा ।।

पन्ना के ही पास में सोया बालू राम।
तुलसां भी अब सो गई, ले ईश्वर का नाम ॥

घट्टी के चलने का स्वर दिया तुलसां को सुनाई।
स्वयं जागी और पति को वह जगाने पास आई ॥
बांग मुर्गों ने लगाई अब वृद्ध जन उठने लगे।
अब लोग उठ-उठ कर सभी निज काम में जुटने लगे ॥

गायें रंभाने लग गई चूल्हे भी जलने लगे।
नन्हें शिशु भी शोर सुनकर मां से पुनः मिलने लगे ॥
घट्टियों के साथ में स्वर अब गीत का आने लगा।
मक्खन दही से निकलने को स्वयं अकुलाने लगा ॥

घमड़क घमड़क हर बिलौने का स्वर सुनाई दे रहा।
चूड़ियों का खनखनाना आनंद अनुपम ले रहा ॥
सौ वर्ष पहले गांव की भोर का आलम यही था।
गांव पहले शहर से खुद को समझता कम नहीं था ॥

वे घट्टियाँ भी घूमती तो गोरियां भी झूमती।
घट्टी के हत्थे को गोरी प्यार से थी चूमती ॥
नणद से मिल भाभियां भी नित्य गाती थी प्रभाती।
गीत गाकर भोर की वे रश्मियों को थी बुलाती ॥

घट्टियाँ हैं अब भी पर सब की सब ऐंठी हुई हैं।
घर के कौने में सभी विधवा बन बैठी हुई हैं ॥
अब पूंछता कोई नहीं वे सुबकती ले सिसकियाँ।
आ गई हर गाँव में अब बन के सौतन चक्कियाँ ॥

बच्चे-बूढ़े सारे ही अब चक्कियों पर जा रहे।
अनाज पिसवा कर सभी आठों पहर ही आ रहे ॥
तेल से पहले चली अब बिजलियों से चल रही है।
[illegible] गीतों के स्वर सब जिन्दगी गलगल रही है ॥

गाय भैंसें दूध देती पर गांव में रहता नहीं।
नदियां बही होंगी कभी अब नारदा बहता नहीं ॥
दूध जितना भी निकलता वह शहर जाकर बिक रहा।
इस मास में कितना बिका ग्वाला उसी को लिख रहा ॥

दूध के संग दही पर यहाँ गाज गिरने लग गई।
हा ! चाय काली कालिका बन आज फिरने लग गई ॥
क्यों दूध में पानी मिलाकर लोग इसको पी रहे ?
जहर पीकर जाने कैसे लोग यहाँ पर जी रहे ॥

गुड़ और शक्कर हुये महंगे यही इसका राज है।
देखो गांव में भी चाय की खुली होटल आज है ॥
रंग ऐसा चाय का तो आज जग पर चढ़ रहा है।
छूत का यह रोग अब तो घर गली में बढ़ रहा है ॥

अरे ! क्षणिक पा उत्तेजना सब खो रहे हैं चुस्ती को।
मंझधार में ले जा रहे हैं आज अपनी किश्ती को ॥
चाय पीकर के बनी अब आज जो नव पीढ़ियाँ हैं।
चढ़ नहीं पाती जवानी में यहाँ पर सीढ़ियाँ हैं ॥

ओज चेहरे पर नहीं सब टूटे टूटे अंग हैं।
सभी नित्य ऐसे चल रहे जैसे कोई अपंग हैं ॥
गांव की सारी कलाएं जाने कहां जा खो गई।
पा शहर की उस रोशनी को कला अंधी हो गई ॥

सुप्त होकर शिल्प सोया पारखी कोई नहीं है।
गांव तो अब भी बहुत पर गांव सा कोई नहीं है ॥
आज अलगोछे की धुन अरे ! गांव से आती नहीं।
गोरियाँ पनघट से जल भर आज यहाँ लाती नहीं ॥

गांव में नल आ गये आता है रो रो के पानी।
हो रहे हैं नित्य झगड़े हाय पानी हाय पानी ॥
नवोढ़ाएं कूप से जल न खेंच कर के लाती हैं।
लाने की कह दो तो कहें शरम हमको आती है ॥

शहर ने तो शरम छोड़ी ये गाँव भी अब छोड़ते ।
गांव वाले शहरों से जा अपना रिश्ता जोड़ते ।।
रेडियो घर-घर के अन्दर सोचो पहले आ गया ।
लो जाल टी. वी. का भयानक देखलो अब छा गया ।।

अब सिमट सब घर में गये सूनी पड़ी चौपाल है ।
घर में सिनेमा देखते वृद्धों के संग बाल हैं ।।
ऐसे आते दृश्य वहाँ शरम से सब सिर झुकाते ।
मुसकराते मन ही मन पर बोल कोई भी ना पाते ।।

कल जो मर्यादा बनी वे अब लगी यहां टूटने ।
पीढ़ियों के मध्य का यहां रंग लगा है छूटने ।।
अब कलह के केन्द्र दिन-दिन गांव बनते जा रहे हैं ।
आपसी ईर्ष्या बहुत है सारे तनते आ रहे हैं ।।

कोर्ट की अरे फायलों में झगड़े जो आये हुए हैं ।
अधिकांश में वे देखलो गांव से लाये हुए हैं ।।
संयुक्त जो परिवार कल थे आज वे मिलते नहीं ।
प्यार के अरविन्द मन में अब आज तो खिलते नहीं ।।

जानते हम सब कि अपना देश गाँवों से बना है ।
शहर पहुँचा वही करता गाँव जाने से मना है ।।
नित चक्र शोषण का अभी भी चल रहा है गाँव में ।
हा गरीबी का दीप अब भी जल रहा है गाँव में ।।

जनतंत्र जमींदारों के अन्त का सन्देश लाया ।
स्वतंत्रता सन्देश सुन राष्ट्र सारा मुसकराया ।।
गाँव की दशा अभी भी अरे देश में बदली नहीं ।
देखो गांव की तस्वीर तो अभी भी उजली नहीं ।।

नित्य गांव के उद्धार हेतु राज्य धन को दे रहा ।
सरपंच, पटवारी प्रशासक मजे उसके ले रहा ।।
गुण्डे हैं जो ग्राम में वे ही पूजे जा रहे हैं ।
निर्धनों के धन को नित बांट चूजे खा रहे हैं ।।

आज भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बनकर आ रहा।
रो रही जनता हमारी नेता खड़ा मुसका रहा ।।
देर, पर अंधेर है नहीं, यही मुझे विश्वास है।
रात यह ढल जायेगी अब यहां सवेरा पास है ।।

कर बढ़ाया सुत जगाया।
मुसकराया गुनगुनाया ।।
सुत उठाया कुछ खिलाया।
खेत चलना यह बताया ।।

थी दराँती हाथ में।
एक रस्सी साथ में ।।

तुलसां बहुत बेचैन है।
भीगे हुए कुछ नैन है ।।
सोच कुछ ना पा रही थी।
काम करती जा रही थी ।।

रस नहीं है बात में।
क्या करु अब नाथ मैं ।।

अब बोलता कोई नहीं।
मुंह खोलता कोई नहीं ।।
पन्ना खड़ा चुपचाप है।
अब हुआ जीना पाप है ।।

डर समाया तात में।
सो न पाये रात में ।।

क्या यह जीना जीना है।
हाथों से विष पीना है ।।
डर कर मुझे जीना नहीं।
यह गरल तो पीना नहीं ।।

है कौन किसकी घात में।
क्यों भय समाया गात में।।

हम जा रहे हैं खेत पर तुलसां त्वरित चली आना।
करके व्यवस्था ढोर की रोटियाँ भी बना लाना।।
उठाने के लिए बोझ भैंसा मैं ले जा रहा हूँ।
देख जल्दी चली आना यह तुझे समझा रहा हूँ।।

भैंसे पर सामान रखा चले दोनों जा रहे थे।
नियति को मंजूर क्या है समझ वे ना पा रहे थे।।
नन्हा पन्ना तात की पीड़ा सारी जानता था।
देखकर चेहरा वह तो हृदय को पहचानता था।।

वह ठिठुरते प्रभात में वहां मौन बन चलता रहा।
वे पांव नंगे थे मगर इक आग में जलता रहा।।
खेत पहुँचा तब कहीं जाकर नैन खोले सूर्य ने।
अब ली परीक्षा आज पूरी यहाँ उसके धैर्य ने।।

सूर्य की नव रश्मियां अब तेज़ उसको दे रही थीं।
ठंडी हवाएं अभी भी परख उसकी ले रही थीं।।
कृषक का वह पुत्र ही था ठंड क्या उसको डराती।
देखकर श्रम शरम से वह भी पसीने में नहाती।।

घास डाली भैंसे को वहां जुटे दोनों कर्म में।
श्रम बिना जीवन नहीं है कभी मानव धर्म में।।
नित चींटियों को देखकर के सीखना कुछ चाहिए।
बिन परिश्रम आदमी को कुछ न, खाना चाहिए।।

श्रम की जो पूजा करे सौख्य उनको यहाँ समर्पण।
सिद्धियाँ उनके लिए स्वयं को करती हैं अर्पण।।
कर्म में है श्रम की शक्ति हम सभी यह जानते।
श्रम की महत्ता धर्म में ज्ञानी मनुज पहचानते।।

युक्त है श्रम से सदा महावीर का यहां पंथ है।
इसलिए तो श्रमण सभी कहलाते साधक सन्त हैं ।।
सब ही बने श्रम से श्रमण कर साधना साधक बने।
सम भाव से ही सन्त सब जिन धर्म आराधक बने ।।

शक्ति के अनुसार पन्ना अनवरत श्रम कर रहा था।
पाल ऊपर खड़ा भैंसा मगन होकर चर रहा था ।।
लगी होगी भूख अरे! माँ तेरी अब तक न आई।
राह भी सुनसान है ना दूर तक देती दिखाई ।।

रख कमर ऊपर हाथ बालू दूर तक फिर ताकता।
अनुसरण कर पन्ना भी कर हाथ आगे झांकता ।।
देखा उसने दौड़ते भगे आ रहे दो बाल हैं।
सांस फूली जा रही वहां भय से मिश्रित चाल है ।।

पास आकर एक बोला अरे हुआ गजब आज है।
काका तुमसे हो रहा वह ठाकुर तो नाराज है ।।
हमने सुना कि आज ठाकुर अपना आपा खो रहा।
तुमको पढ़ाने पाठ हेतु आग बबूला हो रहा ।।

चार कारिंदे सवेरे ही आज घर पर आ गये।
जानवर सब ले गये और भाभी को बतला गये ।।
जाना है तुमको गढ़ी यहां खैर वरना है नहीं।
जल्दी जाओ काका मेरे देर अव करना नहीं ।।

आज तुम जो न गये तो सब धूल में मिल जायेगा।
कह रहे थे कारिंदे घर शाम तक जल जायेगा ।।
जानवर तो कुड़क सारे फिर खेत भी हो जायेंगे।
पन्ना बोला-काका कहो क्या यहां हम खायेंगे ।।

मन मेरा ना मानता फिर भी अव जाना पड़ेगा।
आज मुझको धर्म की जा वात समझाना पड़ेगा ।।
चलो तुम पन्ना को ले सीधे घर की ओर जाओ।
मैं गढ़ी की ओर जाऊं भय तनिक मन में न लाओ ।।

ठाकुर भी आखिर आदमी खा न मुझको जायेगा।
मौत से ज्यादा न मुझको दण्ड वह दे पायेगा॥
चल दिये चारों वहां से भैंसा खड़ा चुपचाप था।
ढोर था बेचारा वह बंधन ही उसको शाप था॥

जाकर गढ़ी में विनय से शीश को उसने झुकाया।
बोला ठाकुर नशे में अरे अब जाकर तू आया॥
कमीनों क्या देखते हो स्वागत करो दो लट्ठ से।
औचक जमा डाले पीठ पर लट्ठ दो बस खट्ट से॥

वह भू पर गिर गया बस छा गया सहसा अंधेरा।
अरे ठाकुर प्रजा पर बस यही अत्याचार तेरा॥
अब बोल मत मुंह खोल मत वरना तू पछतायेगा।
सामना करके मेरा ना गांव में रह पायेगा॥

पिल्ले को लाया नहीं अरे तू बड़ा शैतान है।
दो लट्ठ मारो और इसके यह तो बेईमान है॥
पुनः जब उठे दो लट्ठ तो बालू बोला कड़क कर।
आ गया हो बैल जैसे सामने कोई भड़क कर॥

पूज्य मेरे आप हो सो बात कुछ कहनी नहीं है।
मैंने अपने हाथ में भी चूडियां पहनी नहीं हैं॥
यह कहके त्वरित ही छीनली तभी एक से लाठी।
अब कहो तो मैं भी दिखादूं तुम्हें मौत की घाटी॥

डर गये लठैत सारे नौ दो ग्यारह हो गये।
एक की दो कारिंदे ठकुराइन को पो गये॥
भीगी बिल्ली हो दरोगे लग गये थे भागने।
आई ठकुराइन दया की भीख उससे मांगने॥

काका मैं बेटी तुम्हारी मेरे यही सुहाग हैं।
क्षमा करदो आज इनको तेरे चरण में पाग है॥
दौड़ जब आया दरोगा मैं तो वहां घबरा गई।
तोड़ कर परदे की कारा भागी बाहर आ गई॥

जानवर की भाँति इनने नित्य मुझको है घसीटा।
लात हाथों से अनेकों बार मुझको यहाँ पीटा।।
पति हैं मेरे यह मैं नाता तोड़ तो सकती नहीं।
जानबूझ के अपना चूड़ा फोड़ मैं सकती नहीं।।

क्षमा हो महारानी मन आपका मैंने दुःखाया।
लट्ठ खाकर आज मैंने कर्ज कोई था चुकाया।।
अब प्राण दे दूंगा भले बेगार मैं दूंगा नहीं।
घुट रहा है दम मेरा यहां सांस मैं लूंगा नहीं।।

माँ बाप इनको मानकर के हम यहां जीते रहे।
बन के शंकर गरल यहां पर रोज ही पीते रहे।।
पर अब नहीं पी पाऊँगा फैसला है यह मेरा।
तेरे कारण बच गया है आज यह ठाकुर तेरा।।

जीते जी मैं इस गढ़ी में अब ना दूंगा पांव को।
मजबूर होकर छोड़ना अब पड़े चाहे गांव को।।
जानवर मेरे ले आया पर मैं नहीं ले जाऊँगा।
बाहू में ताकत मेरे है फिर नये ले आऊँगा।।

वह गढ़ी से निकल कर के बस सोचता था बात को।
शेर के मुख में यहाँ डाला आज मैंने हाथ को।।
आंसू तुलसां के नयन में पन्ना खड़ा उदास था।
सब घरों में छुप रहे थे कोई ना उनके पास था।।

हर ओर यह सन्नाटा कैसा कहाँ सारे खो गये ?
डर गये ठाकुर से सारे सभी नपुंसक हो गये।।
जो डर गया वो मर गया है ये नहीं क्या जानते ?
भेड़िये को सारे गीदड़ अपना राजा मानते।।

आवाज सुनी तो लोग धीरे धीरे आ रहे थे।
गढ़ी में जो कुछ हुआ था वे सभी बतला रहे थे।।
जल में रहकर मगर से यहां बैर कुछ अच्छा नहीं।
बालू बड़ा तू हो गया रहा कोई बच्चा नहीं।।

सर्प काला वह ठाकुर बदला तो लेकर रहेगा।
अपमान उसका हो गया वह न बिल्कुल भी सहेगा ॥
कुछ वर्ष पहले इसी ने नाटक रचाया प्यार का।
बस एक कुनबा हो गया था ग्रास फिर तलवार का ॥

स्वयं के घर में आज से तुझको कभी सोना नहीं।
घर बदल रहना तुझे यहां निराश भी होना नहीं ॥
सांझ के ढलने पर तीनों तीन घरों में बंट गये।
चांदनी के चार दिन तो तब सहज में ही कट गये ॥

बिन बताये पांचवें दिन वे कहीं जाकर सो गये।
रात आधी बीती थी वहां दंग सारे हो गये ॥
चुपचाप टुकड़ा चांद का ऊपर गगन में चल रहा।
धूं धूं करके इसी धरा का एक घर था जल रहा ॥

कोई भी रोया नहीं था कोई भी चीखा नहीं।
किसने किया है राख यह कोई वहां दीखा नहीं ॥
जो जानते वो ही हुआ भीगा सभी का नैन था।
खुद मौत धोखा खा गई सबको यही बस चैन था ॥

बुजुर्गों ने बैठकर अब तत्काल ही निर्णय लिया।
अरे पन्ना की रक्षा करो सभी ने समझा दिया ॥
संकेत पाकर खेत से एक भैंसा खोल लाया।
पास में जो कुछ बचा था बांध कर उसको रखाया ॥

विदा लेकर के सभी से चल दिया कर जोड़कर।
भारी मन से बढ़ गया वह अपने मन को मोड़कर ॥
तब व्योम बिल्कुल स्वच्छ था पर नयन नीरद छा गये।
भोर में देखा तो जाना बहुत दूर हैं आ गये ॥

चलते चलते वे थके अब लेना उन्हें विश्राम था।
चलना ही बस काम था उनका या प्रभु का नाम था ॥
सामान भैंसे ने गिराया पीठ से तत्काल टूटा।
घने जंगल में न जाने वह किधर को भाग छूटा ॥

ढूंढ़ते तीनों रहे पर वे उसे ना ढूंढ़ पाये ।
जो लिखा है कर्म में तो कौन उसको आ मिटाये ।।
अब आदमी देता नहीं जब आदमी का साथ है ।
तो फिर भला कैसे करें हम जानवर की बात है ।।

ढोते हुए सामान को परिवार वह बढ़ता रहा ।
उनके चिन्ह बनते पांव के सूर्य बस पढ़ता रहा ।।
हम कहां पर जा रहे वहां पूछती तुलसां पति से ।
धरो तुलसां धैर्य तुम मैं सोचता अपनी मति से ।।

ग्राम कुछ ही देर में अभी थांवला इक आयेगा ।
पुण्य जागे तो ठिकाना वहीं हमें मिल जायेगा ।।
पिताजी के साथ कई बार यहाँ आना हुआ है ।
श्रीमान् डूंगरवाल जी के घर मेरा जाना हुआ है ।।

नाम जोरावर है उनका कहते डूंगरवाल है ।
कहते थे सबको मित्र मेरा गिरिधारी लाल है ।।
अपनी कहानी सुन के वे दया मन में लायेंगे ।
चाहा यदि भगवान ने आगे नहीं हम जायेंगे ।।

संध्या होते होते तीनों थांवला में आ गये ।
श्री डूंगरवाल जी को घर के ही ऊपर पा गये ।।
कथा अपनी कह सुनाई सुन के वे रोने लगे ।
प्रभु सब अच्छा करेगा कह हाथ वे धोने लगे ।।

हाथ धोलो पांव धोलो तुम फिर सभी भोजन करो ।
अपना इसे घर मानकर चाहो जहां घूमो फिरो ।।
सुबह के भूखे वहां तीनों अब उन्हें रोटी मिली ।
झौंपड़ी जब जल गई आज रहने को कोठी मिली ।।

सोये तीनों चैन से पुनः धन्य ईश्वर को किया ।
नित भोगता है आदमी वो कर्म जो उसने किया ।।
दुःख उठाकर यहां चले सुख की शरण में आ गये ।
चलते बैठते लक्ष्य को अपने [illegible] में पा गये ।।

जो मिलेगा प्रेम से मिल बांटकर यहां खायेंगे।
धर्म के पथ पर चलेंगे नित गुण प्रभु का गायेंगे॥

वहाँ रहने को घर मिल गया मिला कर को काम था।
श्री बालूराम जी को मिला हर तरह आराम था॥

दौड़ भाग जाती रही, करते मिल कर काम।
खेल सभी है कर्म का, कष्टों में आराम॥

चतुर्थ सर्ग

पथ मन भावन

मंगलाचरण

वन्दना भगवान के चरणों में अर्पित है मेरी।
धरती व अम्बर में ज्योति प्रभो ! समाई है तेरी।।

तुम बिन्दु हो तुम सिन्धु हो तुम भक्त के भगवान हो।
मोती भी तुम आभा भी तुम, तुम हृदय का ज्ञान हो।।
कृपा हो तो आये क्यों रैन वसुधा पर अन्धेरी।
वन्दना भगवान के चर में अर्पित है मेरी।।

तप त्याग करके आत्मा जो यहाँ हर पल जगाये।
वही तुम को पा सका जो भावना पावन बनाये।।
नित्य मेरी आत्मा प्रभु आपके चरणों की चेरी।
वन्दना भगवान के चरणों में अर्पित है मेरी।।

नाम तेरा सुमिर ले तो तिमिर फिर रहता नहीं है।
तू तो जाने सब मेरी मन और को कहता नहीं है।।
मुझे स्वामी दर्श दे दो कर रहे क्यों आप देरी।
वन्दना भगवान के चरणों में अर्पित है मेरी।।

आपका गुणगान करके पापी अनेकों तर गये।
नाम प्रभुवर का जपा तो खाली खजाने भर गये।।
रात भी रोशन तुम्हीं से भोर होती नित उजेरी।
वन्दना भगवान के चरणों में अर्पित है मेरी।।

विश्व का कल्याण करने राम ने वनवास पाया।
मोह उनको वन गमन से अवध का ना रोक पाया।।
नियति जो कुछ भी करे वो स्वीकार करना चाहिए।
सदा सेतु वनाकर सिन्धु को पार करना चाहिए।।

जलधि में डुबकी लगाये नर वह मोती को पाता ।
डूबता है सूर्य तो वह फिर नई सुबह को लाता ।।
घर गाँव क्या कुछ को यहाँ पर देश से जाना पड़ा ?
त्याग होने पर ही होता मनुज इस जग में बड़ा ।।

कपिलवस्तु त्याग करके सिद्धार्थ हो गये बुद्ध थे ।
त्याग कुन्डनपुर प्रभो महावीर हो गये शुद्ध थे ।।
कृष्ण पानी की सजा जब तिलक ने हँसकर उठाई ।
'गीता रहस्य' पुस्तक वह विश्व के निज हाथ आई ।।

अफ्रीका जा वह मोहन बन गया था महा गांधी ।
तख्त उनसे उड़ गये कुछ बन गये जब महा आन्धी ।।
चुपचाप नेताजी गये थे छोड़कर निज देश को ।
विश्व को अचरज हुआ था तब देख उनके वेश को ।।

यह जर्जरित जब देह होती आत्मा जग जाता है ।
आता जिधर से तत्व यह पुनः उसी मग आता है ।।
पहुँच कर के थांवला बालूरामजी खुश थे बड़े ।
कुछ ही दिनों में हो गये फिर पांव पर अपने खड़े ।।

वहाँ डूंगरवालजी का स्नेह अद्‌भुत मिल रहा था ।
नये संगी पा के पन्ना मन सुमन सा खिल रहा था ।।
वह सुवह घर से निकल जाता लौटता फिर शाम को ।
मगर अब चिन्ता तनिक भी नहीं थी वालूराम को ।।

घर से थोड़ी दूर पर एक उपाश्रय था मनोहर ।
ग्राम के वालक वहाँ पर खेलते थे मगन होकर ।।
पन्ना का मन वालकों के साथ में वहां रम गया ।
ऐसा लगता समय आ इसी थाँवला में थम गया ।।

उन्नीस सौ छप्पन का विक्रम नया सन्देशा लाया ।
मोतीलाल जी महाराज ने मुसका कर यह वताया ।।
सुखे समाधे ग्राम थाँवला के अन्दर हम आयेंगे ।
धर्म-ध्यान से चातुर्मास का समय वहीं वितायेंगे ।।

वे ना आये उनसे पहले फैल गई सौरभ उनकी ।
त्याग, तपस्या, यश को गाया लोग कहें हरपल जिनकी ।।
स्थानक में आये उस दिन से खुशी सभी में थी भारी ।
सुनने को उपदेश हमेशा आते थे नर अरु नारी ।।

मुनिवर के आने से बच्चे खेल वहां ना पाते थे ।
धर्म ध्यान की शिक्षा हेतु मुनिवर नित्य बुलाते थे ।।
वालूराम ने एक दिवस मन ही मन विचार बनाया ।
जोरावरमलजी को उनने हृदय का भाव बताया ।।

क्या सेठजी महामुनि के हम भी दर्शन पा सकते ?
उनकी अमृत वाणी को हम भी सुनने जा सकते ।।
'यह नेकी और पूछ-पूछ' कल चलना मेरे साथ ।
अरे ! सन्त सभी के ही होते यह कहते मुनि श्री बात ।।

यह सौभाग्य ग्राम का है कि ज्ञानी मुनि पधारे हैं ।
उनके दर्शन का होना अनुपम पुण्य हमारे हैं ।।
उनकी वाणी सुनकर के तू भाई हरसागेगा ।
चला गया यदि एक बार, बार बार फिर जागेगा ।।

दर्शन करने की इच्छा ही मन में भाव जगाती थी ।
नयन बन्द कर, सोया लेकिन नींद उसे ना आती थी ।।
हुआ सवेरा स्नान किया तैयार हुआ फिर जाने को ।
भेजा सुबह सेठजी ने ही बालक [illegible] ।।

पास मुनिवर के जाकर के अब [illegible] ।
स्नेही डूंगरवाल जी ने उनका [illegible] ।।
आशीर्वाद दिया मुनिवर ने [illegible] ।
जो ना सुने धर्म वाणी [illegible]

जब जागे हम तभी [illegible]
वाणी प्रभु की [illegible]
उस दिन का [illegible]
अब तो नित [illegible]

तुलसां और पन्ना को भी जाकर सदन यह वतलाया।
कल से हम भी साथ चलेंगे मन दोनों का ह्री आया॥
श्रद्धा से जाकर तीनों ही अपना शीश झुकाते हैं।
ज्ञान भरी वाणी सुनकर के अन्तर भाव जगाते हैं॥

वे नियमित मुनिवर की वाणी सुन फूले नहीं समाते थे।
वे सवसे पहले जाते पर सवसे पीछे आते थे॥
घर जाने की वात करो तो पन्ना विदक विदक जाता।
महामुनि का दिव्य रूप प्रतिपल पन्ना को अव सुहाता॥

ज्ञान भरी बातें सव जन को मुनिवर मोती सिखलाते।
बड़े प्रेम से बच्चे व वूढ़े पास मुनिवर के आते॥
कभी कहानी कहते कहते तत्व ज्ञान वतला देते।
धर्म क्रिया कैसे करनी है शनैः शनैः सिखला देते॥

स्मरण करवा के णमोकार को 'तिक्खुतो' भी सिखा दिया।
सहज भाव से सामायिक का लाभ उन्हें तो वता दिया॥
मुनिवर जैसे वतलाते थे सवने ही वैसा वोला।
लगने लगा पन्ना को प्यारा महामुनि का वह चोला॥

सामायिक की मिली प्रेरणा सुन वच्चे आगे आये।
सामायिक करने हेतु सभी ने आसन वहाँ विछाये॥
वांध मुखपत्ति मुख के ऊपर वैठ गये सव आसन पर।
सवके कान लगे सुनने को धर्म युक्त नित भाषण पर॥

अपने सभी साथियों को सामायिक में वैठा पाया।
पन्ना उल्टे पांव दौड़ कर सीधा अपने घर आया॥
एक वनाई वहां मुंहपत्ति श्वेत वसन तन पर धारा।
सामायिक में वैठा पन्ना लगा सभी को तव प्यारा॥

अद्‌भुत रूप देख पन्ना का अचरज सवको था भारी।
देखो देखो पन्ना की यह सूरत है कितनी प्यारी॥
वर्ण गेंहुआ, वदन गठीला अद्‌भुत है इसकी काया।
दीप्त नयन वाला यह पन्ना सवके ही मन को भाया॥

साथी बोले पन्ना तूने यह क्या रूप बनाया है।
सचमुच तुझ में साधु जी का सारा रूप समाया है।।
श्वेत वसन वह मुंहपत्ति से लगते हो तुम संत सयाने।
ओघा हाथ में हो तो लोग तुम्हें गुरुजी ही माने।।

अच्छा लगता हूँ तो मैं पास गुरुजी के जाता हूँ।
रूप मुझे भी प्यारा लगता जाकर अभी बताता हूँ।।
कर जोड़कर के पन्ना ने महामुनि को शीश झुकाया।
यह वेश मुझे कैसा लगता यही जानने मैं आया।।

यह वेश बहुत ही उत्तम है कहो मुझे क्या बात हुई।
श्वेत वसन से तेरी काया लगती सचमुच नई नई।।
साधु जैसा वेश देख तेरा भ्रम साधु का होता है।
तेरे मन की बात बता दे बोल मौन क्यों होता है।।

मैं मुंहपत्ति को बांध यहाँ पर क्या साधु हो जाऊँगा।
वसन बदलकर मुनि जैसा ही क्या मैं भी बन जाऊँगा।।
पांवों से लेकर सिर तक ध्यान से मुनिवर ने देखा।
पुण्यवान है बालक तो बोल रही मस्तक रेखा।।

अरे! पुत्र बोल तेरे मन में भाव यह कैसे आया ?
पहली बार ध्यान से देखा तू मेरे मन को भाया।।
क्या सचमुच यहाँ तेरे मन में साधु रूप समाया है।
साधु स्वरूप बना करके जो प्रश्न पूछने आया है।।

मौन रहा पन्ना उस क्षण वह तनिक देर तक ना बोला।
प्रश्न किया ऐसे ही मैंने उसने अपना मुख खोला।।
रजोहरण, मुंहपत्ति के संग श्वेत वसन मुझको भाते।
बहुत बुरा लगता मुझको तन से इनको यहां हटाते।।

आप जैसा ही साधु बनकर आगे कदम बढ़ाऊँगा।
गुरुवर शरण चरण में दे दो नहीं कहीं मैं जाऊँगा।।
अगर भावना है तेरी तो अविरल ज्ञानाभ्यास करो।
मन की इच्छा पूरी होगी अपने पर विश्वास करो।।

माता-पिता के संग में आकर वह गुरु की वाणी सुनता है।
वाणी के बिखरे सुमनों को अन्तर मन से चुनता है।।
ज्ञान दान मोती से पाकर पन्ना हर्ष विभोर हुआ।
जैसे चांद देखकर भू का प्रमुदित यहाँ चकोर हुआ।।

सुबह, शाम, दोपहर गुरु की सेवा में बैठा रहता।
मन में बात उठे कोई तो श्रद्धा से उसको कहता।।
जिज्ञासा जो भी होती वह मुनिवर से पूरी करता।
पन्ना ज्ञान मोती से अपने खाली कोष को नित भरता।।

गुरुवर बने ज्ञान की बगिया पन्ना भ्रमर बना प्यासा।
ज्ञान सूर्य को देख कर, हटने लग गया नैन कुंहासा।।
मुनिवर की वाणी सुनने को वह मन चातक हो जाता।
स्वाति बूंदें समझ के उसका कर्ण सीप-सा खुल जाता।।

मोती के मुख से हर पल झरते रहते थे मोती।
चुन चुन कर मोती को जनता अपनी सुध बुध भी खोती।।
मान सरोवर के मोती को पन्ना हंस बना चुनता।
एक नया संसार देखने सपनों की चादर बुनता।।

वर्षावास के चार मास तो पलक झपकते ही बीते।
लोग सोचते इतना पाया फिर भी रीते के रीते।।
आ गई विदाई की घड़ियां गुरुदेव नहीं रुकने पाये।
बहते झरने के जल से ये कहां किधर को अब जाये।।

मन नहीं विदाई देने का पर चलता अपना जोर नहीं।
मुनिवर को अब ठहराने का बने बहाना और नहीं।।
ठान लिया मन में जाने का ठहर नहीं ये पायेंगे।
पन्ना कहते हम तो भैया मुनिवर के संग जायेंगे।।

हठ पकड़ लिया पन्ना ने अब तात मात को मना लिया।
मुनिवर मैंने अपना निश्चय आज आपको सुना दिया।।
ले चलने की हां न करी तो आप नहीं जा पायेंगे।
जाने के अरमान आपके सभी धरे रह जायेंगे।।

देख बाल हठ बालू तुलसां बोले मुनिवर हां करदो।
पन्ना ना रुकने वाला है आप अभी से हां भरदो।।
आप सभी की यही भावना है तो हम ले जायेंगे।
ज्ञान की घूंटी और पिला इस मरकत को चमकायेंगे।।

आई आखिर घड़ी विदा की सबको मंगल पाठ दिया।
पन्ना को लेकर मोती ने ग्राम थांवला छोड़ दिया।।
मुनिवर मोती के पीछे अब पन्ना पैदल चलता है।
पैदल चलने में पन्ना को अद्भुत ही सुख मिलता है।।

प्रतिभापुञ्ज पन्ना प्यारा अहा! अनुपम स्मरणशक्ति थी।
श्रद्धा थी गुरु के चरणों में अद्भुत उनमें भक्ति थी।।
जो भी उन्हें सिखाया जाता याद सभी कर लेते थे।
पुनः सोने से पहले ही सारा दोहरा देते थे।।

ग्यारह वर्ष उम्र थी लेकिन तत्व ज्ञान को जान गये।
सन्त बना तो नाम करेगा महामुनि वहां मान गये।।
पन्ना के यश की सौरभ अब दूर दूर तक फैल रही।
पन्ना पन्ना हो रहा है सबने ही यह वात कही।।

पन्ना पर आई चमक पा मोती का साथ।
हृदय शूल होने लगा जब देखी यह बात।।
अलग इसे कैसे करें, लगे सोचने लोग।
पन्ना के सिर पर चढ़ा, गुरु ज्ञान का रोग।।

इक ढूंढो तो सौ मिलें, दुष्ट लोग जग मांय।
करें छेद उस थाल में, जिसके अन्दर खांय।।
समय देख कुछ ने कहा, रखना प्रभुजी टेक।
वह साधु हो जायेगा, नैन खोल तू देख।।

पन्ना जैसा सुत मिला, दिया उसी को त्याग।
हमको लगता चढ़ गया, मन उसके वैराग।।
अव भी कुछ विगड़ा नहीं, मान हमारी वात।
ले आ पन्ना को अभी, पकड़ यहाँ तू हाथ।।

जिनके बल तू नाचता, वे श्री डूंगरवाल।
बना रहे निज धर्म की, वे तो पग पग पाल॥
पुत्र गया तेरा गया, बढ़ा उन्हीं का पंथ।
भुरकी डाली ले गये, तेरे सुत को सन्त॥

भाई सच तुमने कहा, मैं भोला नादान।
मैंने ही भेजा उसे, अब आया है ज्ञान॥
तुलसां भी रहने लगी, उसके बिना उदास।
मेरा पन्ना किस तरह, होगा उनके पास॥

सचमुच डूंगरवाल जी, बनिये पूरे घाघ।
मीठे बन कहते मुझे, बालू तेरे भाग॥
मोती से पन्ना मिला, यमुना से ज्यों गंग।
जिन शासन में आयेगा, अद्भुत इनसे रंग॥

ऐसा अब होगा नहीं, जाऊंगा मैं आज।
चाहे डूंगरवाल जी, हों मुझ पर नाराज॥
देर करो इसमें नहीं, 'शुभस्य शीघ्रम्' ठीक।
मुनिवर मोतीलाल जी, अभी गये नजदीक॥

पता किया मालुम हुआ, मुनि पहुँचे केकीन।
वे बोले जा जा अरे, नहीं गये हैं चीन॥
मोह तुझे सुत से नहीं, कैसा निष्ठुर बाप।
नये जन्म में पायेगा, बेटे का तू शाप॥

ऐसा मत मुझको कहो, जाऊंगा केकीन।
पन्ना को ले आऊंगा, मैं मोती से छीन॥

अविलम्ब बालूराम आये पास डूंगरवाल के।
आज सामने आने लगे हैं सब नतीजे चाल के॥
बहका मेरे पुत्र को भिजवा दिया था आपने।
भ्रमित होगा पुत्र मेरा अब मैं लगा हूँ कांपने॥

आपके हृदय में जो है वह जानने मैं लग गया।
अब बिल्कुल नहीं हूं नींद में समझलो मैं जग गया ॥
मेरे प्यारे पुत्र को तुम चाहते साधु बनाना।
परन्तु आता मुझे अभी गये को वापिस बुलाना ॥

पन्ना तेरा पुत्र है बात यह मैं जानता हूँ।
संस्कारी सुत तेरा यह भी मन से मानता हूँ ॥
भावना उसकी प्रबल पर तू यदि नहीं चाहेगा।
पन्ना गुरुवर पास में रह कभी ना पायेगा ॥

तेरी इच्छा है तो तू जा उसे ला सकता है।
आज जाकर के यहां से लौट कल आ सकता है ॥
अरे! नारदों की फूंक ने असर लगता कर दिया।
पुत्र लौटा लाने को केकीन बालू चल दिया ॥

पहुंच वहां देखा कि पन्ना पुस्तकों को पढ़ रहा है।
वैराग्य भाव मन के अन्दर सत्य में ही बढ़ रहा है ॥
तब गुरुदेव उस पल श्रावकों को दे रहे व्याख्यान थे।
अविरल ध्यान से सब सुन रहे उनके कहे आख्यान थे ॥

हाथ थाम पन्ना का बालू बोला उठ बेटे मेरे।
यहां साधुओं के साथ रहने के नहीं दिन हैं तेरे ॥
यह क्या बापू कह रहे हो अब मैं कहीं ना जाऊंगा ?
सत्य आपका अब साथ जग में मैं नहीं दे पाऊंगा ॥

भुरकी तुझ पर डाल दी मुझे यह लग रहा है आज तो।
डर मुझे बिल्कुल नहीं है कोई हो भले नाराज तो ॥
अब चलना होगा साथ मेरे वरना पीटूंगा अभी।
अब तक याद जो तूने किया वह भूल जायेगा सभी ॥

हाथ पन्ना ने छुड़ाया लगा झटका जोर का।
पग फिसले सीढियों से ध्यान नहीं उस ओर का ॥
सीढ़ियों से फिसल पन्ना चौक में जाकर पड़ा।
खून से लथपथ हुआ पर हो गया फिर से खड़ा ॥

वहां लोग आये दौड़कर के पूछा भाई कौन हो ?
घाव सिर पर हो गया पर तुम तो पन्ना मौन हो ।।
नाम बालूराम मेरा लेने मैं पन्ना को आया ।
कह रहा चलने की लेकिन यही बहस पर उतर आया ।।

आवेश में पन्ना यह बोला घर मुझे ना जाना है ।
गुरुदेव के श्री चरण मैंने अपना ही घर माना है ।।
नित इन चरण की शरण में ही मेरा जीना मरना है ।
सत्य धर्म की आराधना कर उम्र पूरी करना है ।।

एक बोला पुत्र तेरा पशु नहीं है बन्धु मेरे ।
पशु को भी इस तरह से घाव कभी देते नहीं रे ।।
प्यार से दुलार करके समझा इसे ले जाओ तुम ।
गुरुदेव बाधक न बनेंगे यह तुझे कहते हैं हम ।।

पन्ना बोला प्राण दूं पर लौटना नहीं हाथ है ।
प्राण के आधार गुरुवर अब यही मेरे नाथ हैं ।।
लौटना वश में नहीं है अब पिताजी लौट जाओ ।
कायर नहीं सुत आपका आप मन में समझ जाओ ।।

जब क्रोध शीतल हो गया तो पिता अब पछता रहा ।
कर्म में इसके यही तो मैं बीच में क्यों आ रहा ।।
थामे गुरुवर के चरण बोला क्षमा का प्रार्थी हूं ।
क्षमा करना आप मुझको नादान मैं विद्यार्थी हूं ।।

कुछ लोग बोले है तुम्हें स्वीकार तो लिख दीजिए ।
धर्म की सेवा का शुभ अवसर यहां पर लीजिए ।।
लोगों ने लिखकर सुनाया जब अनुमति का पत्र था ।
संकेत बालू ने दिया तो हर्ष अब सर्वत्र था ।।

अनुमति संयम की पाकर पन्ना अति हर्षा रहा था ।
मधुमास की ऋतु में गगन सुमन को वर्षा रहा था ।।
खुशियाँ सबमें ही समाई चर्चा घर घर हो रही ।
अनुमति यहां मिल गई तो यह देर क्यों कर हो रही ।।

हमें लाभ दीक्षा का मिले मौका गुरुजी दीजिए।
उपकार हम पर आपका है और यह भी कीजिए।।
वक्त आया है नहीं जब आयेगा तो पाओगे।
मोती को पन्ना मिला है गुण हमेशा गाओगे।।

आज पिता के व्यवहार की चर्चा घरंघर हो रही।
भावनाएँ मोती की माला में पन्ना पो रही ?
विहार करते मुनि श्री जी आनन्दपुर कालू गये।
वहां मुनि श्री के दर्शनों को पुनः श्री वालू गये।।

वहां भी चर्चा चली तो सब लोग अचरज में पड़े।
लो उसी वालक को अपने समक्ष हम पाते खड़े।।
तब श्री चन्दनमल जी ने भी कहा सीताराम को।
गुरुदेव से विनती करें तो सौंप दें शुभ काम को।।

श्रद्धा के संग आग्रह भी मान गुरुवर लीजिए।
दीक्षा का सौभाग्य तो इस ग्राम को ही दीजिए।।
उस पाटनी परिवार का जब आग्रह देखा बड़ा।
कहना मोतीलाल जी को मानना उनका पड़ा।।

स्वीकृति पाने के खातिर इक पाँव से चन्दन खड़ा।
भगवान को भी भक्त हेतु आना है भू पर [illegible]।।
मुस्करा कर मुनि श्री ने दीक्षा का शुभ दिन [illegible]।
उन्नीससौ सत्तावन विक्रमी का मास माघ [illegible]।।

शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि शनिवार का [illegible]।
संयम का शुभ दिन मुझे तो वरा [illegible]।।
धर्म की गंगा उतर कर आनन्दपुर [illegible]।
अब हर तरफ खुशियां लिए [illegible]।।

आनन्दपुर की वीथियां [illegible]।
लेकर पवन भी सुगन [illegible]
सन्देश शुभ उत्साह [illegible]
आते थे दौड़े [illegible]

वहाँ श्रावकों के आगे चल रही थी श्राविकाएं।
स्वर्ग को तज धरा पर ज्यों उतर आई अप्सराएं।।
सूर्य की किरणें भी लगता वे तपन वहाँ खो चुकी थीं।
तेज पा पन्ना का लगता वे शीतल हो चुकी थीं।।

विहंग कलरव कर रहे थे आनन्द के आनन्द में।
विटप में मर्मर ध्वनि थी ताल जैसे छन्द में।।
नित ढोल ताशे बज रहे वहाँ बज रही मृदंग थी।
जानकर पन्ना का निश्चय सारी जनता दंग थी।।

जब वेश भूषा राजसी पहने हुए पन्ना चला।
उसका चेहरा दमकता लगे सद्य ही सुमन खिला।।
अश्व पर पन्ना चढ़ा लगा कि नेमिनाथ जाते।
भाग्यशाली द्वार पर यूं चढ़े कोई अश्व आते।।

वट वृक्ष वहां विशाल स्वयं डालियाँ हिला रहा था।
हिला हिला मानो भुजाएं पास में बुला रहा था।।
सुन्दर चबूतरे पर मुनि वृन्द शोभा पा रहे थे।
मुनि मोती, पीरचन्द जी धर्म के गुण गा रहे थे।।

पन्ना बैठा घोड़ी पर जुलूस बना कर आ रहा।
कोई कोई नाचता कोई धर्म की जय गा रहा।।
पास पहुंच कर वृक्ष के पन्ना ने सिर को नवाया।
देने आशीर्वाद अब मोती ने कर को उठाया।।

महत्व दीक्षा का वहां परीचन्द जी ने बताया।
नहीं यह मग फूलों का चाहे वो ही चला आया।।
पंथ यह महावीर का कम सुमन ज्यादा शूल हैं।
यदि सहज समझे मनुज कोई यही उसकी भूल है।।

आज पन्ना त्याग वैभव धर्म के पथ पर चलेगा।
रोशनी देगा जहा को दीप बन ऐसा जलेगा।।
दो चरण इसके आज बढ़ने के लिए बेचैन हैं।
देर क्यों दीक्षा में मेरी कहते इसके नैन हैं।।

यह कहकर मुनि ने वहां, गाया स्तवन एक।
जय जय जय कहने लगे, सब पन्ना को देख।।

वन उपवन में कलियाँ महकी।
आज ग्राम की गलियाँ बहकी।।
अरे नई क्या बात हो रही ?
डाल-डाल पर चिड़ियाँ चहकी।।

दो चरण प्रफुल्लित होकर जग को छोड़ रहे हैं।
ये महावीर से सीधा रिश्ता जोड़ रहे हैं।।

पूजा की थाली में फिर नव दीप जलेंगे।
पावन चरण के साथ पावन चरण चलेंगे।।
छूकर इनको धन्य बनेंगे पथ सारे ही।
लोभ मोह के दैत्य इन्हें अब नहीं छलेंगे।।

सारे जग को जान लिया है।
सच का मग पहचान लिया है।।
आज देह के ऊपर धारण।
यहाँ धवल परिधान किया है।।

ये सभी जन्म के रिश्ते देखो तोड़ रहे हैं।
ये महावीर से सीधा रिश्ता जोड़ रहे हैं।।

यह दिन आया आज सभी का भाग्य जगा है।
अंधकार हरने वाला आदित्य उगा है।।
अपनी किरण से यह जगत का तमस हरेगा।
देख के साहस मुझे यह आभास लगा है।।

अब सारा पथ है काँटों का।
है शोर कभी सन्नाटों का।।
कभी थपेड़े गर्म लुओं के।
अरु शीत लहर के चाँटों का।।

ये आज सत्य के पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।
ये महावीर से सीधा रिश्ता जोड़ रहे हैं॥

यहाँ अन्तर में शब्द हमारे धर लेना।
अरे! जिन शासन को और भी रोशन कर देना॥
अब पास हमारे देने को कुछ शब्द नहीं हैं।
जग के शुष्क हृदय में भावामृत तुम भर देना॥

निश दिन तुम यह काम करोगे।
सुबह करोगे शाम करोगे॥
ज्ञान ज्योति से नित उजियाला।
शहर करोगे ग्राम करोगे॥

ये श्रद्धा से जन अपने कर को जोड़ रहे हैं।
ये महावीर से सीधा रिश्ता जोड़ रहे हैं॥

गीत सुना तो गद्‌गद् सब नर नारी थे।
देख-देख पन्ना को सब वलिहारी थे॥
हाथ जोड़ पन्ना ने अब शीश झुकाया।
कई गुना कर दूंगा जो गुरु से पाया॥

लोहे की लकीर यह तुम मन में जानो।
क्षण भंगुर शरीर आप भी पहचानो॥
पाकर गुरु संकेत गया एकान्त में।
गूंजा जय जय नाद पूरे ही प्रान्त में॥

एक एक कर त्याग दिये सभी वस्त्र थे।
सत्य, अहिंसा, दया धर्म वने शस्त्र थे॥
स्वर्णाभूषण सारे उन ने छोड़ दिये।
मन के अश्व त्याग के पथ पर मोड़ दिये॥

श्वेत वसन को पहन सामने जब आये।
वालों को उतरा कर भी वह मुसकाये॥
जन सागर उत्सुक हो जय जय कार करे।
निर्भय है बालक यह सभी विचार करे॥

पन्नालाल मुनि पन्नालाल वन गये तभी ।
अब जय जय करने लगे वहाँ पर लोग सभी ॥
अद्‌भुत था वह दृश्य धन्य थी वे तो घड़ियाँ ।
मोती से जुड़ गई पन्ना की वहाँ कड़ियाँ ॥

मुनि बनकर पन्नालाल मोद में इठलाते ।
गुरु का पुण्य प्रताप प्रभु का गुण गाते ॥
नित धर्म कर्म के साथ ज्ञान को पाते थे ।
वे गुरु के पीछे-पीछे चरण वढ़ाते थे ॥

मुनि छोटी वय के मगर ज्ञान गुण धारी थे ।
वे थे करुणा के सिन्धु सदा उपकारी थे ॥
जो भी आता पास शीश को वहाँ झुकाता ।
धन्य आपके पितु धन्य है आपकी माता ॥

नव दीक्षित पन्ना लिए, निकल गये मुनिराज ।
पहुँचाने उनको चला, सारा नगर समाज ॥
खुशियाँ थी सबके हृदय, मुख ऊपर मुसकान ।
आदिनाथ के पंथ की, पन्ना हो पहचान ॥

रजो हरण कंधे धरा, कर में लेकर पात्र ।
बना आज परिवार तो, उनका मानव मात्र ॥
चाहत पूरी हो गई, प्रभु ने सुनली बात ।
रैन अंधेरी अब कहाँ, आया नवल प्रभात ॥

कालू से चल लाम्बिया, आये मोती संग ।
बड़ी दीक्षा भी हो गई, देख देख सब दंग ॥
त्रयोदशी उस पक्ष की, शनिवार वही वार ।
'शशिकर' घर घर हो रहा, बंधु मंगलाचार ॥

पंचम सर्ग

महाप्राज्ञ : जग सौभाग्य

मंगलाचरण

अक्षर से लेकर शब्दों तक,
शब्दों से लेकर छन्दों तक।
छन्दों से लेकर बन्धों तक,
बन्धों से बने सम्बन्धों तक।
क्षण क्षण तुमको अर्पित है।
जीवन सदा समर्पित है॥

घर अश्वसेन के जन्म लिया,
मां वामा पर उपकार किया।
इस वसुधा को आनन्द दिया,
हर मन में परमानन्द किया।
वैभव किया विसर्जित है।
जीवन सदा समर्पित है॥

तुमने ही नाग बचाया था,
मुक्ति का मंत्र बताया था।
उपसर्ग आपने पाया था,
समता का भाव सिखाया था।
कैवल्य ज्ञान समर्जित है,
जीवन सदा समर्पित है॥

दुर्भाग्य आप से मिट जाते,
सौभाग्य आप से बढ़ जाते।

संकट सारे ही कट जाते,
दारिद्र्य हमेशा मिट जाते।
पाकर प्रभु को गर्वित है,
जीवन सदा समर्पित है॥

खिल रहा यहां आज पंकज पंक पर।
प्रभाव उसका आज राजा रंक पर॥

स्वप्न जो देखा था वह पूरा हुआ,
कामना का सतत यहाँ चूरा हुआ।
जल गया इक दीप अब विश्वास का,
लक्ष्य पाने फिर कोई शूरा हुआ।

लो नयन सबके ही टिके मयंक पर।
प्रभाव उसका आज राजा रंक पर॥

देख कर के शूल यहाँ डरता नहीं,
देख कर के फूल अरे हंसता नहीं।
अब इसे मधुवन से क्या लेना रहा,
मन में इसके तनिक परवशता नहीं॥

नित साधना की बैठ कर तरंग पर।
प्रभाव उसका आज राजा रंक पर॥

जिन्दगी को चलना हो रास आया,
दूर था अब तक वह निज पास आया।
क्या करेंगे आंधी अरु तूफान भी,
आत्मा ने जब बड़ा विश्वास पाया॥

ध्यान अब तो शब्द पर नहीं अंक पर।
प्रभाव उसका आज राजा रंक पर॥

दिख रहा कोई नहीं पर शैतान लगता जा चुका।
हाँ लगता कर्म निर्जरा का समय तेरा आ चुका।।
गज सुकुमार की कथा को शिष्य मेरा पढ़ चुका है।
अनगार खंधक राह पर शिष्य तू अब बढ़ चुका है।।

घबरा गया इतने में तू लक्ष्य तो अभी दूर है।
रख शिष्य मेरे हौंसला सच अरे तू शूर है।।
यह सहन शक्ति देखना नव रंग लेकर आयेगी।
ठोकरें ही एक दिन तुझे लक्ष्य तक ले जायेगी।।

तू वीर की संतान है यदि इस तरह घबरायेगा।
उपसर्ग का दरिया बता यहाँ पार कैसे पायेगा।।
जो चला कांटों के ऊपर चमन को वो पा सका है।
जो कूद लहरों में गया वह वीर मोती ला सका है।।

अनवरत धैर्य को धारण करो सुपंथ पर चलते रहो।
यदि युग को देना रोशनी तो मशाल बन जलते रहो।।
निकल मान और अपमान से दूर पन्ना आ गया।
गुरुदेव के उपदेश सुनकर वह वहां मुसका गया।।

कसौटी पर स्वर्ण को जब तक कसा नहीं जायेगा।
विशुद्धता का पता हमको किस तरह चल पायेगा।।
उपसर्ग सहकर के यहां जो साधना छोड़े नहीं।
विश्व में वे वीर हैं जो ले व्रत कभी तोड़े नहीं।।

आपने गुरुदेव मेरी बन्द आँखें खोल दी हैं।
जहर बनती जिन्दगी में अमिय बून्दें घोल दी हैं।।
वज्र की भी मार मुझको अब डिगा नहीं पायेगी।
चल पड़ी है जिन्दगी यहां नित्य चलती जायेगी।।

सानन्द चातुर्मास वह अजमेर का था हो गया।
साधना के महा सिन्धु में पन्ना मुनि भी खो गया।।
नित झोपड़ी से महल तक पांव पन्ना के चले थे।
हो गये वे ही उन्हीं के पास आकर जो मिले थे।।

अब विजय मुनि के संग में पन्ना परसते गांव को ।
सिर्फ चलना जिन्दगी विश्राम नहीं था पांव को ।।
हर ओर जय जय कार थी तव नया ही उल्लास था ।
मसूदा में तीसरा वहाँ उनका चातुर्मास था ।।

हुआ भीलवाड़ा शहर में चतुर्थ वर्षावास था ।
नगर किशनगढ़ में पाँचवां लाया नया उजास था ।।
वय छोटी होने से क्या ज्ञान में वे कम नहीं थे ।
शूल में होकर चले पर नैन उनके नम नहीं थे ।।

विजय का परचम थमाकर वे विजय मुनि भी खो गये ।
मुनि धूलचन्द जी से कहा-फिर अकेले हो गये ।।
मैं तुम्हारे साथ हूँ, अब ऐसा कभी मत बोलना ।
जिन्दगी है बहुत लम्बी पन्ना कभी मत डोलना ।।

फिर विचरते विचरते पुनः आये मुनि अजमेर में ।
स्वाध्याय उनका चल रहा था बस उसी के फेर में ।।
कुछ साधना का तेज था कुछ तपस्या का ओज था ।
उपाश्रय से निकल करके पन्ना चला इक रोज था ।।

सर्द की बहती हवाएं पर चमक भी थी सूर्य में ।
वे गुनगुनाते चल दिये थे गीत कुछ माधुर्य में ।।
हाथ में झोला लिए वे पात्र जल का धार कर ।
चले लूंगिया की ओर जाते शौच का विचार कर ।।

पहाड़ी की इक शिला पर बैठे हुए शैतान थे ।
वहाँ खोदते थे कब्र वे जाति से मुसलमान थे ।।
दो मनचले युवक उठे पन्ना के आगे आ गये ।
हम सोचते थे कुछ दिनों से आज तुझको पा गये ।।

जैन साधू जादू टोना करते यह हमने सुना ।
नहीं जाने देंगे तुमको चमत्कार देखे बिना ।।
ऐसा नहीं कुछ वन्धुओ यह भ्रम तुम्हारा छोड़दो ।
सुकर्म ही बस धर्म है अरे मन उसी में मोड़दो ।।

वे कब्र के ऊपर खड़े हो पीटते थे तालियाँ।
साधु कैसा है अरे तू देने लगे वे गालियाँ॥
बोलकर नवकार मंत्र पन्ना ने आंखें खोल दीं।
तुम हटो मेरे सामने से तेज वाणी बोल दी॥

नासमझ समझे नहीं पुनः मखोल करने लग गये।
अब वीरता के भाव पन्नालाल जी में जग गये॥
बोले किस पर यहां करुं अपनी शक्ति का प्रदर्शन।
अब दोष मेरा है नहीं यदि हो गया कुछ भी दफन॥

वे डर गये दोनों युवा संकेत औरों पर किया।
देखा मुनि ने उस तरफ औचक कार्य शक्ति ने किया॥
जो कब्र के बाहर खड़े थे कब्र में जाकर गिरे।
देख मुनि की महाशक्ति अब युवक वे दोनों डरे॥

कीजिए हमको क्षमा यह भूल हम से हो गई है।
बुद्धि है नादान जाने क्यों भ्रमित बन खो गई है॥
जैन मुनियों की परीक्षा तुम भूल कर लेना नहीं।
अपने सारे साथियों से जाके कह देना यही॥

साथी निकल कर कब्र से कर बद्ध होकर आ गये।
साधना की शक्ति को हम मुनिराज तुम से पा गये॥
लौटकर जँगल से पन्ना बातें गुरुवर से कही।
अतुलित शक्ति है नवकार में जानली मैंने सही॥

क्षमता देखी पन्ना की गुरुदेव अचरज में पड़े।
कर बद्ध पन्ना सामने उनके अभी तक थे खड़े॥
नवकार में शक्ति अनुपम कहना तुम्हारा ठीक है।
क्या साधना को इस तरह बेकार करना ठीक है॥

खुश हूँ तेरी साधना से इसको यूं खोना नहीं।
तेज अपना पहचान करके अहम् को ढोना नहीं॥
क्षमा मेरे को करें मैं ध्यान दूंगा साधना में।
मन मेरा डूबा रहेगा प्रभु की आराधना में॥

नित्य फैलता जाता चहुँ दिश पन्ना का प्रभाव था।
शहरों के संग दर्शनों की चाह रखता गांव था।।
वैरागी छीतरमल्ल जी के संग छोटे लाल थे।
पन्ना के वे साथ में सच दो चमकते प्रवाल थे।।

किशनगढ़ के श्री संघ ने भाव अपना जब जताया।
दीक्षा हुई सम्पन्न तो मोद सबने ही मनाया।।
श्री संघ हरमाड़ा ने विनती की जब वर्षावास की।
पन्ना मुनि ने पार कर दी नैया तब विश्वास की।।

नित्य रमल विद्या का वहां अभ्यास भी चलता रहा।
सतत श्रावकों को शास्त्रों का लाभ भी मिलता रहा।।
शास्त्रों के रहस्य अद्भुत उन्हें मिलते जा रहे थे।
दिव्य मंत्रों की शक्ति के भी सुमन खिलते जा रहे थे।।

यदि विवेक रखकर मंत्रों की साधना मानव करे।
बुरे दिन भी सत् साधना की शक्ति से वापिस फिरे।।
विद्या पा विवेक खोया तो जिन्दगी बेकार है।
उर्ध्वगामी होना ही तो सुसाधना का सार है।।

सम्पन्न चातुर्मास कर हर क्षेत्र में विचरण किया।
महावीर का सन्देश मुनि ने प्रेम से जग को दिया।।
अगला चातुर्मास पाया पादू रूपारेल ने।
मोहित किया पन्ना गुरू को श्रावकों के मेल ने।।

भीलवाड़ा जालिया के दो पूर्ण चातुर्मास कर।
पादू रूपारेल को अब मिला वर्षावास फिर।।
मुनि केशरीमल जी की शुभ सेवा पन्ना को मिली।
ज्ञान, सेवा, साधना से फिर हृदय की कलियाँ खिली।।

मसूदा के बाद उनका अजमेर में जाना हुआ।
किशनगढ़, भिणाय, पादू पुनः मसूदा आना हुआ।।
सभी स्थानों पर किये वे सानन्द वर्षावास थे।
त्याग व तप के साथ होते वहां कई उपवास थे।

मुनि केशरीमल जी किशनगढ़ में उन्हें थे तज गये।
पर साधना व आराधना में मुनि पन्ना मज गये।।
सान्निध्य सन्त धूलचन्द जी का उन्हें मिलने लगा।
अंतस में ज्योति पुञ्ज उनके सतत ही जलने लगा।।

वान्दनवाड़ा ग्राम में घोषित अब चातुर्मास था।
श्रावकों के हृदय में भी नित सतत हर्षोल्लास था।।
तभी प्लेग का प्रकोप महामारी बनकर छा गया।
लाखों मरे उस वर्ष में डर सब में ही समा गया।।

मच गया कोहराम घर गली गांव खाली हो रहे।
मृत्यु का ताण्डव मचा यही देख सारे रो रहे।।
मगर टाँटोटी अभी तक स्वयं पर इठला रहा था।
गुरुदेव छोटेलाल जी के गीत जन जन गा रहा था।।

मानव थोड़ा कुछ पा जाता, वह अपने पर है इठलाता।
अहम् भाव भी जग जाता है, ताकत अपनी दिखलाता है।।

मानव सोचे जो हो जाये।
मानवता सारी खो जाये।।

मुनि छोटेलाल जी बोल यह, वे इतराते जाते रह रह।
हर ओर प्लेग अब फैला है, मरघट लाशों का मेला है।।

रो रहा आज हर गाँव-गाँव।
पर इधर प्लेग का नहीं पांव।।

हर ओर मृत्यु की है छाया, पर इधर प्लेग ना आ पाया।
जा तेला दरगाह पर किया, मैंने सबको है बता दिया।।

जब तक जिन्दा यह बन्दा है।
तब तक न मौत का फन्दा है।।

सब मान रहे थे लोग यही, गुरुवर कहते हैं सही सही ।
पन्ना का आना हुआ वहाँ, दर्शन सेवा करना है यहाँ ।।

पन्ना को देखा मुनि बोले ।
मन के सब भाव छिपे खोले ।।

मैंने जीवन को साध लिया, मृत्यु को मैंने बाँध लिया ।
महामारी इधर ना आ सकती, वह भक्ष्य नहीं ले जा सकती ।।

मंत्रों से मैंने रोक दिया ।
सच मानो पन जी टोक दिया ।।

मुनि पन्नालाल जी मौन रहे, बड़े मुनि थे क्या उन्हें कहे ।
बोले आप महा उपकारी पर यह भी है महामारी ।।

नजदीक नहीं यह आई है ।
यह इसकी भलमनसाई है ।।

कल का न भरोसा करना है, पल का न भरोसा करना है ।
हाथ मौत का तो लम्बा है, यह मुझको रहा अचम्भा है ।।

कुछ दिन सेवा में साथ रहे ।
उनकी सुनी कुछ अपनी कहे ।।

समय हो गया मन में ताड़ा, लौट गये फिर वान्दनवाड़ा ।
मुनि यहाँ छोटमल मुसकाते, करे गर्व सीना फूलाते ।।

यह गर्व एक दिन झरता है ।
जन्म लिया वह तो मरता है ।।

हे मानव तू क्यों इतराता ?
जन्म लिया है जिसने जग में, निश्चित मौत धरा पर
यह दुनियाँ आनी जानी है, अपने पर तू क्यों ८०

युगों युगों से मानव जीवन, नीर बुलबुला है कहलाता।
क्षण भंगुर जीवन है तेरा, क्यों तू अपना जोम दिखाता॥
क्या ऋषि मुनि राजा राणा भी, काल बली से बच है पाता।
जीव तत्व काया से निकला, 'शशिकर' तन मरघट को जाता॥

मृत्यु यहाँ हर घर आती।
चलती फिरती देह एक दिन, साँस रुकी अरु थम जाती है।
स्नेह चूकता जब दीपक का, बाती खुद ही बुझ जाती है॥
जल होने पर झुकती बदरी, वरना तो पवन उड़ाती है।
ऐसा नहीं घर गांव कोई, जहाँ नहीं यह जाती है॥
महल मीनारें कांपे इससे, यह अपनी नजर उठाती है।
शास्त्र बताते सबको 'शशिकर', यह अपना राग सुनाती है॥

आदमी हारा अगर तो मौत से हारा।
इसको पाके लुढ़क जाता जिन्दगी का बढ़ता पारा।
देखते ही देखते छिटकता है गगन तारा॥
उठ नहीं पाया कभी भी मौत ने यहाँ जिसको मारा।
यह किधर से आयेगी पथ कौनसा इसको है प्यारा॥
आयेगी उस रास्ते से मन में उसने जो भी धारा।
जीत कब पाया मनुज है लड़के इससे मनुज हारा॥

रुग्ण थे मुनि धूलचन्द, करते नहीं विहार।
आस पास ही घूम कर, करते धर्म प्रचार॥
थोड़ा चलते बैठते, बढ़ जाती फिर सांस।
थोड़ा जीवन लग रहा, यह मेरा विश्वास॥

स्वास्थ्य नहीं कुछ ठीक है, यहीं विराजें आप।
लाभ धर्म का मिल रहा, जागा पुण्य प्रताप॥
शुद्ध भावना आपकी, शुद्ध मेरे हैं भाव।
लेकिन डगमग लग रही, मुझको जीवन नाव॥

टांटोटी में छोटमल, स्थविर बैठे सन्त।
बता रहे जिन धर्म का, सबको पावन पंथ॥

समय वर्षावास का अद्भुत वह,
उड़ते बादल व्योम में छा रहे।
झुण्ड बनकर के पखेरू भी अहा !
नभ में उड़ते हुएं लो जा रहे ।।

तृषित भूमि वारि पीकर आज तो,
महक सौंधी भू पर फैला रही।
वृक्ष की फुनगी के ऊपर बैठ,
चिड़िया अपनी चोंच सहला रही ।।

मुनि छोटमल थे साधना में रत,
गले पर गांठ सी होने लगी।
प्लेग का पहला प्रहार था यही,
देख जनता यह घबराने लगी ।।

लो शिकार पहला प्लेग को मिला,
सिलसिला यहां अचानक चल गया।
कोई भी घर न छोड़ा काल ने,
भक्ष्य मुनि हीरा का अब मिल गया ।।

निशदिन छोड़कर संसार को अब,
दस बीस लोग नित्य उठने लगे।
प्लेग के पंजे से जो बच गये,
तज कर के ग्राम वे भगने लगे ।।

मुनि पन्नालाल सब कुछ देखकर,
नित साधना के तेज में पलते।
सोचते जाते समय की नित गति,
वे देखते थे सूर्य को ढलते ।।

वह प्लेग भागा भक्ष्य ले अपना,
ग्राम वान्दनवाड़ा अब शान्त था।
पन्ना मुनि की साधना थी सदा,
अचरज करता देखकर प्रान्त था ।।

काल की घड़ियां निकलकर भागी,
मनुज सारे अब खुश हो नाचते।
दी विदाई मुनि पन्नालाल को,
महावर से कर घर घर राचते॥

विचरते मुनिवर बढ़े अब आगे,
पलकें बिछाते लोग आ जाते।
करते जय जय कार गुरु की वहां,
गुरु वन्दना के पद गुनगुनाते॥

प्रार्थना भिणाय वाले कर रहे,
अब हमें वर्षावास मिलना है।
छांव औरों को बहुत दी आपने,
धर्म का सुमन अब तो खिलना है॥

दिल दुखाना गुरु नहीं जानते,
विश्वास उनका ना जाने दिया।
विक्रम उन्नीस सौ पिचेतर का,
भिणाय वर्षावास मुनि ने किया॥

सानन्द वर्षावास कर आगे,
वे मुनिराज टाँटोटी पधारे।
चले गजमल गुरुजी जालिया से,
करते विचरण आये मुनि प्यारे॥

मेरा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है,
मुनि धूलचन्दजी आप देखना।
भावना मेरी कि यहां धारलूं,
मैं खुशी से अब तो संलेखना॥

अभय की वह मूर्ति गजमल गुरु थे,
संथारा हंसते हुए ले लिया।
फाल्गुन कृष्णा की तेरस निशि में,
देह अपना मृत्यु हाथों दे दिया॥

मौत का स्वागत मुनिवर ने किया,
सब के सब देखते ही रह गये।
पथ धर्म का ही सार जीवन का,
जाते जाते महा मुनि कह गये।।

क्रम आने का क्रम जाने का कैसा अद्‌भुत,
जो अच्छा लगता वो ही औचक छोड़ चला।
मन से मैंने चाहा हर पल रहूँ देखता,
अब वो ही देखो सम्बन्धों को तोड़ चला।।

निराश बना पन्ना हृदय में यह सोच रहा,
ज्ञान यह विज्ञान बन गया है सब ही कहते।
लेकिन मृत्यु पर विजय न मानव कर पाया,
वह आती टुकर टुकर सभी देखते रहते।।

लाखों वर्ष जीए होंगे ऋषि मुनि चाहे पर,
वे रोक न पाये यहां मौत को आने से।
पहरेदार बिठाये होंगे कितने ही पर,
बचा न पाये जीव मृत्यु के घर जाने से।।

ये शासक, वैज्ञानिक न जाने क्या चाहते,
जो निश्चित है उसके वारे में सोच रहे।
किन विधियों से मानव को अव मारा जाये,
ये सोच सोच कर अपने कुंतल नोच रहे।।

वारूद वनाई और मार लाखों डाले,
फिर भी इसको पलभर चैन नहीं मिलता है।
वारूद विछाकर किसको और जलायेगा,
मानव तो पहले ही ईर्ष्या से जलता है।।

जितना श्रम मृत्यु के खातिर तुमने किया था,
अरे जीवन के खातिर यदि यहां कर जाते।
वारूद वनाने वालों मैं सच कहता हूँ,
इस भू के मनुज पूजने तुमको लग जाते।।

विश्व युद्ध में लोग करोड़ों यहां मरे थे,
अग्नि तुमने व्योम में जाकर के वरसाई ।।
निर्दोषों के शोण से धरती रंग दी थी,
मानवता के भक्षक तुमको शर्म न आई ।।

जव तक यह विज्ञान धर्म से दूर रहेगा,
सच कभी धरा पर शान्ति नहीं हो पायेगी ।
जिसने भी वारूद विछाई धरती ऊपर,
मैं कहता हूँ मौत उसे पहले आयेगी ।।

वारूद वनाना वन्द करो भू के पुत्रों,
तुम जीवन का सामान वनाना शुरू करो ।
दानव वनने हेतु ज्ञान की अव ना जरूरत,
अरे इंसानों इंसान वनाना शुरू करो ।।

दार्शनिकों इस विश्व को तुम नये विचार दो ।
धरा को वैज्ञानिकों धर्म का आधार दो ।।
राजनेताओं इस भू को नव आकार दो ।
सन्तों अपनी भावना को पुनः विस्तार दो ।।

लेखकों तुम कलम से विश्व को उपहार दो ।
सत्य को कविगणों नव ओज से संस्कार दो ।।
डगमगाती नाव को नाविकों पतवार दो ।
आदमी हो आदमी को, आदमी सा प्यार दो ।।

मानस में चिन्तन चलता है ।
नवदीप ज्ञान का जलता है ।।

मन लगता नहीं लगाते हैं,
जाते को पास बुलाते हैं ।
सोया विश्वास जगाते हैं,
खोया उसको ही पाते हैं ।।
सुख चैन इसी से मिलता है ।
मानस में चिन्तन चलता है ।।

पोथियां पलटते जाते हैं,
वे पृष्ठ उलटते जाते हैं।
प्रश्नों का उत्तर पाते हैं,
फिर मधुर स्वरों में गाते हैं॥
सूरज उग उग कर ढलता है।
मानस में चिन्तन चलता है॥

चाहे कितने ही कष्ट मिले,
पृष्ठों के पीछे पृष्ठ खुले।
यहां उत्तर सभी स्पष्ट मिले,
अपने ही होकर स्पष्ट चले॥
शूलों में पाटल खिलता है।
मानस में चिन्तन चलता है॥

खुलती है गाँठें लगी हुई,
देह सोई बुद्धि जगी हुई।
आशा अन्तर में उगी हुई,
ये सांसें किसकी सगी हुई॥
मौसम में पादप फलता है।
मानस में चिन्तन चलता है॥

पावों में गति अनवरत, उनको नहीं विराम।
भोर शहर में हो रही, संध्या ढलती ग्राम॥

□□

षष्ठम् सर्ग

महामनस्वी : दिव्य तपस्वी

मंगलाचरण

जय तीर्थंकर जय महावीर।
जय वर्धमान जय महाधीर ।।

नाम आपका सबसे पावन,
मंत्राक्षर जैसा लगता है।
घट घट वासी हे अविनाशी,
मन में भाव सदा जगता है।
राग-द्वेष के महा विजेता,
नमन आपको यहां अतिवीर ।।

अनेकान्त का बोध कराकर,
क्षमा भाव जग को सिखलाया।
धर्म तीर्थ के दीप जलाकर,
केवल ज्ञान आपने पाया।
काया तपा बना ली कंचन,
इस अवनि की हर ली है पीर ।।

आदर्श आपके उच्च बने,
जग शोषण से मुक्त बना है।
मूक पशु को त्राण मिला यहाँ,
जीवन अमृत युक्त बना है।
महा तमस से छीना तुमने,
उजियाले को हे परमवीर ।।

त्रिशलानन्दन तव अभिनन्दन ,
कलुष निकंदन झुक झुक वंदन ।
अन्तर में है तेरा स्पन्दन ,
शत शत वन्दन शत शत वन्दन ।
पुनः हरो भव बाधा स्वामी ,
पीड़ित मनुज अब पाता पीर ।।

घर गली गाँव और नगर नगर में जली ज्योति आजादी की ।
हो गई कहानी पुनः शुरू उन अंग्रेजों की बरबादी की ।।
जिनवाणी के संग संग प्रभा जिस ग्राम नगर में जाते थे ।
भारत माँ की आजादी का वे हर पल अलख जगाते थे ।।

आजादी के दीवाने अब तो निकल पड़े बनकर टोली ।
यह अंग्रेजों के पास नहीं जो भेद सके उनकी गोली ।।
छोटे बड़े सभी नेता गण सत्याग्रह मुनिवर से पाते थे ।
वे प्राज्ञ मुनि के चरणों को छूकर के माथ लगाते थे ।।

व्यास श्री जयनारायण जी आ आकर शीश झुकाते थे ।
आशीर्वाद मुनि का लेकर दिव्य शक्ति को पाते थे ।।
कहते गुरुवर चरणों को छूने से संबल मिलता है ।
मेरी आंखों से अंग्रेजों का काला सूरज ढलता है ।।

गुरुवर कहते तुमने सोचा सच उसको अब होना होगा ।
अंग्रेज मात अब खायेंगे फिर याद उन्हें रोना होगा ।।
उपनिवेश अंग्रेजों के सब निकल हाथ से जायेंगे ।
लाल किले पर भारत माँ के लाल ध्वजा फहरायेंगे ।।

भौतिकता का महा समर अध्यात्म सिसकने पुनः लगा।
धरती की गोदी में पन्ना सूरज बनकर के यहां उगा।।
अभय भाव मन में भरकर वे हिंसा को दूर भगाते थे।
जाने से लोग जहाँ डरते उस ओर चले वे जाते थे।।

जिस पथ पर पन्ना मुनि चले पथ भाव युक्त हो जाते थे।
परसे हाथ उन चरणों को वे भय से मुक्त बन जाते थे।।
उन्हें देखकर क्रन्दन रुकता अभिशाप सभी वरदान बने।
प्रभु महावीर के शासन में, मुनि पन्ना नव पहचान बने।।

नित मुनि धूल जी के संग में मुनि पन्ना पाँव बढ़ाते हैं।
गुरुदेव जिधर भी निकल पड़े वे पीछे चलते जाते हैं।।
वेदनीय कर्म बढ़ जाने से श्रावक सभी घबराये हैं।
दो चातुर्मास मसूदा कर फिर आगे कदम बढ़ाये हैं।।

सुसज्जित सेना जहां रहे और तोपों का अभ्यास चले।
भण्डारों में नित्य गेहूँ से ज्यादा जहां बारूद मिले।।
वह नगर नसीराबाद छावनी जिसको लोग सभी कहते।
अंग्रेज विदेशी नायक बनकर आठ पहर जिसमें रहते।।

वे दिन थे जब भारत माता आहत होकर के रोती थी।
नित पुत्र सिसकते थे उसके वह नहीं चैन से सोती थी।।
गाँधी की आंधी उठी तभी यह भारत लगा डोलने था।
नाद लाठी और लंगोटी का हर घर लगा बोलने था।।

उस दुर्बल का महा मनोबल ही जन को जन से जोड़ रहा।
डूबे न सूर्य जिसका भू पर वह उसकी ताकत तोड़ रहा।।
खादी के वस्त्र पहन कर के कुछ लोग सभायें करते थे।
वे देशभक्त लाठी गोली से तनिक नहीं तब डरते थे।।

हर ओर विदेशी वस्तु का वहाँ बहिष्कार सब करते थे।
जय भारत माता की बोल बोल देश भक्त जब मरते थे।।
भेड़ों की भाँति लोगों को यहां जेलों में भर दिया गया।
जय जो भी बोले गांधी की वह जेलों में धर दिया गया।।

ऐसे कठिन दौर में ही संग गुरुवर के पन्ना आये ।
वे महावीर के महादूत सन्देश अहिंसा का लाये ।।
पावन्दी सभा करने पर यहां ध्यान किसी को रहा नहीं ।
व्याख्यान गुरु ने शुरू किया उनको भी किसी ने कहा नहीं ।।

अंग्रेज अश्व पर आ टपका पन्ना से पूछे प्रश्न कई ।
निर्भीक भाव से वोले तो जनता में आई शक्ति नई ।।
अंग्रेज देख कर चला गया सोचा सव ने फिर आयेगा ।
वन्दी यहां वनाने गुरु को सैनिक संग में लायेगा ।।

मुनिवर वोले भय कैसा है अपराध किसी ने किया नहीं ?
धर्म सभा में हम आये हैं कानून हाथ में लिया नहीं ।।
दिवस जैसे तैसे निकल गया निकल गई काली रैना ।
अंग्रेज वहुत चालाक कौम हमें संभल कर यहां रहना ।।

मुनिवर के पास वैठकर के कुछ लोग कर रहे थे वातें ।
वस तभी दिखाई दिये उन्हें सैनिक कुछ शस्त्र लिए आते ।।
कुछ लोग दौड़कर के आये पन्ना को सारी वात कही ।
ले हथकड़ियाँ सैनिक आते देखा है हमने सही सही ।।

हम सवको आशंका है वे पकड़ आपको ले जायेंगे ।
रोक उन्हें ना पाये तो सवको कैसे मुँह दिखलायेंगे ।।
गुरुवर वोले शान्त रहो क्यों भय को मन में पाला है ।
होगा वही जो होना यहां, होनी को किसने टाला है ।।

समय नहीं है गुरुदेव यूँ ना वातों में समय गंवाओ ।
वात हमारी मानों जल्दी अव और हमें मत तड़फाओ ।।
कारण जव कोई नहीं वना तो पुलिस हमें क्यों जकड़ेगी ।
महावीर के वन्दे हैं क्यों हथकड़ियां हमको पकड़ेगी ।।
यदि उन्हें मारना आता है तो मरना हमको आता है ।
मरकर भी नहीं त्यागते जग में सन्त सत्य से नाता है
वह पुलिस भटकती रही गली में न उसने जब प्रश्न किया
फिर भी कुछ लोगों ने उससे क्या ढूंढ रहे हो पूछ लिया

नायक बोला अपराधी था कैसे निकल हाथ से चला गया।
दुष्ट, कमबख्त हमारी इज्जत को आज धूल में मिला गया।।
कहाँ छुपेगा जाकर आंखों में धूल झोंक ना पायेगा।
अभी रेल्वे स्टेशन पर पूरा पता अवश्य लग जायेगा।।

तब बालचन्द जी पारख ने गुरुवर से आकर बात कही।
धन्य धन्य गुरुदेव आपको सब कही आपने सही सही।।
अटल आत्मबल देख आपका आशंकाएं निर्मूल हुई।
हमने क्या का क्या समझ लिया यह कैसी हमसे भूल हुई।।

ठक ठक ठक करते निकल गये तो सबके मन को चैन मिला।
चलो बीमारी चली गई मुर्झाया चेहरा पुनः खिला।।
वहां सदुपदेशों के द्वारा जन मन को नित्य जगाते थे।
मुनि पन्ना मन के कलुष भाव मानव के नित्य मिटाते थे।।

सुनकर के उनकी वाणी को वैराग्य भाव जग जाते थे।
कई लोग तो भावुक बनकर उनके पीछे लग जाते थे।।
चातुर्मासों की कड़ियों में जुड़ गई और फिर नव कड़ियाँ।
नित धन्य धन्य जग कहता था कर याद सुनहरी ने घड़ियाँ।।

वे धर्म, ध्यान, तप की नूतन मशाल जलाते जाते थे।
प्रभु महावीर की अमृत वाणी नित्य पिलाते जाते थे।।
निष्काम कर्म की बातें कहकर नर तन को चमकाते थे।
यहाँ कर्म कटे मुक्ति निश्चित है जन जन को समझाते थे।।

अन्तर का आलोड़न करके नवनीत नित्य प्रकटाते थे।
जीओ और जीने दो का सदा जय गुंजार लगाते थे।।
तप से कृश काया होती है मगर निर्जरा भी होती है।
पूर्व जन्म के अशुभ कर्म को तप से ही काया खोती है।।

पाप शान्त हो जाने पर जब शुभ कर्म उजागर होते हैं।
त्रिरत्न मनुज अपने मन में तब पल पल यहाँ संजोते हैं।।
जिसके भय भाव निकल जाते वह अभय सिखाता जाता है।
हिंसक के ऊपर भी वह तो नित दया दिखाता जाता है।।

जाति धर्म को तज कर के मुनिवर प्रचार अहिंसा का करते।
हिन्दू मुस्लिम जो भी मिलते वन्दन मुनि को आकर करते।।
ऊँच नीच के भेद भाव तो महावीर मिटाने आये थे।
जाति भेद की दीवारों को अतिवीर हटाने आये थे।।

यज्ञों में जीवों की बलि को वे बन्द कराने आये थे।
आत्मा पर विजय मिले कैसे वे यही बताने आये थे।।
प्रवचन सुन पन्ना मुनि के लोग भाव विभोर हो जाते थे।
कल जो अकेले ही आये आज साथ और को लाते थे।।

उनकी वाणी को सुनकर देवी, शंकर ने भी भाव जगाया।
वैराग्य भाव गुरु के चरणों में बैठ उन्होंने था पाया।।
अजमेर, भिणाय भीलवाड़ा जालिया और अजमेर गये।
गुलाबपुरा, भीलवाड़ा ब्यावर उनके चातुर्मास हुए।।

पुष्कर के बाद मसूदा का वह वर्षावास अनोखा था।
सामाजिक क्रान्ति कारी मुनि ने होती हिंसा को रोका था।।
जहाँ जहाँ मुनिवर जाते हिंसा की गलती दाल नहीं।
जो उनके चरण परस लेते हो जाते मालामाल वही।।

पदल मुनिवर विहार करे।
जनता में नूतन ज्ञान भरे।।
गाँधी के सच्चे अनुयायी।
सब जाने महादेव भाई।।

जो गुजराती देसाई थे।
देते सपूत दिखलाई थे।।
अजमेर नगर में जब आये।
मुनि पन्ना के दर्शन पाये।।

जन नेताओं का दर्द कहा।
हर एक दुःखी है यहाँ वहाँ।।
सबको अंग्रेज सताते हैं।
बोलो तो जेल भिजाते हैं।।

जब सारी जनता जागेगी।
अंग्रेज हुकूमत भागेगी ॥
भारत में गाँधी गांधी है।
हर ओर उसी की आँधी है ॥

नेता जब जब घबराता है।
गांधी ही उसे उठाता है ॥
वह सत्य अहिंसा धारक है।
लगता भारत का तारक है ॥

अंग्रेज पीसता दाँतों को।
पीटे अपनी ही लातों को ॥
मंजिल तो अब भी पास नहीं।
आजादी का विश्वास नहीं ॥

पन्ना बोले न अधीर बनो।
देसाई जी तुम वीर बनो ॥
यह टूट मनोबल ना जाये।
आजाद देश को करवाये ॥

जो सत्य, कभी ना हारेगा।
नेता भारत को तारेगा ॥
जब दही बिलोया जाता है।
तब मक्खन ऊपर आता है ॥

यदि थोड़ा कष्ट उठाओगे।
तो मंजिल को पा जाओगे ॥
हाँ आशीर्वाद हमारा है।
पर चलना काम तुम्हारा है ॥

संयम से सारे काम करो।
भारत का ऊँचा नाम करो ॥
संघर्ष चरम तक जायेगा।
तभी तिरंगा लहरायेगा ॥

हर्षित देसाई हृदय हुआ ।
नत मस्तक होकर चरण छुआ ।।
बिन दर्शन किये चला जाता ।
जीवन भर मैं तो पछताता ।।

जागृत मेरा अब पुण्य हुआ ।
दर्शन कर मैं तो धन्य हुआ ।।
जो केवल देता ही देता ।
वो ही तो है सच्चा नेता ।।

उस युग का तो सचमुच में था कर्त्तव्य परायण हर नेता ।
वक्त आने पर देश के हित वह अपने प्राण लुटा देता ।।
अपना जीवन देकर के यह आजादी जो नेता लाये ।
कितने हैं वे लोग जिन्होंने उनके गीत जगत में गाये ।।

एक नहीं यहाँ तीन तीन गांधी को हमने मारा है ।
आजादी के वाद देश का हर नेता अब हत्यारा है ।।
लाठी गोली खाने वाले सब दूर धकेले गये यहां ।
अपना जीवन देने वाले सिर आज पीटते गये कहां ।।

वे नेता भूखे प्यासे रह जेलों में जीवन खो बैठे ।
भारत को आजादी देकर वे दूर वक्त से हो बैठे ।।
कुकरमुत्ते से आज उगे हर गली गली में नेता हैं ।
सेवा के बदले जनता से जो वस लेता ही लेता है ।।

आज जाति भाषा प्रान्त धर्म की हालत दिन दिन खस्ता है ।
सब नेता की कारस्तानी जो देख देख यहां हंसता है ।।
ये नेता सब दुःशासन वनकर मां का आंचल फाड़ रहे ।
ओढ़ शेर की खाल भेड़िये यहां जहाँ तहां दहाड़ रहे ।।

जो सच्चे नेता थे वे तो अब आज सिसकियाँ लेते हैं
चोर, लुटेरे, डाकू, तस्कर हर ओर दिखाई दे
लोग सामने सम्मान करें कुछ जय जयकार ल।
चरित्रहीन इन नेताओं की पीछे हंसी उड़ाते

इस नई वोट की राजनीति ने गुड़ गोबर कर डाला है।
भारत मां के आँचल को यहां शोणित से रंग डाला है।।
शस्य श्यामला भारत की धरती आज लहू से लाल बनी।
दसों दिशाएं पूछ रही अब क्यों जनता विकराल बनी।।

आग लगाकर कुआं खोदते वे नेता सभी गद्दार हैं।
सच, इन नेताओं से नहीं देश का अब होना उद्धार है।।
देश भाड़ में चला जाये इनको तो प्यारी कुर्सी है।
कुर्सी को पाने पर ही नित नेता की काया हर्षी है।।

बहुत बुरा लगने लगा, अब यह नेता नाम।
नाम यह गाली बना, बुरा बना यह काम।।
नेह नहीं बिल्कुल रहा, सारे धोखेबाज।
नेताओं से राष्ट्र की, दुर्गति होती आज।।

गाँधी नेहरू अरु तिलक, कहाँ सुभाष महान।
भगतसिंह आजाद का, सब गाते गुण गान।।
राजगुरु सुख देव संग, नेता हेड गवार।
जय प्रकाश की आज भी, राष्ट्र करे जयकार।।

पद पसा पाकर कई, नेता हो गये आज।
जग पूजे उसको यहाँ, जब तक उसका राज।।
जो जितना शैतान है, धन का रखता जोर।
वो ही नेता अब बने, जनता का सिरमोर।।

जनता डर कर दे रही, उनको अपना वोट।
मौका आये मारती, सीधी उन पर चोट।।
नेता सारे कर रहे, केवल निज कल्याण।
कुर्सी में ही बस रहे, उनके अपने प्राण।।

कुर्सी के खातिर करें, काम नीच से नीच।
जनता इनके साथ में, जीभ दांत के बीच।।
जाति धर्म के नाम पर, देश लड़ रहा आज।
इनके पीछे देख लो, नेताओं का काज।।

जाति भाषा धर्म में, बंटा आज फिर देश।
अपना घर हमको लगे, जैसे आज विदेश।।
नेता सारे बोलते, रखकर मन में दर्प।
मन में निश दिन रेंगते, शंकाओं के सर्प।।

जाने कैसे खो गया, अन्तर का उल्लास।
महावीर की यह धरा, उठा आज विश्वास।।
प्रभो आपसे है विनय, दो धरती पर ध्यान।
नेता जो है विश्व के, मन से बने महान।।

सभी इकट्ठे कर रहे, मृत्यु का सामान।
चिंगारी की देर है, दे सन्मति भगवान।।
जाने कहाँ ले जायेगी, राजनीति की दौड़।
साधू भी करने लगे, नेताओं की होड़।।

साथ साथ चलने लगे, साधू और शैतान।
अंधियारे के रहन है, बच्चों की मुस्कान।।
मैंने देखा है यहाँ, करके आंखें बन्द।
इस भूमि पर सचमुच ही, ज्यादा हैं जयचन्द।।

सुविधाभोगी हो गये, बुद्धिमान सब लोग।
भ्रम होता अब लग गया, इन्हें छूत का रोग।।
इस भारत पर अधिक ही, कलियुग की है छांव।
फंसी हुई है भंवर में, भारत मां की नाँव।।

मुनिवर पन्नालाल जी, जाते जिस जिस गाँव।
सत्य अहिंसा के सहित, फैलाते सम भाव।।
कर विचरण पन्ना गुरु, पहुंचे ऐसे ग्राम।
कहते जिसको रायला, चहुँ दिश फैला नाम।।

शास्त्रों के ज्ञाता कई, जाने वेद पुराण।
पन्ना मुनि को देखकर, छोड़ा अपना बाण।।

वैष्णव के घर जन्म लिया क्यों जैनधर्म अपनाया है।
निज धर्म त्याग करके तुमने बोलो क्या इससे पाया है ।।

हे महामुनि आप शास्त्रों के ज्ञाता हो हमने जाना है।
धर्म शास्त्र सभी पढ़ डाले हैं यह भी आपने माना है ।।
स्वधर्म त्याग कर जो मानव पर धर्म के अन्दर जाता है।
हमको मालूम यह शास्त्रों से वह नरक लोक को पाता है ।।

अपने धर्म में मरने को गीता में श्रेष्ठ बताया है।
स्वधर्म त्याग कर तुमने क्यों जैनधर्म अपनाया है ।।
अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है स्वधर्म के अन्दर आजाओ।
श्वेत वस्त्र का त्याग करो अब वस्त्र गेरुए अपनाओ ।।

तुमने पढ़े हैं पर उन्हें गुना नहीं,
इसलिए प्रश्न यहां तुमने उठाया है।
गीता में बताया गया मरे स्वधर्म में,
तुम में से कृष्ण को समझ कौन पाया है ।।

आत्मा का धर्म स्व धर्म कहलाये भाई,
यही स्व धर्म निधन जो श्रेय कहलाया है।
आत्मा को जान पहचानो धर्म मूल को,
विकारों में जाना ही अधर्म बतलाया है ।।

अद्भुत व्याख्या जानकर, हर्षित सारे लोग।
जन्म सफल अपना हुआ, आया है शुभ योग ।।
धर्म लाभ देकर वहाँ, बहुत दीपाया नाम।
अब तो घर घर गूँजता, प्राज्ञ मुनि का नाम ।।

मुनिवर के उपदेश सुन, उच्च जगे हैं भाव।
दर्शन को आने लगे, क्या राजा क्या राव ।।
श्रवण किये उपदेश तो, दी चरणों में धोक।
राव मसूदा ने करी, अब हिंसा पर रोक ।।

शिला लेख खुदवा दिये, हिंसा है अपराध।
मुनि कृपा से सारे ही, सुलझे वहां विवाद ॥

जिन धर्म के जय नाद का संकल्प लेकर वे चले।
उन्हें ही अपना बनाया विपरीत उनसे जो चले ॥
आपसे होकर प्रभावित कर माफ गोचर का दिया।
अब ना मृत्यु भोज होगा यह व्रत खड़े होकर लिया ॥

राजा बनेड़ा अमरसिंह समक्ष जिनके थे झुके।
देने आशीर्वाद पन्ना पथ में उनको थे रुके ॥
भीलवाड़ा से किशनगढ़ व विजयनगर आना हुआ।
जोधपुर व भीलवाड़ा भिणाय फिर जाना हुआ ॥

वर्षावास हर नगर का रचता नये इतिहास को।
ऊँचा उठाते महामुनि हर मनुज के विश्वास को ॥
वैराग्य की ले कामना मिश्री जोरावर से बोला।
अब मुझे चुभने लगा है यहां पर संसार चोला ॥

आज मेरे अपने ही ये रोकते हैं बढने से।
मुझको ना वंचित करो संगम शिखर पर चढ़ने से ॥
अविरल मुनि जोरावर लिए मिश्री को चलते रहे।
मन प्रफुल्लित मिश्री का नित्य मन सुमन खिलते रहे ॥

बोलता मिश्री गुरुवर क्या यूं ही मैं चलता रहूंगा ?
संसार की ज्वाला के अन्दर अनवरत जलता रहूंगा ॥
जोधपुर का यह ठिकाना कब तलक बाधा बनेगा।
गूंज मेरे हृदय की क्या नहीं कोई सुनेगा ॥

जैसे ली महावीर ने थी वैसी दीक्षा धार लूंगा।
लेके संयम जिन्दगी को मैं नया आकार दूंगा ॥
शिष्य धारण धैर्य कर रस्ता निकल कुछ आयेगा।
आने वाला सूर्य ही अब सन्देश कोई लायेगा ॥

बात अड़चन की गई पन्ना मुनि के कान तक।
कौन जा पाते धरा पर आत्म के उत्थान तक ।।
ठिकाने लग जायेगा कल जोधपुर का वह ठिकाना।
क्या सन्त मुनिराजों की शक्ति को उन्होंने नहीं जाना ।।

प्राज्ञमुनि ने दूत के संग भिजवा दिया सन्देश है।
मरुधरा का मोह त्यागो, यह लम्बा चौड़ा देश है ।।
चले आओ पास मेरे बाधा स्वयं हट जायेगी।
विपत्ती की बदलियां सब सहज ही छँट जायेगी ।।

सन्देश पढ़कर मुनि जोरावर ने मिश्री को बताया।
अब देर गुरुवर ना करो लक्ष्य खुद नजदीक आया ।।
प्राज्ञ मुनि के होंगे दर्शन लाभ भी मिल जायेगा।
दीक्षा मुझको मिल गई तो मन सुमन खिल जायेगा ।।

आत्म बली पन्ना मुनिवर जगत सारा जानता है।
उनके मनोबल को धरा क्या गगन भी पहचानता है ।।
शान्त मेधावी मुनि वे मन में उनका ध्यान कर।
दीक्षा उन्हीं के पास होगी यह चलो तुम मान कर ।।

सज्जन सहयोग करे दुर्जन लगाये पग,
शुभ जो भी काम हो बाधाएँ आ ही जाती हैं।
सुख दुःख धूप छाँव बनकर आये जाये,
नित सज्जनों की नाव पार हो ही जाती है ।।

सुत के सहित माता चाहती वैराग्य को,
अरे दुनियां तो जलती में आग डाल जाती है।
सुख में तो जनता सब बनती रही है अपनी,
दुःख में जो साथ रहे अपनी कहाती है ।।

जोरावर मिश्री को साथ ले भिणाय आये,
देखा श्री संघ ने तो भाव यह जताया है।
हे महामुनि दीक्षा का लाभ हमें मिल जाये,
वैरागी यह वाल हमें बड़ा मन भाया है ।।

छोटी सी अवस्था पर यह गुण भण्डार लगे,
लेऊँगा मैं संयम को इसने बताया है।
इसीलिए आपके समक्ष आज श्री संघ,
चरणों में भाव लेके हाथ जोड़ आया है।।

देखकर आग्रह सभी का हीं हाँ भरी मुनिराज ने।
गद्‌गद् सभी को कर दिया उस गूंजती आवाज ने।।
फिर मुनि जोरावर ने पन्ना से सभी बातें कही।
बाधाएं कोई दूसरी खड़ी न हो जायें कहीं।।

सब ठीक होगा गुरु बोले आप मत घबराइये।
मिश्री को आगम की शिक्षा आप तो सिखलाइये।।
श्री संघ ने भेजे निमंत्रण जहां जाना चाहिए।
महावीर का जयनाद आ अब यहाँ गुंजाना चाहिए।।

दीक्षा होगी दीक्षा होगी शेष कितने दिन रहे।
सब लोग अपनी अंगुलियों के पैरवे थे गिन रहे।।
डाकुओं का उस समय में जोर ज्यादा बढ़ गया था।
पुलिस की आँखों में तभी एक डाकू चढ़ गया था।।

राज घराना खरवा ठाकुर मोर्डसिंह कुछ तन गया।
नित जुल्म सहकर गोरों के वह महा डाकू बन गया।।
डाकुओं के हृदय में भी वही नित्य बसती आत्मा।
डाकू भी इंसान हैं रहे उनमें भी परमात्मा।।

ज्ञान पाकर डाकू रत्नाकर भी कवि था हो गया।
महाकाव्य रचकर वह तो श्री राम में ही खो गया।।
मोर्डसिंह पन्ना मुनि को गुरु अपना मानता था।
गुरु के उपकार को वह हृदय से पहचानता था।।

प्रथम तो लोगों ने सोचा मौका सुनहरा आयेगा।
आयेगा दीक्षा में जो वच ना उससे पायेगा।।
जैनियों का वह शुभ महोत्सव उधर हम मनायेंगे।
हमें लूटने को दल सहित वह वहाँ पर आयेंगे।।

डर रहे थे लोग सारे पुलिस भी घबरा रही थी।
कर बद्ध होकर गुरु के पास जनता आ रही थी।।
मुनि जोरावर मन में नवकार जपते जा रहे थे।
पन्ना सबको देखकर के सतत ही मुसका रहे थे।।

भय ना पालें आप अब सूई न छीनी जायेगी।
शुभ प्रसंग है दीक्षा का आंच न कोई आयेगी।।
डाकू ने सन्देश संग गुप्तचर के भिजवा दिया।
महोत्सव सानन्द होगा संकेत से कहला दिया।।

मैं भी दर्शन के लिए निज वेश बदले आऊँगा।
आप के दर्शन किये बिन लौटकर नहीं जाऊँगा।।
डरते डरते भी हजारों आये नर नारी वहाँ।
पुण्य बिना दीक्षा का दर्शन किसे होता है यहाँ।।

निर्विघ्न दीक्षा हो गई सभी जन मुसका रहे थे।
डाकू की गुरु भक्ति को देखी तो हर्षा रहे थे।।
दीक्षा पूरी हो गई सबने सबको दी बधाई।
चरण छू डाकू गया पर पुलिस ना पहचान पाई।।

अभय डाकू से मिला जो यही गुरु का प्रभाव है।
यहाँ सत्संगति से क्रूर भी तजता निज स्वभाव है।।
बरात ब्यावर की मिली जो जा रही राताकोट को।
घेरा उसको डाकुओं ने बोले खोलो पोट को।।

डर गये सारे बराती जेवर छुपाने लग लये।
प्रभो क्या होगा हमारा सोये वही सब जग गये।।
एक बोला श्रीमान जी दीक्षा में जो जायेंगे।
आपने ही यहाँ कहा था लुट नहीं वे पायेंगे।।

बाद गुरु दर्शन के अब इस तरह लुटना पड़ेगा।
ऐसा न जाना आपको वचन से हटना पड़ेगा।।
झूठ छुप सकता नहीं बारात लेकर जा रहे हो।
मेरे गुरु का नाम क्यों बीच में तुम ला रहे हो।।

मेरे गुरु का नाम तुमने सामने मेरे लिया।
जाओ तुमको आज मैंने क्षमा सभी को कर दिया ।।
गुरु नाम से अभय मिला यह जान सब हर्षित हुए।
यह घटना जिसने भी सुनी सुनके आकर्षित हुए ।।

अब भीलवाड़ा को दिया इस वर्ष चातुर्मास था।
चहुँ ओर चर्चा ज्ञान की हर हृदय में उल्लास था ।।
शुभ वेला सबने पाई जल सम बरसता उपदेश था।
नित सबको आलोकित गुरु का कर रहा सन्देश था ।।

हर पल निडरता का महामुनि भाव जगाया करते थे।
होनी अनहोनी ना होती वे नित्य बताया करते थे ।।
निर्भयता का महामंत्र गुरुवर से मैंने पाया है।
इसीलिए तो महावीर का पावन पथ अपनाया है ।।

ज्ञानचन्द नागोरी का मन हुआ परीक्षा लेने का।
मुनि में निर्भयता है या शौक है थोथा कहने का ।।
कालबेलिए से मिलकर के उससे मन की बात कही।
तेरा काला नाग अनोखा मुझे चाहिए आज यहीं ।।

मुनिवर के पास छोड़ इसको उनको यहाँ डराऊँगा।
निर्भयता उनमें कितनी है इसका पता लगाऊँगा ।।
गुरुदेव ज्ञान चर्चा में बैठे तत्व ज्ञान बतलाते।
जो श्रावक आते हाथ जोड़कर बैठ सामने जाते ।।

नागोरी ने वह भुजंग चुपचाप वहाँ पर छोड़ दिया।
कुछ भी पता नहीं हो जैसे अपने मुख को मोड़ लिया ।।
रजोहरण के ऊपर से वह नाग पट्ट पर पहुँच गया।
सर्प सर्प सब बोल उठे डर कर नागोरी दूर गया ।।

अविचल बन पन्ना बोले घबराओ मत मेरे भाई।
जिनवाणी सुनने आया यह जागी इसकी पुण्याई ।।
मैं नहीं डराता हूँ इसको यह क्यों मुझे डरायेगा।
विश्वास रखो यह कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा ।।

मेरा इससे द्वेष नहीं मैं मैत्री राह बताता हूँ।
पंचेन्द्रिय जीव है यह भी तो आत्मा इसमें पाता हूँ॥
वहाँ नाग मुनि के ऊपर चढ़ वापिस नीचे उतर गया।
धन्य धन्य कह नागोरी ने उसे वस्त्र में पुनः लिया॥

निर्भयता की बातें सुनकर मैंने करी परीक्षा है।
मांग रहा नागोरी तो अब आज क्षमा की भिक्षा है॥
उसका ही जीवन जीवन है जो निडर बनकर सदा जिया।
अपलक नयन होकर वाणी का सबने वहाँ पीयूष पिया॥

मानव नित मन में रखो, सदा अहिंसा भाव।
धरती ऊपर तुम धरो, देख देख कर पांव॥
क्या मन से क्या वचन से, कर्मों से यह होय।
अशुभ भाव हिंसा सदा, राखे नाहीं कोय॥

डरने और डराने की, बातें जाओ भूल।
अहिंसा का भाव बना, जिन शासन का मूल॥
हिंसा जब तक विश्व में, शान्ति नहीं हो पाय।
अहिंसा अपनाये तो, सब संकट टल जाय॥

डरने वाले को यह दुनियाँ सदा डराती।
जिनवाणी तो निर्भयता की राह बताती॥

जिनवाणी के शरणे आओ।
सब प्राणी निर्भय बन जाओ॥

जब तक भय अन्तर के अन्दर यहां पलेगा।
पल भर भी सुख कभी मनुज को नहीं मिलेगा॥
खूं के छींटे उछल उछल कर नित्य लगेंगे।
अपने हाथों अपना ही घर बार जलेगा॥

प्रभु वाणी सारे अपनाओ।
सब प्राणी निर्भय बन जाओ॥

भूल शास्त्र की बातें दुनियां शस्त्र बनाती।
इसीलिए निर्भयता मन में ना आ पाती।।
शंका के शैलाब उमड़ते नित रह रह कर।
अपनों से भी मिलने को दुनियाँ कतराती।।

शस्त्र त्याग कर शास्त्र उठाओ।
सब प्राणी निर्भय बन जाओ।।

प्रश्न कोई हिंसा से हल हो ना सकेगा।
हिंसा से डर निर्भय कोई सो ना सकेगा।।
बालक मन मानव का उसको बोध नहीं है।
अपना सब कुछ खोकर के वह रो ना सकेगा।।

मार्ग अहिंसा का दिखलाओ।
सब प्राणी निर्भय बन जाओ।।

श्रावक गुरु के दर्शन करके मन के भाव बताते।
ग्राम हमारे दर्शन हेतु राह में पलक बिछाते।।
नित्य प्रतीक्षा करके हम याद आपको करते हैं।
कदम क्यों नहीं मुनि आपके नई डगर में फिरते हैं।।

चाह मगर गुरु सेवा कारण पांव नहीं मुड़ पाते हैं।
भीगे पंख होने पर पंछी बोलो क्या उड़ पाते हैं।।
आग्रह है तो आज्ञा ले आगे हम पाँव बढ़ायेंगे।
विश्वास करो हम इसी वर्ष पुनः भीलवाड़ा आयेंगे।।

मुनि देवी को संग लिए अब पन्ना नगर वनेड़ा आये।
राजाधिराज वनेडा ने उपदेश सुने व हर्षाये।।
उपदेशों की अमृत वर्षा कर आगे मुनिवृन्द चले।
राजा जी की बगिया में अब पहुँचे पन्ना सांझ ढले।।

वन में सुन्दर बाग मनोहर देख इसे मन हर्षाया।
शीतल मन्द समीर यहां की पुलकित करती है काया।।
ये जामुन आम दाड़िम देखो अमरूद सुहाये हैं।
सीताफल नींबू केरूंदे अपनी डालें फैलाये हैं।।

बैठे चातक कीर यहां कोयल भी रह रह बोल रही ।
मोर पंख फैलाकर नाचे साथ मयूरी डोल रही ।।
शाखों पर शाखामृग बैठे रह रह झूला झूल रहे ।
जीवन कितना निश्चिन्त बना देख इसे जग भूल रहे ।।

ताल मनोहारी इसके तट से तरंगें टकराती हैं ।
छू उष्ण हवा इसको शीतल चन्दन सी हो जाती है ।।
छोटे छोटे नाले इसमें बन सरिता कई समाते हैं ।
इसका शीतल जल पीकर के वनचर प्यास बुझाते हैं ।।

मेंढ़क मछली कई जीव इसमें रह जीवन जीते हैं ।
जल खग इस पर तैर तैर मृदु जल को पल पल पीते हैं ।।
मोहक कमल खिले इसमें भ्रमरों को पास बुलाते हैं ।
पंखुरियों पर बिठा बिठा झूले सम सदा झुलाते हैं ।।

यह ताल सागर के सम लहरों पर लहर उठाता है ।
उठने का नाम न लेता जो बैठ किनारे जाता है ।।
अस्ताचल की ओर गमन सूरज अब करने वाला है ।
पंछी नीड़ों को लौट रहे दिवस अब ढलने वाला है ।।

कुछ समय बाद जलजात सभी सिमट स्वयं में जायेंगे ।
रात रानी के बाग में कुसुम महकने लग जायेंगे ।।
बगिया जितनी सुन्दर है उससे कम ताल नहीं लगता ।
ढलता सूरज इतना सुन्दर कैसा लगता फिर उगता ।।

सुयोग बना मुनिवर कैसा वन में निशा बितायेंगे ।
आज प्रकृति की गोदी में वीर वाणी प्रकटायेंगे ।।
बागवान से बोले पन्ना हम निशा यहां बितायेंगे ।
अनुमति दो हमको रुकने की सुबह चले हम जायेंगे ।।

किसी वृक्ष के नीचे या फिर छत नीचे रह जायेंगे ।
निशा बीतते ही हम भाई आगे फिर बढ़ जायेंगे ।।
गुरुदेव आप छत के ऊपर साथ हमारे सो जायें ।
ऊपर डर की बात नहीं निश्चिन्त आप भी हो जायें ।।

यह जंगल बड़ा भयानक है रात पड़े डर लगता है।
ग्राम नगर सो जाते हैं जब जंगल सारा जगता है।।
एक शेर तो इस बगिया में रात हुए नित आता है।
शिकार यदि मिल जाये तो वह उसे उठा ले जाता है।।

जैन साधु हैं हम तो भैया नहीं खुले में सोते हैं।
साधु अगर खुले में सोये पाप के भागी होते हैं।।
हम ठहरें दोनों दरवाजे में इतनी सी अनुमति दे दो।
भय नहीं सिंह से हमको है तुम तो केवल हाँ कह दो।।

हम न सताते कभी किसी को क्यों कोई हमें सताये।
हर प्राणी के प्रति सर्वदा मैत्री भाव हम दर्शायें।।
छोटे बड़े वृक्ष सब में उस आत्म तत्व की छाया है।
जीव तत्व है पादप में यह शास्त्रों ने बतलाया है।।

हम साधु हैं कभी वृक्ष को पीड़ नहीं यहां पहुँचाते।
पावन पर्यावरण इन्हीं के कारण ही हम रख पाते।।
अगर ग्राम में मनुज नहीं हों तो वीरान वह बन जाये।
जंगल में जंगली जीव न हों तो जंगल ना वह कहलाये।।

वृक्षों के कारण ही तो जंगल जंगल कहलाता है।
युगों युगों से मानव का तो जंगल से गहरा नाता है।।
वृक्ष और ये जीव सभी इस धरती मां की संतानें।
मानव का इनसे रिश्ता है वह इसको अपना माने।।

प्राण वायु इन वृक्षों से ही मानव हर पल पाता है।
वृक्ष देव सम पूजित हैं ये सारे जीवन दाता हैं।।
प्राकृतिक जितनी भी सम्पदायें चाहे हो वह वन की।
मानव करे अर्चना इनकी तो कमी न हो फिर इस धन की।।

मनुज अपने कुकृत्यों से ही वन का रूप विगाड़ रहा।
सच पूछो तो ऐसा कर वह मां का आंचल फाड़ रहा।।
लाभ जहां पर भी वढ़ जाता भला नहीं रह पाता है।
ताना ही जव टूट जाये तो क्या नाता रह जाता है।।

हमने मैत्री भाव बढ़ाया भय किससे हम खायेंगे।
अनुमति मिली तो रात आज सोकर के यहीं बितायेंगे॥
जैसे भाव आपके मुनिवर आप द्वार पर सो जायें।
मन में भय हो अगर आपके छत के ऊपर आ जायें॥

अब मुस्काकर के मुनियों ने आसन अपना लगा लिया।
समय होने पर दोनों ने ही प्रतिक्रमण भी वहां किया॥
चन्दा को लेकर तारे भी उस रात गगन में ना आये।
पन्ना के मुख पर अपनी वन में नव रश्मि बिखराये॥

आधी रात ही बीती थी कि गूंजी एक दहाड़ वहाँ।
टूट टूट कर बिखर गया हो जैसे एक पहाड़ वहाँ॥
रात अंधेरी काली चन्दा भी जाने कहाँ गया।
दो हाथ दूर पर कौन खड़ा वहां दिखाई नहीं दिया॥

झिंगुर की आवाजें थीं रह रह उल्लू बोल रहे थे।
छत पर सोये लोगों के भय से अन्तर डोल रहे थे॥
हवा सनन सन सन चलती खड़ खड़ खड़ पत्ते करते थे।
जंगल में काली रात भयानक जगे हुए सब डरते थे॥

प्रतिदिन की भांति मुनि वृन्द प्रभु का नाम आज भी जपते।
बागवान व उसके साथी छत पर सोये फिर भी कंपते॥
निकल झाड़ी से सिंह एक वहां दरवाजे तक आया।
जप में मुनिवर को लीन देखकर अपना शीश झुकाया॥

मधुर स्वरों में पन्ना अब "अभय दाया भवा हियं" बोले।
वह सिंह खड़ा था शान्त भाव से नयन उन्होंने जब खोले॥
शीश झुका जब शेर गया तब पन्ना मुनि ने वहाँ कहा।
मुनि देवी जी बतलाओ कौन आया था अभी यहां॥

शृगाल कोई होगा मुनिवर जो अभी यहां पर आया।
दहाड़ मार कर तभी सिंह ने सबको वहां चौंकाया॥
शृगाल, सिंह को कहो ना तुम वरना फिर वह आयेगा।
दहाड़ मार कर बता रहा कि सह अपमान न पायेगा॥

दूर होने से मैंने उसको देखा पर न पहचाना ।
देख लिया मुनिराज आज मैत्री तो है महा खजाना ॥

बागवान ने नीचे आकर अपना शीश झुकाया ।
वनराज आय के लौटा है कैसी यहाँ अद्भुत माया ॥
दहाड़ सुन जागा मैं तो फिर अपना यह लठ्ठ उठाया ।
पर छत से नीचे उतर आने की मैं हिम्मत नहीं कर पाया ॥

कुछ कहा आपने उसको था सुन उसने शीश झुकाया ।
वह लौट गया फिर जंगल में भक्ष्य नहीं था ले पाया ॥
शक्ति अहिंसा में होती यह देख आज मैं जान गया ।
मैत्री भाव की परम शक्ति को प्रभु आज पहचान गया ॥

कुछ सोये कुछ ध्यान किया वह रात शान्ति से बीत गई ।
पन्ना मुनि की महाशक्ति उस घोर निशा को जीत गई ॥
सूर्य रश्मियों ने आकर धरती पर आलोक बिछाया ।
तब पन्ना ने पग अपना मग के ऊपर पुनः बढ़ाया ॥

पूरब में लाली फैल गई ली कमलों ने अंगड़ाई ।
चीं चीं चीं चिड़िया चहचाई सुमनों से सौरभ आई ॥
घटना घटी निशा में जो वह पहुँच गई उनसे आगे ।
दर्शन मुनि के किये जिन्होंने कहा पुण्य फिर से जागे ॥

सब जीवों से प्यार का, वे देते उपदेश ।
दया प्रेम को बाँटते, करते नगर प्रवेश ॥
दया अगर मन में नहीं, और नहीं है प्यार ।
मानव ऐसी ठौर पर, रहना ही बेकार ॥

सन्तों के दर्शन करे, जागे जिसके पुण्य ।
पन्ना को देखे वही, समझे खुद को धन्य ॥
वे जाते जिस ग्राम में छाता वहाँ आनन्द ।
गुण गाते सब भाव से, क्या भाषा क्या छन्द ॥

□□

सप्तम सर्ग

मनोयोगी : महायोगी

मंगलाचरण

हे प्रभो सुध लेना यहाँ आकर हमारी ।
कर बद्ध होकर वन्दना करते तुम्हारी ॥

जो लोक में आलोक फैला वह तुम्हारा है ।
चटकती कलियों में तेरा ही रूप प्यारा है ॥
जड़ में चेतन में, तू चराचर में समाया ।
मैंने खोले नैन, हर जगह तुमको ही पाया ॥
नाथ तू सर्वज्ञ है तू ज्ञान गुणधारी ।
कर बद्ध होकर वन्दना करते तुम्हारी ॥

आत्मा पर विजय पाये ऐसा तुम वरदान दो ।
मन किसी का ना दुःखायें प्रभु हमको ज्ञान दो ॥
भाव मन से प्रेम के कभी विसरा न पायें ।
सत्य के पथ पर चलें धर्म के ध्वज को उठाये ॥
आराधना रत विश्व के नर और नारी ।
कर बद्ध होकर वन्दना करते तुम्हारी ॥

आदि में जो रूप है अन्त में उसको ही पाया ।
ऋषभ से वीर तक ने गीत तेरा गुनगुनाया ॥
हे दया सागर तुम्हारा नाम जग लेता रहा ।
मैं संसार सिन्धु में नित नाव को खेता रहा ॥
हो गया 'शशिकर' पाँव पद्मों का पुजारी ।
कर बद्ध होकर वन्दना करते तुम्हारी ॥

यह धरा फिर कष्ट में है क्या छुपा है आपसे ।
आज रोंदी जा रही है देख लो यह पाप से ॥
आचरण अब आदमी का नित घिनौना हो रहा ।
कर्म उल्टे कर मनुज अब स्वयं रोना रो रहा ॥
अपने भक्तों की सुधि प्रभु क्यों कर विसारी ?
कर बद्ध होकर वन्दना करते तुम्हारी ॥

कायर जग में बहुत से, बहुत मिलेंगे क्रूर ।
जीवित इनके मध्य में, आज अनेकों शूर ॥
कलियुग की छाया बढ़ी, हिंसा का है जोर ।
कहने वाले बहुत पर, करने वाले और ॥

वे अभय की भावना को रात दिन सब में जगाते ।
समय मिलता शेष जो स्वाध्याय में उसको लगाते ॥
अजमेर चातुर्मास करके पार आडावल किया ।
तीर्थ गुरु पुष्कर में जाकर चैन वहाँ कुछ पल लिया ॥

गऊघाट ऊपर मुनि ने वीर की वाणी सुनाई ।
साधना में शक्ति भारी बात सबको ही बताई ॥
व्यसनों को जो त्याग देगा सुख वही नित पायेगा ।
युक्त है जो व्यसन से वह मुक्त हो नहीं पायेगा ॥

एक पण्डित भंग के नशे में बोला मुनिवर जाइये ।
साधना में शक्ति है तो गनाहेड़ा हो आइये ॥
वहाँ भैंसों की बलि ना जाने कब से हो रही है ।
रावतों की वह माता जाने कब से रो रही है ॥

श्रवण कर उपदेश रावत यदि बलिप्रथा को तोड़ देंगे ।
भंग का नशा मुनिवर हम भी यहाँ सब छोड़ देंगे ।
बात पन्ना को चुभी बस त्याग व्यसनों का कराना ।
हृदय में संकल्प लेकर उस बलि को जा रुकाना ॥

श्रावकों के साथ पन्ना गनाहेड़ा में आ गये ।
दीपक अहिंसा के उन्होंने उस ग्राम में जला दिये ॥
जीव हत्या की प्रथा तो नरक ही सबको दिखाती ।
कौन सी पोथी बताओ कर्म तुमको यह सिखाती ॥

एक बाबा कुल गुरु बनकर यह सब करवा रहा था ।
कुपित होगी माता इससे यह कह उन्हें भड़का रहा था ॥
पन्ना बोले बन्धु मेरे देखो माता रो रही है ।
पुत्रों की करनी के आगे आज बेसुध हो रही है ॥

माता को तुम नारियल अब यहाँ चढ़ाना मान लो ।
घृणित है यह बलि प्रथा भाई दर्द माँ का जान लो ॥
जब नहीं कुल गुरु ने कहा तो तेज पन्ना ने दिखाया ।
कोप माता का हुआ तो अहित सबका ही बताया ॥

बन्द बलि जो नहीं हुई तो अहित अब हो जायेगा ।
यह तुम्हारा कुल गुरु फिर कर नहीं कुछ पायेगा ॥
हैं लोग तो तैयार सारे मगर तुम भरमा रहे ।
इसलिए ये ग्रामवासी सोच कुछ नहीं पा रहे ॥

तज दो अब तुम सीम को वरना पछताना पड़ेगा ।
खड़ग माता को यहाँ तुम पर उठाना ही पड़ेगा ॥
देख कर के तेज मुनि का सब लोग घबराने लगे ।
कर बद्ध होकर दूर थे वे पास में आने लगे ॥

कुल गुरु पाखण्डी बाबा उसी क्षण में चल दिया ।
अब नहीं होगी बलि कभी उन रावतों ने व्रत लिया ॥
तीसरा दिन था यह मुनि ने खाया नहीं पिया नहीं ।
लोग सब बेचैन थे कि कुछ मुनिराज ने लिया नहीं ॥

संकल्प पूर्ण होने पर जब निवेदन सबने किया ।
वहीं घाट के संग छाछ का बस पारणा मुनि ने लिया ॥
लहरें पुष्कर राज की वहाँ बोलती जयकार थी ।
शीश पंडों के झुके अहा ! श्रद्धा अपरम्पार थी ॥

श्रावकों घर घर में जाकर महावीर का सन्देश दे दो ।
मैं आ गया इस ग्राम में उन्हें जाकर आप कह दो ॥
माताजी के स्थान पर अब लोग कुछ आने लगे ।
कुछ हाथ उनके जोड़कर लौट घर जाने लगे ॥

बच्चे बूढ़े और जवानों का वहाँ मेला जुड़ा ।
टोक कर ठहरा लिया जो भी जाने को मुड़ा ॥
आप के खातिर ही चलकर मैं यहाँ पर आया हूँ ।
झोली भर कर स्नेह की मैं आपके हित लाया हूँ ॥

देखकर माता का आंगन उठ रहा भूचाल है ।
किसके लहू से बोलिए मन्दिर का आंगन लाल है ॥
एक बोला-कल ही हमने माँ को भैंसा था चढ़ाया ।
खून उसका ही मुनिवर जो अभी ना सूख पाया ॥

अरे गूंगे पशु को मारना तो नीचता का काम है ।
मूक पशुओं की बलि से रूठ जाते राम हैं ॥
जिसने भी मरवाया पशु को नर वही पछतायेगा ।
नरक का कीड़ा कभी भी सुख ना भू पर पायेगा ॥

तब एक ने उठकर कहा-क्या झूठ है क्या सत्य है ।
कुल गुरु के कहने पर हमने किया यह कृत्य है ॥
कुल गुरु हमको जो कहते बात वह हम मानते हैं ।
हम निरक्षर धर्म और अधर्म को नहीं जानते हैं ॥

है घृणित प्रथा बलि की बन्द ना हो पायेगी ।
रोटी तो क्या जल की बूंदें अब पेट में ना जायेगी ॥
मैं भूखा रहकर माँ के चरणों में बलि चढ़ जाऊँगा ।
पर आपको तो सत्य की राह पर मैं लाऊँगा ॥

पाखण्डी बाबा दूर बैठा बातें सारी सुन रहा था ।
जाल वह षड्यन्त्र का वहाँ दूर बैठा बुन रहा था ॥
क्रोध में आकर वह बोला क्यों इन्हें भड़का रहे हो ।
घाव आकर के किया अब नमक क्यों छिड़का रहे हो ॥

मैं कुल गुरु इस ग्राम का सब बात मेरी मानते हैं ।
अरे नास्तिक तुझ जैसों को हम सब यहाँ पहचानते हैं ॥
चला जा तू स्थान तजकर वरना बहुत पछतायेगा ।
अब तक यहाँ भैंसे कटे, लगे तू कहीं कट जायेगा ॥

लाल थी पन्ना की आँखें बोले तू वह नीच है ।
पाखण्डी तू इस धरा को खून से दी सींच है ॥
हो दूर मेरी नजर से वरना यहाँ पछतायेगा ।
फिर जान से अगले ही पल तू फना हो जायेगा ॥

तूने मेरी शक्तियों को अभी तक जाना नहीं है ।
अरे बावले पन्ना को तूने कभी पहचाना नहीं है ॥
डर गया पाखण्डी बाबा बोल कुछ पाया नहीं ।
खिसक कर ऐसा गया फिर सामने आया नहीं ॥

पन्ना बोले बन्धु मेरे देखो माता रो रही है ।
पुत्रों की करनी के आगे यह बेसुध हो रही है ॥
माता को तुम नारियल ही अब चढ़ाना मानलो ।
घृणित है बलि की प्रथा आप सब यह जानलो ॥

तप के संग में जप चला तो लोग घबराने लगे ।
कर बद्ध होकर लोग गुरु की शरण में आने लगे ॥
कुल गुरु अब दूर जाकर लोगों को भड़का रहा था ।
पीस करके दाँत अपने बिजलियाँ कड़का रहा था ॥

सामने पाखण्डी आ तू क्यों इन्हें भरमा रहा ।
तेरे भय से ग्रामवासी सोच कुछ ना पा रहा ॥
तज दे सीमा ग्राम की वरना पछताना पड़ेगा ।
खड़ग माता को तेरे ऊपर उठाना ही पड़ेगा ॥

तीन दिन के बाद सबने अपना मानस है बनाया ।
सत्य का सन्मार्ग गुरुवर आपने हमको बताया ॥
वह कुल गुरु तो कुगुरु था हो गया लगता रवाना ।
सत्य का पथ हे गुरुवर आपसे हमने हैं जाना ॥

हम आज सारे ग्रामवासी सौगन्ध यह अब खाते हैं ।
हम बलि होने न देंगे संकल्प यह दोहराते हैं ॥
भूल हमसे हो गई थी क्षमा वह कर दीजिए ।
तीन दिन से आप भूखे कुछ ग्रहण कर लीजिए ॥

संकल्प पूरा होने पर जब निवेदन सबने किया ।
वहीं घाट के संग छाछ का पारणा मुनि ने लिया ॥
लहरें पुष्कर राज की वहाँ बोलती जयकार थीं ।
शीश पंडों के झुके अहा ! श्रद्धा अपरम्पार थी ॥

बलि प्रथा अब बन्द हो, छेड़ दिया अभियान ।
जहाँ जहाँ मुनिवर गये, मिला मुनि को मान ॥
जाकर चावण्डिया में, दिया सभी को बोध ।
बन्द सभी ने बलि करी, मन में पाया मोद ॥

तिलोरा में पहुँच कर, किया नेक फिर काम ।
श्रद्धा से लेने लगे, सब जन पन्ना नाम ॥
जन जन के मन में बढ़ा, अब करुणा का भाव ।
दया प्रेम बढ़ते वहाँ, पहुँचे पन्ना पाँव ॥

ग्राम नगर में विचर कर, दे करुणा सन्देश ।
व्यसन त्यागते लोग सब, सुनकर के उपदेश ॥
अचरज सारे जन करें, काम मुनि के देख ।
जहाँ जहाँ पन्ना गये, खुदे शिला पर लेख ॥

अजमेर शहर के पास ही है तिलोरा ग्राम ।
शिलालेख में है खुदा, मुनि पन्ना का नाम ॥
रजवाड़ों ने लिख दिये, सुन मुनि के उपदेश ।
अब पशु बलि होगी नहीं, शासनपति आदेश ॥

लिये अहिंसा भाव को, मुनि आये अजमेर ।
धर्म चर्चा कर गुरु को, लिया अचानक घेर ॥
मर्यादा तज आपने, किया बड़ा ही पाप ।
उचित वहाँ क्या बात थी, जो बोले थे आप ॥

फना जान से होयगा, अगर न मानी बात ।
पाखण्डी पर आपने, की वाणी से घात ॥
गद्गद् हो पन्ना कहे, हुई सत्य में भूल ।
भूल मुझे स्वीकार है, आप नहीं दें तूल ॥

सचमुच मेरी भूल थी, दिया यहाँ चेताय ।
प्रायश्चित मैं लेऊँगा, इसका यही उपाय ॥
धन्य धन्य सब कह उठे, झुके सभी के माथ ।
कर्म बंधें ना इसलिए, हम बोले हैं नाथ ॥

श्रमण भूल करदे अगर, श्रावक दे जो ध्यान ।
धर्म वह फूले फले, जग में बने महान ॥

उन्नीस सौ तैयासी का वर्षावास मनोहर था ।
गुरु के कारण गुलाबपुरा का हर्षित अब तो घर घर था ॥
मध्याह्न वेला में महामुनि तत्वों की बात बताते ।
पीने वाणी का पीयूष लोग निकल नित आते ॥

बात बात में महादेव जी उपाध्याय ने बात कही ।
एक अजा सुत की पीड़ा मेरे कानों में गूंज रही ॥
संचालक जल सयंत्र का उसको खींच लिए जाता ।
लाचार मूक पशु बेचारा उससे छूट नहीं पाता ॥

योजना बनाकर मुनिवर ने भक्त जनों को समझाया ।
तैयार पुलिस को करके उस संचालक को भरमाया ॥
अजमेर सीम को तजकर मेवाड़ राज्य में वह आया ।
आरक्षी दल ने पकड़ लिया वह देख वहाँ पर घबराया ॥

वह मुसलमान था घबराकर बोला यह तो गजब हुआ ।
हे अल्ला ! अपने बंदे की कर कबूल तू आज दुआ ॥
वह बोला यह बकरा मेरा दुश्मन बनकर आया है ।
शक्ति कहाँ से आई इसमें खेंच मुझे यह लाया है ॥

लोगों ने उसको समझाया अभय अगर बकरा पाये ।
कृपा अगर गुरुदेव करें तो इस आफत से बच जाये ।।
गिड़गिड़ा रहा था वह अब तो कसम आज ही लेता हूँ ।
जीवन भर मांस न खाऊंगा वचन आपको देता हूँ ।।

मुसलमान आ गये कई हिंसा का सबने त्याग किया ।
हिंसा नहीं करेंगे हम यह वचन आपको आज दिया ।।
जब तक था मेवाड़ राज्य हिंसा न कोई कर पाता था ।
हर मुसलमान पन्ना मुनि की जय जय कार लगाता था ।।

हुआ भीलवाड़ा नगर, मुनि का चातुर्मास ।
प्रवचन से बिखरा दिया, कण कण में उल्लास ।।
पूरा चातुर्मास कर, चले विचरने गाँव ।
मेला जुड़ता धर्म का, पड़े मुनि के पाँव ।।

महिना फागुन का लगा, रंग उड़े चहुँ ओर ।
मोर पपीहे बोलते, कोयल का भी शोर ।।
विचरण करते आ गये, मुनिवर ग्राम धनोप ।
गुरुवर के दर्शन हुए, बस हिंसा का लोप ।।

सघन कुंज के मध्य में, माता जी का स्थान ।
टीले पर मन्दिर वना, ऊँचा उसका मान ।।
भेंट पुजारी से करी, तो वह बोला बोल ।
माताजी के स्थान पर वजे अहिंसा ढोल ।।

वन्य पशु निर्भय वने, विचरण करते रोज ।
माता जी की है कृपा, सव ही पाते मौज ।।

सवको अभय इस क्षेत्र में यह वात तो अच्छी वताई ।
आखेट पर है रोक वन में लगी हिंसा पर मनाई ।।
पर पुजारी जी मेरा अव भी यह आपसे सवाल है ।
देखिये इस मूर्ति का किस कारण से चेहरा लाल है ।।

बलि भैंसे बकरे की यहाँ पर लोग देने आते हैं।
शायद इसी कारण खून के छींटे भी लग जाते हैं।।
भैरव की यह मूर्ति है पीकर खून को प्रसन्न होती।
लोग बलि भैरव को चढ़ाते पूर्ण जब होती मनौती।।

प्रतिबन्ध है आखेट पर तो और हत्या हो रही है।
मुझे लगता आज माता देख कर यहाँ रो रही है।।
अब प्रवचन मुनिवर ने दिया कहा बन्द अत्याचार हो।
ब्राह्मण पुजारी तुम बने मगर करते नहीं विचार हो।।

जनता जागी देशना सुन वहाँ जोश सबमें भर गया।
बन्द बलि होकर रहेगी बस निर्णय सभी ने कर लिया।।
बलि की हिंसक प्रथा पर यहाँ सभी ब्राह्मण क्यों अड़े हैं।
कुछ तो कारण होगा इसका सोचते यह सब खड़े हैं।।

इस जग में लोभ ही तो पाप का बाप कहलाता यहाँ।
सच है पाप कोई लोभ से बढ़कर नहीं होता महा।।
ये सब पुजारी दो चार पैसे हर बलि पर पाते हैं।
ये बलि प्रथा को बन्द करने से यहाँ कतराते हैं।।

जब शाहपुरा महाराज को राज यह सारा बताया।
आदेश देकर इस प्रथा को बन्द उनने तब कराया।।
बोले पुजारी को नियम से राज्य धन देता रहेगा।
कभी हिंसा नहीं होवे यह खबर भी लेता रहेगा।।

सुनकर खुश हुए सारे पुजारी हुआ जय जय नाद था।
उस क्षण मूक जीवों में नया फैला हुआ आल्हाद था।।
जयकार गुरुवर का हुआ वह जिन धर्म का जयकार था।
मूक जीवों पर गुरु ने यहां निशदिन किया उपकार था।।

सद्गुण मन में धारकर, करे कर्म निष्काम।
बाहर डोले क्यों मनुज, यह तन चारों धाम।।
बायबिल जो बतला रही, कहती वही कुरान।
आगम में वही बात है, पढ़लो आप पुराण।।

अभिलाषा बढ़ने लगी, बढ़ जाते हैं पाप।
सीमित है इच्छा अगर, फिर कैसे सन्ताप।।
अपने अपने पंथ हैं, अपने अपने राग।
पादप बेले हैं बहुत, मगर एक है बाग।।

राग द्वेष ईर्ष्या सहित, मद का होगा अन्त।
हो पायेगी शान्ति तब, कहते सारे सन्त।।
हम अच्छे बाकी बुरे, यह नहीं नीति ठीक।
जब तक मन पावन नहीं, प्रभु नाहीं नजदीक।।

कण कण में अल्ला बसा, श्वांस श्वांस में श्याम।
जल में वो ही रूप है, कहो भले श्री राम।।

बन्द इस धरती की बोली हो गई,
अम्बर आंसू आज रह रह डालता।
मां का आँचल आज बेटे खींचते,
क्रोध अपने वक्ष में मनुज पालता।।

टुकड़ों टुकड़ों में करी, किसने धरा,
गगन को नहीं आज तक बाँट पाये।
उठाली मजहब की दीवारें कई पर,
बनाकर खाई उसे न पाट पाये।।

राम, कृष्ण, महावीर, गौतम बुद्ध व,
मुहम्मद ने यहाँ दिया सन्देश था।
कौम के खातिर वह वाणी नहीं थी,
ईसा का इस विश्व को उपदेश था।।

सभी निर्वसन या वसन धारी सन्त,
नित शास्त्रों का सार ही वतला रहे।
गांठ वांधे आदमी, ना जाने क्यों?
गुत्थियों में और यहां उलझा रहे।।

कुंभ अमृत से भरे हैं धरती पर,
बन्द जब तक नैन कुछ न पा सकोगे।
जल रहा है लावा जब तक वक्ष में,
दूसरों को तुम ना अपना सकोगे॥

धर्म है जिस ठौर हिंसा ना होती,
अधर्म का अहिंसा से नाता नहीं।
जहां मन में आसुरी वृत्ति समाई,
मुक्ति के मग तक कोई जाता नहीं॥

तुम शस्त्रों को लेकर साथ चलोगे,
शास्त्रों की भाषा समझ न पाओगे।
शान्ति शान्ति चिल्लाते तुम रहो भले,
पर शान्ति के दर्शन न कर पाओगे॥

दु:शासन आया धरती पर देखो,
अब हर ओर दशानन फैल रहे हैं।
मामा कारण आज भानजे रोते,
आज समय को सारे ही ठेल रहे हैं॥

बोलो कौन हरण सीता का करता,
विवश युग का राम नहीं सुध ले पाता।
द्रुपद सुता का चीर खींचती सड़कें,
कृष्ण देखता आगे ना बढ़ पाता॥

कलियुग है ऐसी बातें करो न तुम,
जन्म दिया है कलियुग ने गांधी को।
गोरी सत्ता, नेल्सन मण्डेला की,
रोक नहीं पाई उठती आंधी को॥

तानाशाही साम्यवाद पर छाई,
टुकड़े टुकड़े यहां सोवियत संघ हुआ।
टुकड़ों में बंटा जर्मनी एक बना,
देख देख सारा ही जग दंग हुआ॥

अजगर इराक़ लगा कुवेत निगलने,
महाशक्तियों ने मिल उसे बचाया।
तम के पीछे भोर सुहानी समझो,
हिंसा से सुख कभी न कोई पाया।।

वे मुनि के उपदेश वीर की वाणी,
मुझको पल पल कल्याणी लगती है।
भू पर बिखरा आज लहू अपनों का,
रोती दुनियां समझ नहीं जगती है।।

विचरण करते पन्ना जहां जहाँ भी जाते।
प्रवचन करके सबको मानव धर्म बताते।।
सोना जब तक नहीं आग में तप पाता है।
चमक न आती कंचन नहीं कहलाता है।।

बाधा और विपत्ति जो जितनी पाता है।
सज्जन तो मुश्किल देख नहीं घबराता है।।
आया जेष्ठ का मास भास्कर आग गिराता।
तवा बनी तपती धरती तन जल जल जाता।।

खग मृग सारे बैठ छांव में दिवस बिताते।
मग में शोले बिछे पांव कोई न बढ़ाते।।
विक्रम संवत् उन्नीस सौ पिच्यासी आया।
सरवाड़ नगर को मुनिवर ने कदम बढ़ाया।।

नगर जनों को मुनि की वाणी बहुत सुहाई।
सुनने आते हिन्दू मुस्लिम और ईसाई।।
गीता कुरान सभी के उद्धरण मुनि देते।
वाणी के जादूगर लोग सभी थे कहते।।

इस्लाम में भी हिंसा का निषेध बताया।
मगर कुरान को कोई भी न समझ पाया।।
कई आयतें जीव दया की बात बताती।
दुनियां मोहम्मद की वाणी समझ न पाती।।

गौ हत्या करे कोई भी या नशा कोई।
गुलाम बना बेचे या वृक्ष काटे कोई।।
ये चारों बड़े गुनाह नरक में ले जाते।
कहती यहां कुरान मुहम्मद भी फरमाते।।

गूढ ज्ञान यह जान सभी ने जय जय बोली।
कुछ ने सोचा मौका चलादो आज गोली।।
ईर्ष्यालु जनों ने अपनी बस हवा चलाई।
उस सन्त ने आज कुरान पर नज़र उठाई।।

इस्लाम आज खतरे में मुसलमान जागो।
मुर्दा बन क्यों सोये अब तो उठो अभागो।।
सोचो एक साधु ने सबको झकझोर दिया।
पावन कुरान का सरे आम अपमान किया।।

निकल गये हथियार हवा में गर्मी फैली।
एक मौलवी ने सुलझाई वहां पहेली।।
मत खोओ तुम होश जोश में आकर बन्दो।
मुनिवर वे महान सुनो रे अक्ल के अन्धो।।

फिर भी यदि कुछ बात हुई तो हम जायेंगे।
मुनि का क्या उद्देश्य पता हम लगवायेंगे।।
एक भले मुस्लिम ने समाचार पहुँचाये।
सुना श्रावकों ने तो सारे ही घबराये।।

सारी बात उन्होंने मुनिवर को बतलाई।
संग मौलवी जी के आ पहुँचे कुछ भाई।।
मधुर स्वरों में मुनि ने उनको पास बिठाया।
तब ज्ञानी ज्ञानी को पाकर के मुसकाया।।

कहे मौलवी आज आपकी सुनकर वाणी।
भड़क रहे हैं आज नगर के भावुक प्राणी।।
क्या सच है क्या झूठ आप अब पुन: बतायें।
क्या कहती कुरान समझ यहां हम भी जायें।।

जो भी करते प्रश्न मुनि वहाँ उनके आगे।
बोले मौलवी हाँ नींद में जैसे जागे ।।
हिंसा का अंजाम बुरा कुरान सिखाती।
फरमान खुदा का हमको हर बार बताती ।।

हम तो कर तारीफ हृदय से उसे लगाते।
कौन मूर्ख है जो इसको तोहीन बताते ।।
सच्चे आलिम आप मुनि जी क्षमा कीजिए।
यहाँ धर्म का लाभ हमें कुछ और दीजिए ।।

हुए लोग गद्गद् मौलवी संग जो आये।
जागे सबके भाग दर्श को जो भी पाये ।।
नहीं मौलवी जी मैं घर ना जाने दूंगा।
समय आपने लिया उसी की कीमत लूंगा ।।

सुन समय की कीमत अचरज में वे पड़ गये।
आज तो मुनिराज भी बात पर थे अड़ गये ।।
कीमत यह कि आपको माँस भक्षण छोड़ना।
अहिंसा की ओर जिन्दगी को मोड़ना ।।

जीवन भर तो मैं निर्वाह न कर पाऊँगा।
पर दो महिने तक मैं वचन को निभाऊँगा ।।
मौलवी ने कहा अरे वे तो ओलिया हैं।
यहाँ दर्शनों से भरे खाली झोलियाँ हैं ।।

पल पल तारीफ वह कुरान की करते रहे।
वहां प्यार के चश्मे नूर से झरते रहे ।।
आयतें कुरान की जब वे मुख से बोलते।
मैं भी अपने आप को रह गया टटोलते ।।

वे मुनि तो मुझे लगता ओलिया फकीर है।
सिर्फ दर्शन मात्र से चमकती तकदीर है ।।
जब तक रहेंगे वे नित्य दर्शन पाऊँगा।
बिन किये दर्शन कभी मैं न रोटी खाऊँगा ।।

संकट में छोड़े नहीं, कभी धैर्य का साथ।
ऐसे पुरुषों की सदा, बनती बिगड़ी बात ॥

भक्त बन गया मौलवी, किया मांस का त्याग।
दर्शन मुनिवर के हुए, जागे सोये भाग ॥

वाणी से मन जीत कर, करे ज्ञान की बात।
ऐसे साधु सन्तों को, झुकते जग में माथ ॥

नवकार की महिमा बताकर देते दया का दान हैं।
विश्व में सब जन बराबर वे सिखाते नित ज्ञान हैं ॥
उन्नीस सौ छियासी विक्रम उनको पहुँचना थांवला।
नित दर्शनों को हो रहा था उस ग्राम का जन बावला ॥

कर्म पीड़ा तो सभी को निशदिन भुगतनी पड़ती यहाँ।
धर्म का भी कर्म का भी यह जग क्षेत्र बनता है यहां ॥
वहां पांव में पीड़ा बढ़ी मुनि धूलचन्द जी ने कहा।
आगे बढ़ सकता नहीं उठी है वेदना मेरे महा ॥

आ गया पुष्कर राज यहीं पर मैं कहीं खो जाऊँगा।
मैं बना हूँ मिट्टी से और मिट्टी ही हो जाऊँगा ॥
भाद्रपद की शुक्ला चौवदस वह मिला हीरा धूल में।
उस धूल की खुशबू अभी भी हम नित्य पाते फूल में ॥

अब पन्ना को लगने लगा कि पाँव नीचे भू नहीं है।
जिनका साया मिले मुझको मेरा वह कोई नहीं है ॥
रहे पन्ना ही सबसे बड़े विश्वास ले चलने लगे।
अब देख प्रतिभा श्रावकों के नित मन कमल खिलने लगे ॥

आग्रह मसूदा वालों का इस बार वे न टाल पाये।
अब तो चातुर्मास हेतु पन्ना मसूदा चले आये ॥
ज्ञान युक्त आगम की वाणी सुन जन सभी हर्षित हुए।
देख राव विजयसिंह जी भी मुनि ओर आकर्षित हुए ॥

रोक हिंसा पर लगाई अब तो पट्ट भी लिखवा दिये ।
सार्वजनिक हिंसा नहीं हो यह पट्ट भी बनवा दिये ।।
दिन में आगम वाणी होती रात में नित राम गाथा ।
समन्वय की भावना का कैसा सुन्दर बना नाता ।।

सब जातियों के लोग आकर नित रात्रि में बैठ जाते ।
श्री राम की कथा मनोहर पन्ना मुनि सबको सुनाते ।।
वैष्णवों ने कार्तिक में तुलसा बिन्दोली तब निकाली ।
प्रवचन के बीच में बाधा उन्होंने आ करके डाली ।।

जब प्रेम की भाषा क्षमा के साथ में मुनि ने सुनाई ।
वे लाठियाँ नीचे हुई कुछ कटंकों की चल न पाई ।।
सिर झुके सभी शर्म से वे पन्ना ने ऊपर उठाये ।
तोड़ने नहीं जोड़ने में नित समय शक्ति को लगाये ।।

पादपों में जीव होता यह जैन सारे जानते हैं ।
भैषज्य के गुण तुलसी में यह सारे ही मानते हैं ।।
हर वृक्ष की पूजा करो ये देव हमको प्राण देते ।
छाँव देते सुमन देते देके फल यही त्राण देते ।।

पर्यावरण इनसे सुरक्षित पुत्र के सम इन्हें पालो ।
बेरहम बनकर इन्हें तुम आ लोभ में मत काट डालो ।।
उठती लालसाएं लाभ की भला नहीं कर पायेगी ।
प्रदूषण से जिन्दगी ही घोर नरक सी बन जायेगी ।।

वनों में जाकर देखिये वहाँ वृक्ष कितने ही मिलेंगे ।
निशदिन टहनियों को देखिये फूल कितने ही खिलेंगे ।।
नित रूप भी है रंग भी है अलग है सौरभ सभी की ।
वे क्या कभी लड़ते मिले हैं क्या शिकायत भी कभी की ।।

आज अहम् की तुष्टी के खातिर अड़ रहा है आदमी ।
हर पल आदमी से रात दिन अब लड़ रह है आदमी ।।
है राक्षसी यह युद्ध प्रवृत्ति इसे हमको छोड़ना है ।
अब वक्त कहता आदमी को आदमी से जोड़ना है ।।

नित्य प्रतिबोध देकर के मुनिश्री मन सभी का जीतते।
दिन महिने वर्ष उनके सदा देशना में बीतते॥
पूर्ण चातुर्मास कर वहाँ अब पाँव आगे को बढ़ाये।
फिर भीलवाड़ा किशनगढ से वे विजयनगरी में आये॥

हुए सफल चातुर्मास सब ही धर्म की ज्योति जलाई।
जब धर्म की गंगा बही तो डुबकियां सबने लगाई॥
वहां से फिर जोधपुर में गुण ज्ञान की गंगा बहाई।
संयुक्त चातुर्मास की वेला सदा सबको सुहाई॥

दया में यदि दान है तो, है स्वर्ण में जैसे सुहागा।
विजय उसी का वरण करती क्रोध को जिसने है त्यागा॥
मुनिवर जीत कर सबका हृदय पूरब दिशा में बढ़ गये।
कर बद्ध होकर जो खड़े थे चेहरे उनके पढ़ गये॥

बैशाख मास तपती दुपहरी धरा तवे सी जलती थी।
हर ओर अजब बेचैनी से राहत न किसी को मिलती थी॥
नदियों का पानी चूक गया तालों का जल भी सूख गया।
खग बैठ कूप की जगत स्वयं से उत्तर पा दो टूक गया॥

लू चलती भुलसाने वाली पंछी नीड़ों में दुबक गये।
अकुलाकर मां की गोदी में कितने ही बालक सुबक गये॥
ऐसी ऋतु में पन्ना मुनि सन्तों के संग संग चलते थे।
परवाह नहीं थी उनको तो पांवों में छाले खिलते थे॥

हुआ नसीराबाद में आना सुन स्वागत में श्रावक सब दौड़े।
आये हैं आये पन्ना मुनि दर्शन को सबने घर छोड़े॥
जूतियां उठाकर हाथों में पगड़ियां कमर पर बाँध चले।
वहां कुरते उलटे पहन लिए पर सभी मुनि से आय मिले॥

जब सुना नारियों ने तो वे भी सुध बुध सारी भूल गईं।
गुरुदेव हमारे घर आये कुछ इधर गईं कुछ उधर गईं॥
मंजन आँखों पर आंज लिया होठों पर अंजन लगा गईं।
बालक को सुलाने के बदले सोये हुए को जगा गईं॥

पाउडर से कुछ ने मांग भरी, गाल पै कुछ के रोली थी।
वहिनों अब जल्दी चलो चलो वे सब आपस में बोली थी।।
वन्दना करी सबने जाकर अपना जीवन सफल बनाया।
जय महावीर की गूंज उठी मिलकर सबने मंगल गाया।।

एक स्थान पर ठहर कर, की पन्ना ने बात।
हवा नही आती यहाँ, कैसे गुजरे रात?
कैसे गुजरे रात, स्थान तो ठीक नहीं है।
इससे उत्तम स्थान कहीं नजदीक नहीं है?
'शशिकर' थोड़ी दूर पर, लिया स्थान है देख,
लेकिन इसमें भूत है, बोला श्रावक एक।।

पन्ना बोले वीर के, सन्त सभी हैं दूत।
महामंत्र नवकार तो, क्या कर लेगा भूत।।

स्वच्छ वायु से युक्त वह तो भवन भुतहा सा खड़ा था।
जंग खाया ताला अभी भी द्वार के ऊपर पड़ा था।।
उसको देखकर मुनि ने कहा यह स्थान तो उपयुक्त है।
अब आ गये हैं दूत तो जानो भूत से यह मुक्त है।।

अग्रवाल श्री ताराचन्द जी मन ही मन घबरा रहे।
गुरुदेव खुद ही चाह रहे वे मना कर ना पा रहे।।
वर्षों हो गये उस भवन में रात कोई रह न पाया।
पत्थरों की वर्षा होती लोगों के मन भय समाया।।

कुछ श्रावकों ने कहा गुरुवर आप यह क्या कर रहे हैं।
न जाने क्या हो रात में हम तो अभी से डर रहे हैं।।
पन्ना वोले आज पूरा ही फैसला हो जायेगा।
यहां जो भी हारेगा वह कल रह नहीं फिर पायेगा।।

जग में सन्त होकर मौत से भय हम नहीं खाते यहां।
मौत को छाया की भाँति पीछे पड़ी पाते यहां।।
भू पर हम अमंगल की कभी कामना करते नहीं हैं।
मौत के सीने पर चढ़कर यहाँ कभी डरते नहीं हैं।।

रात काली वह भयानक लोग सारे जा चुके थे।
कुछ डर के मारे पड़ौसी भी बत्तियाँ बुझा चुके थे।।
शास्त्री विश्वंभर दत्त अरु साथी मुनि छोटेलाल जी।
ले बैरागी पृथ्वीराज को बैठे पन्नालाल जी।।

अब ध्यान में हो मग्न पन्ना रत रहे बस साधना में।
मृत्यु पर भी विजय पाले वह शक्ति है आराधना में।।
ठीक बारह बजते ही वहाँ पाषाण की वर्षा हुई।
आवाज सुनकर जग गये थे सोये पड़ौसी भी कई।।

उदात्त स्वर में पन्ना ने शान्ति का सन्देश बोला।
डर कर के जायेंगे नहीं हम स्वर यह सावेश बोला।।
अब है भला इसमें तुम्हारा बन्द हो उत्पात सारे।
ऊँ शान्ति ऊँ शान्ति तू अब तो अरे मूरख समझ जा रे।।

अनवरत पाषाण की बौछार में स्वर मुनि के गूंजते।
दूर जो भी सुन रहे थे पल पल पाँव उनके धूजते।।
होते ही उपद्रव बन्द अब तो भीड़ उठकर आ गई।
सारा घर पटा पाषाण से पर चमक सब पर छा गई।।

सुनो, पन्ना बोले बन्धुओं डर की नहीं कुछ बात है।
सच मानों इस भवन में भूत की भी यही अन्तिम रात है।।
वह भग गया है भवन से फिर लौटकर नहीं आयेगा।
पांव जो घर में धरा तो यहाँ बहुत ही पछतायेगा।।

सारी रात की घटना सुनी वही ले उल्लास आया।
तपोबल के महाबली को सबने आ मस्तक झुकाया।।
कुछ दिन वहां रहकर मुनि ने तप की ताकत को बताया।
जयकार सबने मुनि के संग वीर वाणी का लगाया।।

बढ़ चले आगे पुनः उन्हें चलना ही बस रास आया।
वे विचरते जाते चले फिर निकट वर्षावास आया।।
उस भीलवाड़ा के नगर जन ताकते पलकें बिछाये।
सन्देश पर सन्देश आते देर गुरुवर ना लगायें।।

शुभ दिवस को पन्ना गुरु ने तब मंगल किया प्रवेश था ।
अहिंसा ही धर्म है इसका सबको दिया उपदेश था ।।
सोचिए तो ये सब रेशमी वस्त्र जो धारे हुए हैं ।
इनके पीछे कितने रेशम कीट भी मारे गये हैं ।।

आप वस्त्र ऐसे पहनकर देते हिंसा को बढ़ावा ।
अहिंसा के उपासक यहाँ लेते कीटों का चढ़ावा ।।
सच्चे हो पुजारी वीर के तो वस्त्र रेशम त्याग दो ।
भाई नन्हें नन्हें कीटों का तुम जगा सब भाग्य दो ।।

अपने सीने के जरा हाथ लगाओ लोगों ।
मन में बैठा है उसे आप जगाओ लोगों ।।
आज नैन मेरे तुम्हें सत्य बतादें सारा ।
यह खून क्यों नैन चढ़ा आज बताओ लोगों ।।

तुम आगम में जो आया है वही समझाओ ।
अरे पिटकों का यहाँ अर्थ भी कुछ बतलाओ ।।
हाथ शोणित से रंगे आज तुम्हारे कैसे ?
कैसी महावर है जरा हाथ तो दिखलाओ ।।

झरने करुणा के सभी आज यहां सूखे हैं ।
वक्त की चाल को देखो तो कहां चूके हैं ।।
हम तो इन्सान हैं हैवान नहीं हैं भाई ।
लगता लाशों के सभी लोग अभी भूखे हैं ।।

लो नाग हिंसा के यहां आज चहुँ दिश फैले ।
फागुन रंगों से नहीं लोग लहू से खेले ।।
बीन हाथों में लिए हमने सपेरे देखे ।
तन से उजले थे मगर मन से सभी थे मैले ।।

बस उनका चले तो वे कली खिलने ना दें ।
चन्दन बाला को कभी वीर से मिलने ना दें ।।
आम्रपाली को पता बुद्ध का चल पाये ना ।
गलियों से मेरे गांधी को निकलने ना दें ।।

हिंसा हारेगी अहिंसा ही यह जीतेगी।
दो घड़ी बाद सही रात यह बीतेगी।।
मुझे विश्वास है भारत के सभी लोगों पर।
शुभ वह भाव सदा सन्तों के सरिस चीतेगी।।

पहने रेशम के वसन, किया सभी ने त्याग।
समझेंगे ऐसे वसन, जैसे जलती आग।।
घर में लायेंगे नहीं, करें नहीं व्योपार।
खाते हैं सौगन्ध हम, मन में नेक विचार।।

नित अहिंसा की भावना को,
मनुज में हर पल जगाते।
नैया जो मंझधार होती,
पार मुनि उसको लगाते।।

जिन शास्त्रों पर चर्चा होती,
जानते उसको बताते।
होता विवाद का विषय अगर,
समझते उसे समझाते।।

पूज्य जवाहरलाल जी बड़े,
ज्ञानी सन्त आचार्य थे।
सब कथन उनके शास्त्र सम्मत,
सहज में ही स्वीकार्य थे।।

पन्ना मुनि ने उनको लिखकर,
विचार जाने और कहे।
स्वाध्याय हेतु पत्र उनके,
आते और जाते रहे।।

भिणाय चातुर्मास ने वहां,
साधना के गुल खिलाये।
अब मरुधरा के सन्त उन से,
सीखने कुछ चले आये।।

गुलाबपुरा और विजय नगर,
वे स्वयं पर इठला गये।
मुनिवर का चातुर्मास वहां,
ये नगर दोनों पा गये॥

गये घूमते मुनिवर मसूदा,
ज्ञान की वाणी सुनाई।
दीक्षा वैरागिन की होगी,
राज ने बाधा लगाई॥

वह बहिन मन में भावना वैराग्य की नित ला रही थी।
अड़चनें दीक्षा में उसके कई रह रह आ रही थी॥
राव विजयसिंह मसूदा को भ्रमित कुछ लोगों ने किया।
सुगन कंवर की दीक्षा न होगी मैंने मुख से कह दिया॥

अब पन्ना भी पहुँचे मसूदा बात वहां सबकी सुनी।
सभी को प्यार से समझाया तो बात सारी ही बनी॥
साधुओं के बनने में यहां राज की बाधा रहेगी।
वे आने वाली पीढ़ियां आपको फिर क्या कहेंगी॥

क्षत्रिय थे तीर्थंकर सभी रहे राजकुल की शान थे।
जान लो इतिहास को अभी बने धर्म की पहचान थे॥
सदा कठिन मग त्याग का है पुण्य होते वे ही चलते।
स्नेह के बिन दीप बोलो वे रात में क्या कभी जलते॥

दिन दिन घोर भौतिकता पनपती जा रही संसार में।
सच्चे सन्त ही जीवन बिताते सदा पर उपकार में॥
आज चाहते जो दीक्षा लेना स्नेह उनको दीजिये।
विश्व के कल्याण का यह पावन कार्य अनुपम कीजिए॥

यह भावना कल्याणकारी आपने सच बोल दी है।
गुरुदेव मेरी बन्द आँखें आपने आ खोल दी हैं॥
हुई दीक्षा में बाधा खड़ी सब जानकर बेचैन थे।
पन्ना ने हल ढूँढ़ डाला हुए चमत्कृत सब नैन थे॥

जयमल पंथ में दीक्षा हुई,
हर ओर जय जय कार था।
वे मरुधरा के सन्त कहते,
वह तो महा उपकार था॥

चलके वर्षावास हेतु, वे
विजय नगरी में आये।
उगते चन्द्रमा को देखने,
नैन चातक थे लगाये॥

वह नानक जैन श्रावक समिति,
थी देन वर्षावास की।
सम्वत् चौरानवें की नींव,
उस जैन छात्रावास की॥

गृहस्थ उपदेशक बने वहां,
हाँ नूतन यह प्रयोग था।
स्वाध्यायी संघ की स्थापना,
गुलाबपुरा में योग था॥

मुनि पूर्ण वर्षावास करके,
बढ़ गये उत्तर दिशा में।
वह एक सूरज चला जाता,
भोर लाने हर निशा में॥

टाँटोटी की भावना वहाँ,
टाल मुनि पाये नहीं थे।
विरक्त कुन्दन ले के पन्ना,
आप अब आये वहीं थे॥

पन्ना के दर्शन हुए, हर्षित जैन समाज।
कृपा आपकी हो गई, खुश हम सारे आज॥

□□

अष्टम सर्ग

महाख्यात : जग विख्यात

मंगलाचरण

सद्‌गुरु का इक सहारा हमको मिल जाये अगर।
लक्ष्य की चिन्ता नहीं आसान बन जाये डगर॥

सूर्य के सम गुरु होते,
तिमिर अन्तर का मिटाते।
मोह के परदे गिरे जो,
गुरु आकर के हटाते॥

गुरु है ज्ञानी अगर तो किसको कैसी है फिकर।
लक्ष्य की चिन्ता नहीं आसान बन जाये डगर॥

दिग्मूढ़ बन कर मन यहां,
कुछ नहीं जब सोच पाये।
ऐसे समय ज्ञानी गुरु,
राह भटके को दिखाये॥

घर, गली व गांव संग जय नाद करता है नगर।
लक्ष्य की चिन्ता नहीं आसान बन जाये डगर॥

जो खुद तरे भव सिन्धु को,
और जगती को भी तारे।
नमन मेरा उन गुरु को,
डूबते को जो उबारे॥

सद्‌गुरु के ज्ञान से ही सफल जीवन का सफर।
लक्ष्य की चिन्ता नहीं आसान बन जाये डगर॥

चरित नायक गुरु पन्ना,
लेकर चले आलोक को।
किया आप्लावित उन्होंने,
ज्ञान से इस लोक को॥

त्याग संयम से मुनि बन मुक्ता से आये निखर।
लक्ष्य की चिन्ता नहीं आसान बन जाये डगर॥

पन्ना मुनि जाते जहां जहाँ आगम का ज्ञान सुनाते थे।
वे जंगल में भी रुक जाते तो मेले खुद जुड़ जाते थे॥
उनकी धर्म युक्त वाणी सुनकर लोग सभी सुख पाते थे।
गुरुवर के गौरव गान सभी कोमल कंठों से गाते थे॥

चातुर्मास गुलाबपुरा का उपलब्धि नई लेकर आया।
श्री प्राज्ञ गुरु की कृपा हुई जनमन सारा ही हरसाया॥
बच्चे, बूढ़े, युवक सारे धर्मलाभ निशदिन पाते थे।
प्रभु महावीर की वाणी सुनकर जीवन सफल बनाते थे॥

यदि व्यक्ति से व्यक्ति नहीं जुड़े समाज नहीं बन पाता है।
विराट अगर समाज बने तो व्यक्ति ऊपर उठ जाता है॥
श्री प्राज्ञ मुनि की वाणी का वह मर्म सभी ने जान लिया।
श्रीनानक श्रावक समिति का सबने मिलकर के गठन किया॥

सत्वर सदस्य बन गये कई सब करते थे उसकी चर्चा।
उदार दान दाताओं से वहाँ चलने लगा उसका खर्चा॥
सामाजिक संस्था बना चुके यह काम गुरु ने नेक किया।
आध्यात्मिक उन्नति कैसे हो इस पर तुमने क्या ध्यान दिया॥

स्वाध्याय स्वयं में तप होता है सज्जन कुछ आगे आये।
स्वाध्याय संघ निर्माण करे उन्नत आत्मा आप बनाये॥
यह देश बहुत लम्बा चौड़ा सन्त बहुत ही हैं थोड़े।
बनकर के स्वाध्यायी गृहस्थ यहाँ अपने जीवन को मोड़ें॥

जिस जगह नहीं है संत-सती वहाँ स्वाध्यायी जायेंगे ।
पर्युषण के काल में वे ही जिन धर्म की गंग बहायेंगे ।।
धर्म प्रेमी श्रद्धालु श्रावक अब स्वाध्यायी बन गये कई ।
गुलाबपुरा व बिजयनगर में आई चेतना एक नई ।।

प्राज्ञ मुनि के इन भावों का सब संतों ने सत्कार किया ।
सद् गृहस्थों के संग सन्तों ने इसका खूब प्रचार किया ।।
जहां पांव पन्ना मुनि धरते महक धरा वह जाती थी ।
सब कलुष भाव मिट जाता था धर्म लहर आ जाती थी ।।

सत्य, अहिंसा के पग पग पर पन्ना मुनि ने सुमन खिलाये ।
वे सब मुस्काते लौट गये जो मुर्झाये मन से आये ।।
मुनिवर के कारण टाँटोटी का ग्राम ग्राम में मान हुआ ।
कुप्रथा अगर कोई भी थी तो उसका ही अवसान हुआ ।।

फिर जामोला में कुन्दनमल जी दीक्षा लेकर सन्त बने ।
छू छू कर जिनको इस वसुधा के पावन सारे पंथ बने ।।
अगला फिर चातुर्मास गुरु ने किया मसूदा में जाकर ।
जीत लिया सबके ही मन को धर्म ध्यान के ठाठ लगाकर ।।

निगाह हमेशा चहुँ ओर हर पल दौड़ाते रहते थे ।
मर्यादा में रहकर के वे मन की सब बातें कहते थे ।।
यहाँ स्वार्थ और प्रमाद उन्हें तो कभी नहीं था छू पाया ।
जिसके भी मन में स्वार्थ भरा था नहीं गुरु का हो पाया ।।

वह वर्ष अनावृष्टि का था तब जलधि से बादल चले नहीं ।
पानी पानी सब करते थे जगति के चेहरे खिले नहीं ।।
मगरे के उज्जड़ लोगों ने मिलकर मन में यही विचारा ।
मिलकर लूटें विजयनगर को दृढ़ अब तो संकल्प हमारा ।।

एक श्राविका ने आकर के चुपके रहस्य यह बतलाया ।
मगरे के लोगों ने मिलकर चर्चा का अब विषय बनाया ।।
श्यामगढ़ में आज सैकड़ों मेरात इकट्ठे हो जायेंगे ।
सुबह हुई बस विजयनगर को कदम सभी के बढ़ जायेंगे ।।

सुन खबर कानमल जी कूमठ से अब तो सारे जन चौंके।
रामीरमल जी भड़कत्या ने अब कहा इसे कैसे रोके?
गुरुवर बोले राव साहब को तुम अभी सूचना भिजवाओ।
हिम्मत की कीमत होती है आप नहीं अब घबराओ॥

विश्वास धर्म पर सभी करें, काले बादल छट जायेंगे।
आप सभी शुभ कर्म करें, अवरोधक खुद हट जायेंगे॥
निश्चित नगर में रहें लोग, नवकार मंत्र का जाप करें।
बाल नहीं बाँका होगा, बस त्रि तापों से आप डरें॥

रावत और मेहरात सैकड़ों शस्त्र लिए बढ़ते जाते।
ध्यान मग्न हो महामुनि अब महामंत्र जपते जाते॥
आरक्षी दल ने आगे बढ़ गोलियां हवा में चलवाई।
वे सभी लुटेरे भाग गये टली विपत्ति सिर पर आई॥

कृपा पन्ना की नहीं होती तो लहू नीर सा बह जाता।
सजग मुनि जो नहीं करते तो विश्वास सभी का ढह जाता॥
मुनिवर तो जन मन के रक्षक सद् राह सभी को दिखलाते।
दया भाव मानव को निशदिन मुनिवर पन्ना सिखलाते॥

सत्कर्म का सन्देश दे तरणि चलाये ज्ञान की।
भावना मन में हमेशा मनुज के उत्थान की॥
प्रेम का प्रारूप मानव को बनाना चाहिए।
तमस हो तो स्नेह की बाती जलानी चाहिए॥

अंधेरे को चीरकर सतत ज्योति जो प्रकटा रहे।
युग के चारण गाथा उनकी गा सदा मुसका रहे॥
ज्ञान के आगार मुनिवर नित पक्ष लेते सत्य का।
उचित जो होता नहीं वहीं विरोध करते कृत्य का॥

वे जालिया में धर्म की गंगा बहाकर बढ़ गये।
अरावली की घाटियाँ गुरु शिष्य को ले चढ़ गये॥
किया चातुर्मास पूरा थांवला से लौट आये।
धर्म की वृद्धि करी जन जन ने अपने सर झुकाये॥

गुरुदेव की वाणी सुनी वह भक्त उनका बन गया।
बनकर उपासक अहिंसा का वह जगत में तन गया ।।
जहां भी जाते गुरुवर प्रेम की भाषा पढ़ाते।
हर धर्म के हर जाति के लोग उनके पास आते ।।

साठ वर्ष से रियां के माहेश्वरी चलते विखण्डित।
एक कर पाये नहीं उनको अच्छे अच्छे पण्डित ।।
स्वर्णकारों के वहां दो दल हो रहे थे गाँव में।
कूल कैसे पायेगी पतवार नहीं हो नाव में ।।

कर बद्ध हो जब सभी ने भाव अन्तर के बताये।
उपदेश देकर गुरु ने एकता के गीत गाये ।।
गुरुदेव की वाणी असर मन पर सभी के कर गई।
वर्षों से खाई बनी थी वह मुनि के कारण भर गई ।।

पुण्य के प्रभाव से अब वहां मेल सब में हो गया।
सबका मन गुरुदेव के चरणों में आकर खो गया ।।
विरोध के अवरोध गुरु जहां जाते थे हटाते।
लड़ते आते सामने वही गले मिल निकल जाते ।।

सच्चे मन से विश्व को करते जो भी प्यार है।
भूल जग पाता नहीं उस मनुज का उपकार है ।।
धर्म जाति पंथ से जो संत बँध कर के चला है।
नहीं उसके हाथ से कभी ज्ञान का दीपक जला है ।।

भू के किसी भी भाग में विपत्ति कोई भी आती।
आँखें करुणा सिन्धु की सुन बात भर भर वहां जाती ।।
सारे मनुज हैं भाई भाई विश्व एक परिवार है।
शान्ति का संसार में बस प्रेम ही आधार है ।।

जाति भाषा धर्म का ले नाम मानव क्यों लड़े।
वे भी अपराधी यहां जो देखते रहते खड़े ।।
इंसान पर आई विपत्ति दूर करना धर्म है।
कर्त्तव्य का पालन करें बस यही सच्चा कर्म है ।।

डाकू लक्ष्मण सिंह ने उपदेश गुरुवर का सुना।
बदल कर जीवन का पथ सन्मार्ग को उसने चुना।।
गोविन्दगढ़ का वह वर्षावास सचमुच सुखद था।
था धर्म का मेला अनुपम आनन्द ही आनन्द था।।

अगला चातुर्मास गुरु ने भीलवाड़ा में किया।
अतिवृष्टि ने तभी निशदिन दुःखी जन मन को किया।।
बाढ़ से पीड़ित हजारों बहा आंसू रो रहे थे।
जल मग्न थे घर गांव बस सभी बेसुध हो रहे थे।।

आता पीड़ितों का आर्त स्वर बेध उनका मन गया।
श्रावकों को सहायता का बोध उनने वहां दिया।।
खारी नदी की बाढ़ ने दृश्य कुछ ऐसा मचाया।
कुछ गांव तो ऐसे बहे शेष कुछ रहने न पाया।।

दुष्काल फिर बंगाल का ऐसा भयंकर आ गया।
नहीं खाने को कुछ भी रहा तमस दिन में छा गया।।
देश की सरकार गोरी कुछ नहीं कर पा रही थी।
जानकर के जिन्दगी नित मृत्यु के घर जा रही थी।।

इस देश के इतिहास में दुर्भिक्ष वह बंगाल का।
वह चित्र बनकर रह गया था प्रान्त ही कंगाल का।।
भूख से मर मर पशु मृत्युलोक रह रह जा रहे थे।
आदमी मुर्दा पशु को कच्चा ही तब खा रहे थे।।

वह दृश्य उस दुर्भिक्ष का ऐसा भयानक छा गया।
तब पिता अपने पुत्र को ही मार करके खा गया।।
ब्यावर वर्षावास में सबको मुनिवर ने जगाया।
प्रेरणा दे श्रावकों को दान पीड़ित को दिलाया।।

बिजयनगर, गुलाबपुरा ने दो वर्षावास पाये।
कत्लघर जाते पशु वहाँ प्रेरणा देकर छुड़ाये।।
भिणाय वर्षावास था तभी कच्छ में भूकम्प आया।
मन में नया उल्लास ले श्रावकों ने धन भिजाया।।

मसूदा में मुनिवर ने साधना से मन को साधा ।
डोसी रिखबचन्द जी की दूर की थी प्रेत बाधा ।।
स्वर्ण थी दीक्षा जयन्ती स्वर्णिम चातुर्मास आया ।
भीलवाड़ा में मुनि ने धर्म का मेला जुड़ाया ।।

यह चरण किंकर कवि शशिकर तब जन्मा बडली ग्राम में ।
यह गुरु गाथा काव्य मय ले लिख रहा शुभ नाम में ।।
गुलाबपुरा की प्रगति हो गुरुदेव का जब मन गया ।
जैन विद्यालय वहां का तभी से गांधी बन गया ।।

आदर्श के वे देवता थे दर्शनों को लोग आते ।
चरण को छूकर के सारे धूल को मस्तक चढ़ाते ।।
दूर पर क्या हो रहा वे दूर से ही जान लेते ?
बिन कहे भी कई बातें वे नूर से पहचान लेते ।।

सुश्रावकों की भीड़ बैठी हाथ अपने जोड़कर के ।
बोले गुरु गंभीर बन अब मौन अपना तोड़ करके ।।
जंगल अगर अंजान है तो आपको जाना नहीं है ।
भूलकर वहाँ आपको अनजाने फल खाना नहीं है ।।

ढाबरिया मोहनसिंह जी ले के विद्यालय के बच्चे ।
पर्यटन करने को निकले मन में लेकर भाव अच्छे ।।
पास ऋषिकेश के उनका डेरा सुहाना लग रहा था ।
बच्चों की सुन खिलखिलाहट हिमालय भी जग रहा था ।।

एक झुण्ड हर्षित बच्चों का डेरे से बाहर आया ।
बादाम जैसा फल देखा तो खुश हो उसको खाया ।।
कुछ खाते ही बेहोश हुए कुछ ने खाकर थूक दिया ।
अब क्या होगा, अब क्या होगा सबने ही अब प्रश्न किया ।।

बेहोश पड़े बच्चों की हालत और बिगड़ती जाती ।।
बच्चों की टोली गुरुदेव का क्षण क्षण ध्यान लगाती ।।
विश्वास अगर सच्चा होता राह निकल ही आती है ।
मावस के अंधियारे को भी ज्योति मिल ही जाती है ।।

जोधपुर से देराश्री जी कार लिये वहां पर आये।
नमन किया ढाबरिया जी को हाथ जोड़कर मुस्काये।।
बेहोश देख बच्चों को बोले-अब ना देर लगायें।
मैं दिल्ली ले जाता हूँ इन्हें कार में आप सुलायें।।

गुरु कृपा थी इस कारण ही तत्काल यह सुयोग बना।
कल कहा गुरुवर ने जो होनी को हमने आज सुना।।
होनी को बतला देने की सिद्धि गुरु ने पाई थी।
उस दिव्य तेज के चरणों में जग ने पलक बिछाई थी।।

बिजयनगर, गुलाबपुरा का फिर वर्षावास आया।
स्वाध्यायी संघ बना इतिहास मुनिवर ने बनाया।।
जालिया से किशनगढ़ फिर गोविन्दगढ़ जाना हुआ।
जामोला से मसूदा अब बिजयनगर आना हुआ।।

मसूदा की धरा पावन पुनः उस दिन हो गई थी।
प्रभु की माला में मणियाँ सूर्य किरणें पो गई थी।।
बालचन्द जी लिए वल्लभ आये थे व्याख्यान में।
मन बदल उनका गया बस तब एक ही आख्यान में।।

पिता के संग पुत्र की भी भावना वहां जग गई।
वैराग्य ही लेना मुझे है लगन सच्ची लग गई।।
अब अनवरत वे ज्ञान का अभ्यास करने लग गये।
हृदय वीर की वाणी से वे नित्य भरने लग गये।।

फाल्गुन शुक्ला तीज अरु दो सहस ग्यारह साल आया।
पिता के संग पुत्र ने शीश सद्गुरु को झुकाया।।
ले के संयम पुत्र संग पिता भी हर्षा रहे थे।
वीर की जय बोलकर गुणगान पल पल गा रहे थे।।

बनके वल्लभ प्राज्ञ किंकर प्राज्ञ की ज्योति बढ़ाते।
गुरु चरण में बैठकर के ज्ञान मस्तक में चढ़ाते।।
सब आगमों का ज्ञान करके न्याय को भी पढ़ गये।
बाल वल्लभ गुरु जी का पाकर सहारा बढ़ गये।।

अब उम्र का ढलान था अशक्त पन्ना हो रहे थे ।
बिजयनगर के लोग सब बाट उनकी जोह रहे थे ।।
नव शिष्यों को ले संग में पन्ना जब पहुँचे वहाँ ।
अशक्त गुरु जी आप हैं अब आपको रहना यहाँ ।।

दो हजार बारह का विक्रम आ गया चौवीस में ।
अजमेर वर्षावास केवल दिया उनने बीस में ।।
विचार श्रमण संघ का, पहले आपने मन में किया ।
राष्ट्र स्तर पर आपने ही फिर रूप नव इसको दिया ।।

व्यवस्था की जो समिति विद्वान मुनियों ने बनाई ।
आप संचालक बने तो सभी ने खुशियाँ मनाई ।।
संघ का उत्थान हो नित यह आपका उपदेश था ।
"संघे शक्तिः कलौयुगे" यह आपका सन्देश था ।।

आचार्य आत्माराम जी जब तज गये संसार को ।
महत्व दिया संघ ने तब फिर पन्ना के विचार को ।।
आनन्द ऋषि ज़ी योग्य हैं, नाम पन्ना ने सुझाया ।
एक स्वर में संघ ने आचार्य उनको ही बनाया ।।

प्राज्ञ मुनि पद के न भूखे नित दूर पद से वे रहे ।
मानते श्रावक श्रमण सब बात जो पन्ना कहे ।।
संगठन के सजग प्रहरी दूरदर्शी महा ज्ञानी ।
स्वर्ण अक्षर में लिखे तो भी कम गुरु की कहानी ।।

संगठन की भावना का बिगुल जो मुनि ने बजाया ।
बन वही तो श्रमण संघ सामने जग के है आया ।।
टूटे हुए को जोड़ना प्राज्ञ मुनिवर जानते थे ।
संगठन के पक्षधर की बात सारे मानते थे ।।

धर्म का हो संगठन नित जय घोष वे करने लगे ।
हर धर्मप्रेमी में नया ही जोश वे भरने लगे ।।
एकता का पथ सदा आगे हो हो कर बताते ।
त्रिरत्न की उस मूर्ति को देख सारे सिर नवाते ।।

दस हो चाहे बीस हो श्रावक उनके पास आते।
बात तत्व दर्शन की प्राज्ञ मुनि प्रतिदिन बताते।।
कु प्रथा को त्याग कर ही लोग आगे बढ़ सके हैं।
संस्कारित ही समय के शिखर ऊपर चढ़ सके हैं।।

निशदिन बालकों में त्याग के भाव आना चाहिए।
कर्म ही फलते जगत में उनको सिखाना चाहिए।।
पथ प्रभु महावीर का है विश्व में कल्याणकारी।
सेवा अरु सहयोग बिन निर्माण भी विनाशकारी।।

रूढ़ियां अरु कुप्रथाएं रोग बनकर पनप जाती।
सुशिक्षा के प्रचार से धीरे-धीरे सिमट जाती।।
कुप्रथाओं पर कुठाराघात जिसने भी किया है।
समय आने पर सभी ने मान उसको ही दिया है।।

क्रान्त दर्शी वीर से सदियों में जाकर जन्म लेते।
पथ भ्रमित इस विश्व को वे पथ पुनः नूतन दिखाते।।
रूढियाँ हैं बेड़ियाँ तो कुप्रथाएँ हथकड़ी हैं।
उठ न पाता वो कभी भी पांव जिसके ये पड़ी हैं।।

समाज का उत्थान बिन शिक्षा के हो न पायेगा।
शिक्षित न हो पाया वह पीछे यहाँ रह जायेगा।।
ग्राम हो या नगर वे महत्ता शिक्षा की बताते।
ज्ञान दे ज्ञानी मुनि पिछड़ों को आगे यहां लाते।।

ईश को पाना यदि तो दीन की कुटिया में जाये।
कर के सेवा दीन की दर्श सब ईश्वर का पाये।।
नित मानकर भगवान तुम सब दीन की सेवा करो।
कर्म सब कट जायेंगे सदा दीन की पीड़ा हरो।।

पाठ शालाएं खुलाते ज्ञान शालाएं खुलाते।
औषधालय खुलाकर दान शालाएं खुलाते।।
गति धन की तीन होती प्रबुद्ध जन सब जानते हैं।
दान, भोग और नाश को शुद्ध मन से मानते हैं।।

निर्वाह करके रूढ़ियों का नाश क्यों धन का करें।
मृत्यु भोजन मूर्खता है अब वन्द सज्जन सब करें ॥
कई जन उपदेश सुनकर खड़े हो संकल्प लेते।
धन लगेगा सद्कर्म में, कुछ तो उठकर व्रत लेते ॥

अज्ञान होता है जहाँ पर वहाँ होती रूढ़ियाँ।
बस डूब जाती कर्ज में उनको निभाकर पीढ़ियाँ ॥
मांग कर दहेज ले लक्षण भिखारी के हैं भाई।
ऐसे भिखारी के यहाँ हो न बेटी की सगाई ॥

दहेज व मृत्युभोज की, करते मुनिवर काट।
शीश झुका कुछ शर्म से, कुचरें अपनी टाट ॥

मृत्यु भोज की प्रथा है दुःखदाई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

किसी न किसी को आगे होना पड़ेगा।
वरना समाज को यहाँ रोना पड़ेगा ॥

स्वार्थ वश किसने यह रीत चलाई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

कभी माता मरती है कभी तात मरता।
ऐसी क्या खुशी है जो तू भोज करता ॥

नीर भरे नैन ना देते दिखाई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

कर्ज को चुकाते तेरा बाप मरा है।
क्यों कर्ज लेके तूने मृत्यु भोज करा है ॥

आर्तनाद क्यों नहीं देता सुनाई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

लोग तो खाकर पत्तल छोड़ जायेंगे।
लेकिन तेरी कमर को तोड़ जायेंगे ॥

यह भोज किया उसने मौत बुलाई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

लो लीर लीर पत्नी के चीर हो रहे।
कुछ चूसने को तुझको अधीर हो रहे ॥

फूस की है झोपड़ी आग जलाई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

लोग तो कहेंगे पर तू परवाह न कर ॥
मृत्यु भोजन करके बिना मौत तू न मर ॥

मैंने तुझे ज्ञान की बात बताई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

गली, गांव, शहर को सन्देश मेरा है।
बन्द मृत्यु भोज हो उपदेश मेरा है ॥

नित 'शशिकर' गुरुवर ने ज्योति जलाई।
अब त्याग दे तू आज मेरे भाई ॥

श्रद्धा मन में रखने वाला ध्यान शब्द पर देता था।
सुनकर के व्याख्यान सत्य का बोध यहां कर लेता था ॥
सर्दी की एक सुबह बोले अब कुछ बहने वाला है।
आज देख तुम रहे यहाँ कल नहीं रहने वाला है ॥

व्याख्यान सुना श्रद्धालु ने मन ही मन में शीश झुकाया।
अव क्या वहने वाला है कुछ देखा कुछ ध्यान लगाया ॥
गुड़ का सौदा किया है मैंने अब न देर लगाऊँगा।
लाभ-लोभ में पड़कर के अपना नुकसान कराऊँगा ॥

गुड़ बेचा उसने सारा मिला उसे वह लाभ उठाया ।
टूटा फिर बाजार अचानक गुड़ गोबर होते पाया ।।
गुरुवर की वाणी का निशदिन पान किया जो करते थे ।
चेहरे पर आल्हाद लिये वे नित अवनि पर फिरते थे ।।

व्याख्यानों में पन्ना मुनि नित ऐसे ही गीत सुनाते थे ।
लेकर के संकल्प सभी जन उठ उनको शीश झुकाते थे ।।
निशदिन अमृत वाणी महावीर की निर्झर बन बहती थी ।
जिज्ञासु जनता टकटकी लगा हर पल सुनती रहती थी ।।

आगम वाणी के वारिद उनके मुख से प्रतिपल झरते थे ।
यहाँ जिज्ञासु जन जब उनसे करबद्ध प्रार्थना करते थे ।।
कुछ मनुज पूछते धर्म किसे कहते हैं गुरुवर बतलाओ ।
जिसको हम सब धारण करते धर्म इसे ही जान जाओ ।।

है धर्म सभी का अपना अपना सारे धर्म निभाते हैं ।
निर्वाह धर्म का करने वाले अपना कर्म खपाते हैं ।।
धरती का अपना धर्म यहाँ सूरज का अपना धर्म यहाँ ।
अग्नि, अंबर और पवन का बंधु होता अपना धर्म महा ।।

ये अगर धर्म का त्याग करें तो जीव नहीं जी सकते हैं ।
पानी पत्थर हो जाये तो क्या लोग उसे पी सकते हैं ।।
यह मानव जीवन पाया है तो नेक सदा हम कर्म करें ।
आत्मा पर मैल नहीं चढ़ पाये ऐसे हम सद्कर्म करें ।।

आचरण धर्म मय है जिसका वह जीवन सफल बनाता है ।
औरों को कष्ट नहीं देता वह चाहे कष्ट उठाता है ।।
नित विज्ञ जनों ने यहाँ धर्म के बतलाये हैं चार द्वार ।।
क्षमा, सरलता, नम्र भाव व सन्तोष के ऊपर हो विचार ।।

ज्ञान और आचार धर्म के सद् पहलू दो बतलाये ।
नित पालन इनका करने वाले कब मृत्यु से घबराये ।।
अधर्म जहाँ पर होता है वहाँ धर्म नहीं आ पायेगा ।
अंबर कितना ही झुक जाये पर भू को छू ना पायेगा ।।

विषय वासना से हटकर के जो सदा विवेक जगाता है।
धर्म के ऊपर श्रद्धा जिसकी धर्मी वही कहाता है।।
प्रभु आदिनाथ की परम्परा जो महावीर तक थी आई।
स्याद्वाद की परम्परा जग में जैनधर्म है कहलाई।।

हिंसा का इसमें स्थान नहीं यह धर्म अहिंसा वाला है।
निशदिन जीओ और जीने दो की राह बताने वाला है।।
दुनियां में कोई धर्म नहीं जो हिंसा की जयकार करे।
जीवन सबको ही प्यारा लगता सभी स्वयं से प्यार करें।।

सदा अज्ञानी जन लोभ क्रोधवश हिंसा का व्यवहार करें।
कुछ मन से तो कुछ वचनों से कुछ कर्मों से ही मार करें।।
मित्र और शत्रु का मन में बना भाव नहीं मिट पायेगा।
सच, पूर्ण अहिंसक तब तक मानव कभी नहीं बन पायेगा।।

जैन धर्म का दूसरा, व्रत कहलाता सत्य।
महाव्रती पालन यहाँ, करते इसका नित्य।।

सत्य की जयकार होवे।
सत्य की ललकार होवे।।

हां सत्यवादी जो बने हैं वे भले ही कष्ट पाये।
पर देवताओं ने उन्हीं को शीश आकर के झुकाये।।
हरिशचन्द्र के यश की गाथा कौन बोलो भूल पाया।
पत्नी बेची सुत को बेचा सत्य को आखिर निभाया।।

झूठ का उपचार होवे।
सत्य की जयकार होवे।।

कुछ लोभ में, कुछ क्रोध में आ झूठ का लेते सहारा।
कुछ लोग डरकर के यहाँ पर सत्य से करते किनारा।।
जग में अधिक जो बोलें मनुज वे मृषा भी बोल जाते।
ज्ञानी जनों के मध्य में सब मूर्ख ही उनको बताते।।

सत्य से उपकार होवे ।
सत्य की जयकार होवे ।।

सत्य का ही बोलबाला, मुंह झूठ का काला हुआ है ।
गंग से जा मिल गया है पावन वही नाला हुआ है ।।
पहले हृदय में तोल कर के बात फिर मुख से कहो रे ।
थोड़ा बोलो सत्य बोलो वरना फिर चुप ही रहो रे ।।

सत्य से उद्धार होवे ।
सत्य की जयकार होवे ।।

अस्तेय का यहां तीसरा महाव्रतों में स्थान आया ।
कर्म चोरी का बुरा है उपदेश में मुनि ने बताया ।।
अनुमति लेते नहीं हैं पर वस्तु जो ले लेते कोई ।
समझो उसने जिन्दगी में फसल शूलों की है बोई ।।

धन हो चाहे धान हो परिहार अदत्ता दान का ।
इस कर्म से हो जाता है नाश मनुज सम्मान का ।।
चौथा ब्रह्मचर्य महाव्रत जो इसे अपनाता है ।
साधना के महा शिखर पर मनुज वह चढ़ जाता है ।।

विना इसके मुक्ति का कोई पथ नहीं पा सके हैं ।
ज्ञान, दर्शन व चारित्र कोई नहीं निभा सके हैं ।।
संत ज्ञानी जन सदा ही यह व्रत नियम से पालते ।
नारी पर अपनी निगाह मां-बहिन सी ही डालते ।।

वासनाओं से हमेशा स्वयं को जिसने हटाया ।
कर्म के जंजाल से नर वही तो हो मुक्त पाया ।।
वरदान इच्छा मृत्यु का ब्रह्मचारी पा सके हैं ।
यहाँ कौन है जो भीष्म को अभी तक भुला सके हैं ।।

अन्तिम व्रत है अपरिग्रह,
निर्वाह सब इसका करें।
साथ कुछ जाता नहीं जब,
हम परिग्रह फिर क्यों करें ?

होड़ संग्रह की हमेशा,
त्याग के पथ को भुलाती।
हृदय में ममता जगाती,
ना मिले तो मन जलाती।।

मोह इससे जन्म लेता,
यह परिग्रह नित पाप है।
क्लेश बढ़ता सदा इससे,
बस उपजते संताप हैं।।

परिग्रह सीमा से अधिक,
हमको न करना चाहिए।
अपरिग्रह भाव हृदय में,
धरना सदा ही चाहिए।।

क्यों विश्व से सन्तोष का,
नाम हटता जा रहा है।
परिग्रह से विश्व पीड़ित,
मनुज मिटता जा रहा है।।

शान्ति का साम्राज्य तबतक,
धरा पर नहीं आयेगा।
अपरिग्रह भाव को यहाँ,
मनुज नहीं अपनायेगा।।

समता अरु समानता के,
भाव हैं कल्याणकारी।
परिग्रह की भावना तो,
जगत में है महामारी।।

सरल शब्दों में गुरुवर तत्त्व की बातें बताते।
ना समझ भी ध्यान से सुनते उसे तो समझ जाते॥
लोक भाषा में गुरु ने ज्ञान के दीपक जलाये।
कहें कथाएँ वे सरस सुनें वे सुनते ही जायें॥

कथनी अरु करनी में मुनिवर भेद रख पाये नहीं।
तम को जहाँ पर देखते बस दीप जलवाये वहीं॥
महावीर की वाणी गुरु ने झोपड़ी को जब कही।
राज महलों की अटारी वे कब भला पीछे रही॥

नरेशों को उपदेश दे पन्ना ने पट्टे कराये।
बन्द है जब बलि प्रथा आखेट पर भी नहीं जाये॥
धरोहर इतिहास की अभिलेख अब भी बोलते हैं।
शीश श्रद्धा से झुके जब पृष्ठ उनके खोलते हैं॥

देवलिया, बनेडा, पीही संग रीयां में वे गये।
मेड़ास गोयला के नरेशों ने भी पट्टे लिख दिये॥
कई राजा चरण छूकर धन्य खुद को मानते थे।
कई उनमें वीर का बस रूप ही पहचानते थे॥

धर्म और दर्शन से मुनिवर पूर्ण लगते विज्ञ थे।
सद् वचन से लगता कि वे तो पूर्णतः सर्वज्ञ थे॥
आज जो यहां देखते हम कल नहीं रह पायेगा।
मुझे लगता अब जमाना बद से बदत्तर आयेगा॥

संसार में उथल पुथल देखो रह रह बढ़ रही है।
आँधियां लेकर लहू-कतरे गगन में चढ़ रही है॥
कथनी अरु करनी का अन्तर यदि बढ़ता जायेगा।
सभ्यता के साथ मनुज भी राख खुद बन जायेगा॥

अशान्ति का साम्राज्य होगा शान्ति रह ना पायेगी।
छलिया बनकर राजनीति जनता को तड़फायेगी॥
लोग यहां कायर बनकर वार करेंगे पीछे से।
नभ शोले बरसायेगा, सब देखेंगे नीचे से॥

धनिक और भी धनिक बने, पर पीड़ित हो जायेंगे।
कलदार बन कागज के, रद्दी से मिल जायेंगे॥
जनता भी उत्पात करे राज स्वयं करवायेगा।
बेमौत मरेंगे लोग आंसू नहीं आ पायेगा॥

सुर केवल तेतीस कोटि भारत में कहलायेंगे।
उससे ज्यादा लोग यहां असुर सभी हो जायेंगे॥
निशदिन होगा महाभारत देवासुर संग्राम मचेगा।
लहू की मेंहदी धरती का मानव नित्य रचेगा॥

महावीर का पावन पथ जग को राह दिखायेगा।
इस पर चलकर ही मानव अपनी उम्र बढ़ायेगा॥
कहने को तो जनता का राज यहां पर आयेगा।
मुझको लगता दीपक ही घर में आग लगायेगा॥

सद्कर्म सभी जल जायेंगे,
सद्ग्रन्थ सभी जल जायेंगे।
दिन दूर नहीं मुझको लगता,
सद्पंथ सभी जल जायेंगे॥

रामायण हो या गीता हो,
आगम चाहे नानक वाणी।
सबको आग जला देती है,
सच्चा हो या झूठा प्राणी॥

मैं बड़ा यहां तू छोटा है,
मैं ऊँचा हूँ तू नीचा है।
प्रभु महावीर ने सबको ही,
नित समता रस से सींचा है॥

देदीप्यमान व्यक्तित्व लिए जो लोग धरा पर आते हैं।
इतिहास अहर्निश उनका ही कृतित्व यहां दोहराते हैं॥

रामकृष्ण महावीर बुद्ध को अब तक कौन भुला पाया ।
हर युग ने अपने स्वर देकर उनका जीवन दोहराया ।।

जलकर स्वयं उजाला करते जो मावस की रातों में ।
घोर तमस भी दीपक आगे ठहर बताओ कब पाया ?

दीपक बनकर अंधियारे का भक्षण जो कर जाते हैं ।
इतिहास अहर्निश उनका ही कृतित्व यहाँ दोहराते हैं ।।

ज्ञान ध्यान तप के कारण विराट वह व्यक्तित्व हुआ ।
जो सबके करने योग्य बने वह जीवन महा कृतित्व हुआ ।।

जिनने भी उनको जान लिया पहचान लिया फिर अपने को ।
वे बोले गुरुवाणी को पूरा करना निज दायित्व हुआ ।।

हम उस पर चलते जायेंगे जो पथ गुरुदेव बताते हैं ।
इतिहास अहर्निश उनका ही कृतित्व यहां दोहराते हैं ।।

बने संगठन शक्तिशाली मिलकर सभी प्रयास करें ।
हर पल मानव मानव मन में स्नेह भाव उल्लास भरें ।।

असहाय अनाथ कोई भी नहीं दिखाई दे जग में ।
व्यक्ति व समाज दोनों ही मिलकर नित्य विकास करें ।।

जो जगे हुए हैं वे ही तो सोये लोग जगाते हैं ।
इतिहास अहर्निश उनका ही कृतित्व यहां दोहराते हैं ।।

बाहर जो अंधियारा फैला वह सूरज हर लेता है ।
मानव मन के अंधियारे को ध्यान नहीं क्यों देता है ।।

अशिक्षा के अंधकार को दूर करो सब मिलकर के ।
वो ही नैया पार पहुँचती जिसको नाविक खेता है ।।

प्राज्ञ मुनि की पावन वाणी सुन सारे शीश झुकाते हैं ।
इतिहास अहर्निश उनका ही कृतित्व यहां दोहराते हैं ।।

गुरुदेव की भावना, समझ गये सब लोग।
आगे बढ़ देने लगे, सब अपना सहयोग ॥
शिक्षित अगर समाज हो, सुधरें सारे काज।
ज्ञानी जन पर ही करें, दुनियां वाले नाज ॥

बिजयनगर के भक्तों ने, सुना गुरु उपदेश।
विद्यालय खोले यहां, उत्तम है सन्देश ॥
गुरुवर की मृदु भावना, जगा रही है आज।
शिक्षित सकल समाज हो, गुरुवर की आवाज ॥

वह विक्रम उन्नीस सौ, तैयासी की बात।
जैन विद्यालय खुल गया, निकला नया प्रभात ॥
विद्यालय को देखकर, हर्षित सारे लोग।
राव मसूदा आ गये, बैठा सुन्दर योग ॥

गुरुवर से उनने कहा, कृपा करें यदि नाथ।
बन जाये हाई स्कूल, अगर आप दें साथ ॥
विजयसिंह जी आपके, उत्तम लगे विचार।
शिक्षा का संसार में, होवे नित्य प्रचार ॥

बदला हाई स्कूल में, पा नारायण नाम।
बिजयनगर अब हो गया, सुशिक्षा का धाम ॥
गुलाबपुरा व केकड़ी, पीछे क्यों रह पाय।
जैन विद्यालय खुल गये, सारे जन हर्षाय ॥

सार्वजनिक फिर बन गये, बनी रह गई याद।
बढे बढ़ें इनमें सभी, मेरा आशीर्वाद ॥
निजी क्षेत्र में आज भी, विद्यालय का नाम।
गांधी आगे जुड़ गया, हुआ नगर का काम ॥

नारी शिक्षा का किया, गुरुवर ने आह्वान।
कन्या विद्यालय खुला, विजयनगर की शान ॥
गुलाबपुरा में खुल गया, जैनी छात्रावास।
शिक्षा लेने आ गये, बालक ले उल्लास ॥

बिजयनगर व भिणाय में, बढा शिक्षा प्रचार।
गुरु कृपा से खुल गये, पुस्तक के भण्डार।।

उत्तम उनमें ग्रन्थ हैं, पाते सब जन बोध।
उनको पढ़कर के कई, करते अनुपम शोध।।

देते गुरुवर प्रेरणा, करते सब जन काम।
खुले औषधालय कई, पाते जन आराम।।

सुखी बने संसार तो, मिले मुझे विश्राम।
शशिकर ऐसे सन्त को, निशदिन करे प्रणाम।।

नवम सर्ग

महानिर्वाण : मुक्त प्राण

मंगलाचरण

जिन धर्म की ज्योति जगत में अष्ट प्रहर जलती रहे।
पथ से भ्रमित इंसान को नव रोशनी मिलती रहे॥

वे नाथ आदीश्वर जिसे लेकर प्रथम आये यहां।
हम छोड़ पावन भावना को अब भला जायें कहाँ ?
अवसर्पिणी के काल का भाग अन्तिम चल रहा था।
कर्मों के तापों से यह अनवरत जग जल रहा था॥

भगवान ऋषभदेव ने सुमार्ग सबको ही बताया।
अष्टापद पर्वत पै जा उन्होंने निर्वाण पाया॥
पश्चात् फिर तेबीस तीर्थंकर हुए इस भू लोक पर।
वे मोक्ष के पथ पर गये सब लोक में आलोक कर॥

अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमित पद्म व सुपार्श्व आये।
चन्द्र, सुविधि, शीतल, श्रेयांस वासु को हम सिर नंवाये॥
विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति जय हो कन्थु व अरनाथ की।
मल्लि, सुव्रत, नमि, नेमि जय जय हो श्री पार्श्वनाथ की॥

सिद्धार्थ सुत श्री वीर स्वामी की सदा जय वोलिए।
नित क्षमा कर सद्भाव रखकर मन की ग्रन्थि खोलिए॥

यह जिन्दगी हमको मिली फैलाये सुरभि ज्ञान की।
भावना मन में संजोये सबके ही उत्थान की॥
सद्भाव की कलियाँ हृदय में अनवरत खिलती रहें।
जिन धर्म की ज्योति जगत में अष्ट प्रहर जलती रहे॥

जिन धर्म ही जय धर्म है विश्व में कल्याणकारी।
महिमा कर्मों की जताता यह महाव्रत का है धारी ॥
ज्ञान दर्शन चारित्र की महिमा जगत नित जानता।
कर्म का फल कौन बोलो भू पर नहीं पहचानता ॥

सुख दुःख का कर्ता आत्मा है भोक्ता भी है वही।
शिव वाणियां तीर्थंकरों की आगमों में है यही ॥
आत्मा परमात्मा बनने की राह हम आज पाये।
कर्म के सब जाल काटे मुक्त अपने को बनाये ॥

सुज्ञान से हम सत्य का दर्शन करें जग को करायें।
हम तन से पहले मन-चरित्र को उज्जवल बनायें ॥
ज्ञान, दर्शन, चारित्र तीनों रत्न पा खोये नहीं।
स्वार्थ हित औरों के पथ में शूल यहां बोये नहीं ॥

बस अहिंसा की अर्चना हम नित्य ही करते रहें।
नित कुसुम करुणा के हमारे हृदय से झरते रहें ॥
कभी वर्ण, जाति, लिंग का हम भेद पनपनायें नहीं।
सदा शान्ति के साम्राज्य में बाधा बन जायें नहीं ॥

हो भाई चारा धरती पै भावना फलती रहे।
जिन धर्म की ज्योति जगत में अष्ट प्रहर जलती रहे ॥

भाव मैत्री का सिखाते उन्हें मेरा नित्य वन्दन।
भाव हिंसा का मिटाते चरण धूलि उनकी चन्दन ॥
समभाव के संग समन्वय नीति जिन्हें प्यारी रहे।
यह शीश उनको ही झुका जो भी क्षमाधारी रहे ॥

त्याग तप के कमल जन जन के हृदय में जो खिलाते।
उस मनुज के गुण सदा इतिहास के हर पृष्ठ गाते ॥
मैं बड़ा हूँ और छोटे, बस सत्य मैं, सब झूठ है।
हो ऐसी जिसकी भावना तो वही सूखा ठूंठ है ॥

प्यार की पुरुषार्थ की नित भावना जग में जगाये ।
राग सारे भूलकर साधना में मन रमाये ।।
आडम्बरों का अन्त करके पाखण्ड सारे तोड़ दे ।
सच्चा साधक है वही जो बहती नदी को मोड़ दे ।।

प्राज्ञ पुरुष पन्ना को हां, शीश इस कारण झुकाया ।
तमस में हर भटकते को पंथ मुनिवर ने दिखाया ।।
अंधेरों को चीर कर जो उजाला लेके आये ।
तीर्थंकरों के संग ही शीश हम उनको झुकाये ।।

निकले सूरज ज्ञान का नित दु:ख निशा ढलती रहे ।
जिन धर्म की ज्योति जगत में अष्ट प्रहर जलती रहे ।।

उगता जो सूरज सुबह, ढलता होती शाम ।
जाना उसको ही पड़ा, पाया जिसने नाम ।।
जन्म है वह जायेगा, क्या राजा क्या राव ।
छोड़ जगत जाना मुझे, रहे सदा मन भाव ।।

रह न सके कोई अमर, तीर्थंकर अवतार ।
इस जग में आ सोचते, जाना भव जल पार ।।
यहां मृत्यु से आदमी, डर कर जाये भाग ।
लेकिन वह तो आयगी, बनकर काला नाग ।।

ज्ञानी जन तो मानते, मृत्यु दु:ख का अन्त ।
फिर भय इसका क्यों करे, प्रभो मिलन का पंथ ?
समय निकट यह जानकर, हर्षित होते सन्त ।
कबिरा बोले देर क्यों, पास बुलालो कन्त ?

रोते इसको देखकर, अज्ञानी दिन रात ।
पतझड़ आया टूटते, पीले सारे पात ।।
आते भी रोये कई, कुछ जाते भी रोय ।
अज्ञानी जाने नहीं, होनी वह तो होय ।।

वैज्ञानिक सारे लगे, समय जा रहा बीत।
कैसे पायें हम सभी, इस मृत्यु पर जीत ।।

बिजयनगर का पावन कस्बा पुण्यों का संचय करता था।
पन्ना की पावन वाणी का नित अविरल झरना झरता था।।
गुलाबपुरा व बिजयनगर के घर-घर ने उनको मान दिया।
नित सद्वाणी से दोनों का ही पन्ना ने उत्थान किया।।

'खारी' की बहती जल धारा गुणगान गुरु का करती थी।
गुरुवाणी सुनकर श्रद्धा से जय जय जय करती फिरती थी।।
यदि पास गया निराश कोई तो हँसता हँसता लौट गया।
जिसने भी उनके चरण छुए अन्तर का सारा खोट गया।।

वे पानीदार प्रवचन उनके कर्म के बन्धन काट गये।
जो ज्ञान उन्होंने पाया था वे सभी विश्व को बांट गये।।
वे अंधियारे में उजियाले का नित सन्देश सुनाते थे।
स्वाध्याय प्रेरणा देकर के समता के भाव जगाते थे।।

जीवन का संध्या काल देख वे शान्त भाव से रहते थे।
वे आवश्यक जो होती थी वो ही बातें कहते थे।।
बचपन में देखे जो सपने वे सारे ही साकार हुए।
शुद्ध हुआ तन के संग मन उनके नष्ट सभी विकार हुए।।

सज्जन भी सूरज की भांति अपना यहां रूप बताते हैं।
सुख-दुःख सांझ सवेरे जैसे आते हैं और जाते हैं।।
मोह और आसक्ति दोनों ही मुक्ति में बाधक होते हैं।
इसीलिए तो इनसे कोसों दूर सभी साधक होते हैं।।

जो आत्मभाव को जान गया वो एक भाव से जीता है।
बनकर के शंकर सृष्टि के विष को वही हँसकर पीता है।।
चिन्ता न मान की है उसको अपमान अगर हो जाता है।
न हँसे मान के अन्दर वह न आंसू कभी बहाता है।।

भावी भय की आशंका उसके मन को नहीं हिला पाती।
उसके यश की सौरभ को जल की बूंदें नहीं गला पाती॥
इन्द्रियां सभी थक जाती हैं मन अश्व दौड़ता रुक जाता।
जो तना जवानी के अन्दर वह रीढ़ खंभ भी झुक जाता॥

ना खाना अच्छा लगता है ना अच्छा लगता है पीना।
देह व्याधि के कारण दूभर होता है मानव का जीना॥
ना नैन देख कुछ पाते हैं सुन पाते कुछ कान नहीं।
यहां मुख के सारे दांत निकल बन जाते मेहमान कहीं॥

संघर्ष गृहस्थ के जीवन में निशदिन बने ही रहते हैं।
सन्यास आश्रम धारण की यहां शास्त्र सर्वदा कहते हैं॥
हां उदयकाल के आते ही धारे थे जिसने धवल वस्त्र।
त्याग, तपस्या, क्षमा भाव के जो मन में लेकर चले शस्त्र॥

जो मिला उसे स्वीकार किया मन में कुछ भी थी चाह नहीं।
जो बन्धन में ले जाती है कहते वो मेरी राह नहीं॥
आया है संध्या काल अरे मन अन्तर्मुखी हुआ जाता।
यादें अतीत की होती हैं, अन्तर का स्पर्श हुआ जाता॥

हो गया समय अब जाना है क्यों मोह करूं मैं काया का।
पकड़ न कोई पाया है क्यों लोभ करूं मैं छाया का॥
जीर्ण शरीर हो गया मेरा कब जीव छोड़ इसको चल दे।
ऋतु तो आकर के चली गई है ठूंठ भला किसको फल दे॥

जीवन से डर जब नहीं लगा क्यों आज मौत से यहां डरूं।
जीवन को जी भर प्यार किया अब फर्ज मौत से प्यार करूँ॥
करूं मृत्यु तेरा स्वागत अब भावों के दीप जलाता हूँ।
मैं तुझको हृदय लगाता हूँ आ आ मैं तुझे बुलाता हूँ॥

इस जग में कोई अमर नहीं जिसने भी जीवन पाया है।
जगति के चराचर प्राणी को मृत्यु ने सदा लुभाया है॥
कुछ लोग मृत्यु से दुनियां में भयभीत नित्य ही रहते हैं।
हम मर ना जायें यहाँ कहीं वे नित अपनों से कहते हैं॥

चढ़ जाय शिखर के ऊपर वे छुप जाय कंदरा में जाकर ।
लेकिन समय आने पर मृत्यु उन्हें ढूंढ लेती है आकर ।।
कुछ जीवन के संघर्षों को इस जग में झेल नहीं पाते ।
वे धर्म-कर्म का खेल धरा पर हँसकर खेल नहीं पाते ।।

वे जीवन की महत्ता को मूरख कभी जान ना पाते हैं ।
जीवन भर रोते रोते यहाँ मृत्यु को गले लगाते हैं ।
वे कायर बनकर जीवन जीते कायर रह मर जाते हैं ।
ऐसे ही मानव युगों युगों तक नहीं मोक्ष को पाते हैं ।।

कुछ लोग लक्ष्य को लेकर के जीवन को सफल बनाते हैं ।
मृत्यु को सामने खड़ी देखकर कभी नहीं घबराते हैं ।।
आत्म हत्या कर जिसने भी जीवन को पा के गंवाया है ।
क्या होती महत्ता मानव भव की समझ नहीं वह पाया ।।

कुछ नर पुंगव मानव भव पा मृत्यु को चेरी बनाते हैं ।
ध्यान, साधना, योग शक्ति से नित जीवन को महकाते हैं ।।
जर्जर होती देह देखकर मन ही मन [illegible] जगाते हैं ।
अजर अमर जीवात्मा को वे नर नव चोला पहनाते हैं ।।

संलेखना करके अपने वे प्राणों को [illegible] हैं ।
मृत्यु को महोत्सव मान धर्म में [illegible] हैं ।।
वे मृत्यु का अतिथि की भाँति यहाँ स्वागत [illegible] हैं ।
वे महासमाधि लेने का ही जगति को [illegible] हैं ।।

स्नेही जन सारे सुनो सुनो मैं अब [illegible] ।
सब मेरे सम प्रसन्न बनो अब मैं मृत्यु [illegible] ।।
संलेखना संथारे से हाँ शरीर [illegible] ।
किन्तु आत्मा देह मुक्त बन [illegible] ।।

गुरुदेव ने जान लिया अब [illegible]
जीवात्मा को तन पिंजर में [illegible]
मैं देव-गुरु व धर्म साक्षी में [illegible]
मैं आज संघ की साक्षी में मृत्यु को [illegible]

संलेखना कर कर के मैंने मृत्यु का आंगन स्वच्छ किया।
अन्न त्याग जल को त्यागा तप का यहाँ अमृत मैंने पिया ॥
क्रोध, मान, माया, कषाय संग लोभ-क्षोभ सभी भाग गये।
अब संथारा करने के मेरे भाव हृदय में जाग गये ॥

सब जीवों से क्षमा याचना अब मैं अन्तिम मांग रहा हूँ।
मिच्छामि दुक्कड़म के खातिर मैं भाई जग में जाग रहा हूँ ॥
सुखी बनें इस भव के प्राणी मेरा न किसी से बैर रहा।
सब क्षमा करें अब क्षमा करे यदि चुभता मैंने बोल कहा ॥

नयन बन्द कर प्राज्ञ गुरु ने नवकार मंत्र का जपन किया।
अब धन्य धन्य कह उठे लोग सबने ही झुक कर नमन किया ॥
जो भव का प्राणी ले संथारा वरण मृत्यु का करता है।
देह नष्ट हो जाये चाहे वह अमर धरा पर रहता है ॥

तीर्थंकर और केवली भी लेकर संथारा मुक्त हुए।
सिद्धलोक में पहुँच कई तो अतिदिव्य तेज से युक्त हुए ॥
जैन धर्म से दुनियां को यह संथारा उपहार मिला है।
धर्म तत्व जिसने जाना उसे मुक्ति का प्यार मिला है ॥

वे बोले मुझको मोह नहीं, ना शोक मृत्यु के आने का।
मैं मौन निमंत्रण देता हूँ अब तुझको पास बुलाने का ॥
कर्तव्य और दायित्वों की मैं चादर ओढ़े सदा चला।
फूलों ने स्वागत गान पढ़े, शूलों से मुझको स्नेह मिला ॥

अस्सी वसन्त इस जीवन में आये आकर के चले गये।
अड़सठ वर्षावास मेरे यहां एक एक कर निकल गये ॥
है देह पुरानी जर्जर मेरी जीव तत्त्व अकुलाता है।
कैद है पंछी पिंजरे में मन उड़ने को ललचाता है ॥

चिन्तन, मंथन मन में कर वे आत्मा को शुद्ध बनाते थे।
संलेखना-साधना करके वे उत्तम भाव जगाते थे ॥
कषाय और विषयों के संग कृश देह नित्य ही होती थी।
बढ़ती चेहरे पर दिव्य चमक मोती में जैसे ज्योति थी ॥

नगर निवासी गुलाबपुरा के गुरुवर के दर्शन को आये ।
किया सभी ने मिलकर आग्रह श्री सोहन मुनि को भिजवायें ।।

बिजयनगर से दूर ना कुछ भी, यदि आप भिजवायेंगे ।
बाल, वृद्ध सब दर्शन करके अन्तर के कलुष मिटायेंगे ।।

आग्रह उनका ना टाल सके पुनः पंचमी को बुलवाया ।
तब भाषा पन्ना के मन की कोई भी नहीं समझ पाया ।।

था माघ माह का शुक्ल पक्ष चौथ चाँदनी ना लाई ।
विक्रम दो हजार चौबीस अहा ! आंखें जग की भर आई ।।

सागारी संथारा लेकर पन्ना ने उस दिन शयन किया ।
सीने में औचक दर्द उठा मुनि कुन्दन को संकेत दिया ।।

संथारा लेकर सोच लिया इस दीपक का चुक गया तेल ।
मन मगन आज मन ही मन में हो जाये चाहे खत्म खेल ।।

सीने में फिर से दर्द उठा चमक चेहरे की घटी नहीं ।
सब शिष्य पास में खड़े रहे उनकी भी आँखें हटी नहीं ।।

पंचमी माघ शुक्ला की ओह ! ब्राह्मवेला जब थी आई ।
तीन फरवरी उन्नीस सौ अड़सठ सचमुच में थी दुःखदाई ।।

'अरिहन्त भगवन' कहा मुख से गर्दन फिर अपनी झुका गये ।
पन्ना का पण्डित मरण देखकर दुनियां ने सिर झुका लिये ।।

जग छोड़ गये पन्ना प्यारे विश्वास न कोई कर पाया ।
यह जिसने भी सन्देश सुना वह दर्शन को दौड़ा आया ।।

पन्ना ने देह का त्याग किया बातें हवाओं में फैली ।
अलिवृन्द ने गाना बन्द किया तजदी तितली ने अठखेली ।।

तज एक भ्रमर जग बगिया को लो दिव्यलोक को चला
कालबली के हाथों से फिर दिव्य सन्त भी

मधुमास धरा पर आता है बगिया में कलियाँ खिल जाती ।
भ्रमरों की टोली गूंज गूंज तितली के संग मंडराती ।।

शीतल मन्द बयार धान के खेतों में नर्तन करती है ।
गैंदा और गुलाब, चमेली मधुकण की बरखा करती है ।।

बसन्त पंचमी का यह दिवस हर ओर उदासी लाया था ।
कलियाँ भी सिमटी आज रही भ्रमरों ने गीत न गाया था ।।

मधुकण सुमनों से नहीं झरे हा ! पवन दग्ध बन आज चली ।
सड़कों पर छाया सन्नाटा सिसकी है अब तो गली गली ।।

आम्र मञ्जरी नहीं खिली है कोयल इस बार नहीं बोली ।
मोरों ने नर्तन किया नहीं भँवरों की आई ना टोली ।।

निष्प्राण देह लख पन्ना की आह ! हुई प्रकृति मौन आज ।
पशुओं ने तृण को छुआ नहीं उन पर भी टूटी महा गाज ।।

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सन्देश पवन के साथ गया ।
पाँव सभी के एक ओर बस जो जैसे भी था निकल गया ।।

कुछ पैदल कुछ साईकिल पर कई बस में चढ़कर के आये ।
रेलों से आये कई लोग चढ़ बच्चे कंधों पर आये ।।

कुछ तो सोचते विजयनगर में बसन्त पंचमी का मेला ।
जा रहा देखने को शायद अब आज भीड़ का यह रेला ।।

सच्चाई उनने जानी तो अकस्मात मन दंग हो गया ।
अनजान पथिक भी उस दिन तो उसी भीड़ का अंग हो गया ।।

गांव, नगर से चलकर उस दिन आये लोग हजारों में ।
तिल धरने को भी जगह नहीं थी उस दिन वहाँ बाजारों में ।।

समाचार सुनते ही सबने हर काम अधूरा छोड़ दिया ।
आगे जाते पांवों को तब कुछ ने पीछे को मोड़ लिया ।।

दिव्य पुञ्ज के अन्तिम दर्शन करने का मन में भाव लिए।
कई सन्त-सती भी कर विहार भोर होते ही निकल गये ।।

जैन और अजैन सभी वहाँ दर्शन को दौड़ लगाते थे।
वज्राघात सहन करके भी अश्रु न कई ढलकाते थे ।।

अज्ञात शत्रु के दर्शन कर पलकें संग सिर झुक जाते थे।
निष्प्राण देह को देख देख आँखें न कोई हटाते थे ।।

कहना पड़ता उनको फिर तुम भाई निश्चल मत खड़े रहो।
सब बढ़ो बढ़ो दर्शन करके मत आप यहाँ पर अड़े रहो ।।

देह गेह को तज गया जीव चमक चेहरे की गई नहीं।
कुछ को लगता महाप्राज्ञ की हो मौन साधना अभी रही ।।

कुछ देर बाद ये बोलेंगे फिर मंगल पाठ सुनायेंगे।
लेकर आशीर्वाद सभी जन घर अपने अपने जायेंगे ।।

पीछे वाला आगे बढ़ आगे वाले से टकराता था।
हृदय में हाहाकार लिए हो विवश आगे बढ़ जाता था ।।

कुछ लोग अकेले में जाकर अपने आंसू ढुलकाते थे।
कुछ लम्बी सांसें ले लेकर औरों को धैर्य बंधाते थे ।।

कुछ इतने रोये इतने रोये अन्तर का सागर सूख गया।
थमी सिसकियाँ शनैः शनैः जब सब जल नयनों का चूक गया ।।

सूंघ गया हो सांप कोई कई लोग सोचना भूल गये।
गालों पर आंसू बूंदें थीं कुछ उन्हें पोंछना भूल गये ।।

अजमेर संघ बैकुण्ठी लेकर विजयनगर में जब आया।
उठ गई बिना मुहूर्त डोली रह गई नयन में बस छाया ।।

बैकुण्ठी में बैठाकर के जग ने जय जयकार लगाया।
जय जैनधर्म, जय महावीर जय प्राज्ञ गुरु का नाद •

कुछ जिनवाणी की महिमा के बस भजन बोलते जाते थे।
कुछ बैकुण्ठी नीचे निकल निकल जीवन सफल बनाते थे॥

जन सागर ऐसे उमड़ पड़ा सड़कों पर नहीं समाता था।
अन्तिम दर्शन करने को जन मन छत पर दौड़ लगाता था॥

खिड़कियां, झरोखे सभी खुले छज्जे झुक झुककर झांक रहे।
टकटकी लगाये पेड़ों पर चढ़ लोग उन्हें थे ताक रहे॥

कुछ की आंखें सावन-भादव बनकर के वहां बरसती थी।
जो उनको देख नहीं सकती वे आंखें आज तरसती थी॥

श्री वृद्धि गुलाब जी चोरड़िया अश्रु टप टप टपकाते थे।
गुरुवर के पावन उपकारों को हृदय खोल बतलाते थे॥

श्री संघ से किया निवेदन आप सब हृदय में विचार करो।
अन्तिम संस्कार के हेतु अब मेरा क्षेत्र स्वीकार करो॥

महाप्राज्ञ की महाकल्पना मिलकर हम साकार करेंगे।
पुण्य स्मृति में हम कोई मिलकर नया विचार करेंगे॥

यह नेकी और पूछ पूछ वहां सबने हाँ तत्काल करी।
सबकी आंखों में आँसू थे खुशियां थी मन में बहुत भरी॥

वह सूरज ढलकर पश्चिम में कंधों पर चढ़ा चला जाता।
देखा न कभी जीवन में था वो दृश्य वहां बनता जाता॥

नेता, अधिकारी, व्यापारी सब जाति धर्म के लोग चले।
उस प्राज्ञ पुरुष के मेले में सब राग द्वेष को त्याग मिले॥

ला मध्य खेत में पन्ना को चन्दन के ऊपर बिठा दिया।
दिव्य तेज को चिर निद्रा में करबद्ध सभी ने लिटा दिया॥

अब मिला तेज से तेज रोशनी आकर के फिर चली गई।
क्रूर काल के पंजों में वह दिव्य किरण थी छली गई॥

चन्दन की चिता वहां जलती चन्दन मन उसमें जलता था ।
जलते थे उसमें नारिकेल घृत उसे और फिर मिलता था ।।

अग्नि ने किसको छोड़ा है, अरे जलती और जलाती है ।
पंच तत्व में वह जीवों को पलभर में यहाँ मिलाती है ।।

वह ढेरी थी अंगारों की अब भी रह रह कर चमक रही ।
उस दिव्य पुञ्ज की आभा उसमें अब भी रह रह दमक रही ।।

जिन कंधों ने उनको ढोया गर्दनें उन्हीं पर लटकी थीं ।
पाँव लौटते थे घर को पर आंखें तो उनमें अटकी थीं ।।

उस महापुरुष को अन्तर से कोई भी नहीं मिटा पाया ।
यहां अन्तर पर आरूढ़ हुआ हो उसको कौन हटा पाया ।।

जब तक सूरज चांद सितारे उदधि अँबर रहेगी धरती ।
यह सारी जगति पन्ना गुरु का स्मरण सदा रहेगी करती ।।

चमचम चमचम चमकते, जैसे सदा प्रवाल ।
शोभित सन्तों में रहे, मुनिवर पन्नालाल ।।

उत्तर उनके पास थे, जितने बने सवाल ।
ज्ञानोदधि के रत्न थे, मुनिवर पन्नालाल ।।

करुणा सागर हो गये, गुरुवर दीन दयाल ।
पूज्य प्रवर्तक बन चले, मुनिवर पन्नालाल ।।

पूज्य प्रवर्तक दीन दयाल ।
धन्य धन्य गुरु पन्नालाल ।।

चारों ओर अंधेरा है ।
अब दिखता नहीं [illegible] है ।
जग मोह माया में [illegible] है ।
मन में लागे [illegible] [illegible] ।
धन्य धन्य गुरु पन्नालाल ।।

रत्न हाथों में आकर खोया।
खोकर तुम्हें तो यह जग रोया।
कभी चैन से नहीं है सोया।
देखो क्या है जग का हाल।
धन्य धन्य गुरु पन्नालाल॥

आँसू यहां आवाज नहीं है।
पंछी यहाँ परवाज नहीं है।
स्वर ही स्वर यहां साज नहीं है।
अपनों का तुम करो खयाल।
धन्ध धन्य गुरु पन्नालाल॥

सोते बैठते जब भी उठते।
नाम आपका नित्य ही रटते।
रटते रटते ही दिवस कटते।
कौन आपसा एक सवाल?
धन्य धन्य गुरु पन्नालाल॥

काव्य पाठ करने के खातिर पड़ा मुझे दक्षिण में जाना।
लोगों ने परिचय पूछा तो मेरा उनको हुआ बताना॥
मैं भक्ति और शक्ति की धरती राजस्थान से आया हूँ।
उन धोरों की धरती से मैं सन्देश प्रेम का लाया हूँ॥

उस अजमेर जिले में विजयनगर कस्वा एक मनोहर है।
खारी के तट पर वसा हुआ भू तल की महा धरोहर है॥
कुछ वोले आहा! विजयनगर अपना भी देखा जाना है।
पूज्य प्रवर्तक पन्ना मुनि का वह क्षेत्र रहा पहचाना है॥

निर्वाण प्राप्त कर पन्ना ने उस भू का मान वढ़ाया है।
हे कविवर शशिकर धन्य धन्य! वह नगर तुम्हें मनभाया है॥
पन्ना के यश की गाथा सुन मन मेरा भाव विभोर हुआ।
पूछा सन्त और सतियों से जयनाद वहां हर ओर हुआ॥

सुन गौरव गाथा पन्ना की श्रद्धा से तन मन झूम गया ।
कुछ गद्य पद्य में लिखने को मैं कलम उठा कर चूम गया ।।

जयवन्त कंवर जी के दर्शन को हुआ तभी स्थानक जाना ।
अस्वस्थ प्राज्ञ किंकर हैं अब मेरा उनको हुआ बताना ।।

मैं प्राज्ञ मुनि के बारे में कुछ जान चुका कुछ जान रहा हूँ ।
अब भी ज्ञान अधूरा है मैं आज स्वयं को मान रहा हूँ ।।

संकेत गुरुजी का पा डॉक्टर साध्वी कमलाजी आई ।
वहां प्राज्ञ गुरु के बारे में कुछ बातें उनने बतलाई ।।

प्राज्ञ गुरु तो महापुरुष थे यहाँ पाकर जीवन सफल किया ।
सत्य, अहिंसा, दया प्रेम का नित मानव को सन्देश दिया ।।

छुट पुट कविताएं लिख लिखकर के मैंने गौरव गान किया ।
लिखकर के क्यों नहीं महाकाव्य मैंने कलम को मान दिया ।।

मैं अल्पज्ञ भला कैसे आज उत्तुंग शिखर छू पाऊंगा ।
हृदय में संशय भारी था कि मैं कैसे कलम उठाऊंगा ।।

शीश नवाया श्रद्धा से और कर जोड़ प्रभु का नाम लिया ।
फिर महाकाव्य के नायक को मन ही मन प्रणाम किया ।।

अब अक्षर जुड़ जुड़ कर शब्द बने वहाँ शब्दों ने पंक्ति पाई ।
पृष्ठों से जुड़ते पृष्ठ गये अद्भुत काव्य की शक्ति आई ।।

उस प्राज्ञ पुरुष का दिव्य तेज मेरे अन्तर में समा गया ।
कवि मेरा हुआ समर्थ नाम फिर महाकाव्य को रचा गया ।।

यहाँ चर्चा कुछ सन्तों से की सबने ही साधुवाद दिया ।
जीवन सफल तुम्हारा 'शशिकर' यह निर्णय तुमने सही लिया ।।

उनका मात्र नाम लेने से काम सफल हो जाते हैं ।
निश्चित महाकाव्य पूरा होगा हम तुमको बतलाते हैं ।।

नित्य नियम पूर्वक लिखने का दृढ़ निश्चय मन में धार लिया।
महाकाव्य है पन्ना का तो बस पन्ना का आधार लिया ।।

हे पूज्य प्रवर्तक पन्ना मुनि मन के कल्मष का अन्त करो।
मैं माँ वाणी का वरद पुत्र आलोकित मेरा पन्थ करो ।।

अब पूर्ण हुई मन की आशा कल्पना सभी साकार हुई।
जब पन्ना खुद पतवार बने तो मेरी नैया पार हुई ।।

बन सच्चे श्रद्धालु जो मेरे शब्दों से प्यार करेंगे।
प्राज्ञ गुरु की जय जय कर शब्द मेरे स्वीकार करेंगे ।।

जय हो पन्ना प्यारे की।
जैनधर्म उजियारे की।
दीनों के रखवारे की।
जग के दिव्य सहारे की।
जय जय पन्ना प्यारे की ।।

महाप्राज्ञ : माहात्म्य

दिवस शुभ था चैत्र का मैं घूमने को जा रहा था ।
सूर्य प्राची से निकल कर रश्मियां विखरा रहा था ।।
अठखेलियां आकाश में, विहग उड़ते कर रहे थे ।
मग में जाते श्रमिक डग सत्वर गति से भर रहे थे ।।

धुनकर किसी ने रुई को आकाश में फैला दिया ।
श्वेत धन का पुञ्ज मुझको, ऐसे दिखलाई दिया ।।
सौरभ समेटे पवन भी पश्चिम दिशा से चल रही थी ।
टेसू की टहनी दूर से लगता मुझको जल रही थी ।।

मयूरों का नृत्य मोहक मन को सहज ही भा गया ।
देखे लहलहाते खेत तो आनन्द अन्तर छा गया ।।
तबपिककी मधुर आवाज ने इक निमंत्रण मुझको दिया।
झुक आम्र की टहनी ने उस पल मेरा अभिवादन किया।।

उस मैदान में फैली हुई दूब मखमल सी लगी ।
अब क्षणिक मैं विश्राम करलूं भावना मन में जगी ।।
फिर दूर से जयनाद का स्वर दिया मुझको सुनाई ।
कौन होगा पुण्यवान जिसकी यह जयकार आई ।।

निज नयन को कर बन्द अब तो मनन मैं करने लगा ।
मम हृदय से आनन्द का झरना सतत झरने लगा ।।
धन्य हैं वे युग पुरुष जयकार जिनकी हो रही है ।
सूर्य की नव रश्मियाँ भी तेज उनका ढो रही है ।।

कुछ नये सृजन के खातिर स्थिर मेरी साँस है।
मैं लिखूँगा उनके लिए जो दे गये उल्लास है।।
जो देवता बन स्वर्ग में ही बैठ मुस्काते रहे।
जग की पीड़ा हरण करने जो थे कतराते रहे।।

लिखूँ उन वीरों के हेतु शोण जिनने था बहाया।
यहाँ मातृभूमि के लिए कष्ट जिनने था उठाया।।
भार भूमि का हटाने जिनने था अवतार पाया।
नाश करने दैत्यों का शस्त्र जिन्होंने था उठाया।।

तीर्थंकरों की जिन्दगी पर कलम काफी चल चुकी है।
बुद्ध को संसार में तो ख्याति काफी मिल चुकी।।
पीड़ा मनुज की मनुज बनकर जो कभी था हर गया।
जो मनुज बनकर देवता से काम भू पर कर गया।।

धर्म की ज्योति जलाकर जो धरा से चल दिया हो।
चोट खा पाषाण की जिसने जगत को फल दिया हो।।
देता है वो देवता पर मैंने तो देखा नहीं।
लिखूँगा उनके लिए जिनने घुटनों को टेका नहीं।।

अहिंसा संग सत्य की बातें जिसने हों बताई।
आदमी की आदमी से दूरियाँ जिसने मिटाई।।
तोड़ना सीखा नहीं जो बस जानते थे जोड़ना।
चाहा जिन्होंने युग के पाँवों को सदा ही मोड़ना।।

जाति, भाषा, धर्म की प्राचीर जिसने तोड़ी हो।
समय की धारा को जिसने समय रहते मोड़ी हो।।
कौन है वह युग पुरुष जो मेरी कलम को गति देगा?
ज्ञान का आलोक देकर कौन मुझको मति देगा?

प्रश्न स्वयं से किया गया उत्तर खुद से पाना था।
तैर गया आंखों में तब बीता हुआ जमाना था।।
दुःख हर्ता - सुख कर्ता बन जो ग्राम नगर में घूमे।
महलों के संग झोंपड़ियों ने जिनके पद तल चूमे।।

उन पर कलम चलाने का दृढ़ निश्चय मैंने ठान लिया।
किस ओर कलम को चलना था पथ उसने पहचान लिया।।
पूज्य प्रवर्तक दीनदयाला दिया मुझे उद्घोष सुनाई।
हुए प्रफुल्लित रोम रोम चमक मेरे नयनों में आई।।

मुझे लगा सूरज मेरे अंतर में आज उतर आया।
शुभ प्रभात में मैंने भी खड़े खड़े जय घोष लगाया।।
जिनके पावन पद को छूकर मिट्टी लगती चन्दन है।
पूज्य प्रवर्तक पन्ना मुनि को मेरा शत शत वन्दन है।।

इस काव्य कलश का अक्षर महंगा है मरकत मणियों से।
नहीं भूलकर इन्हें तोलना तुम हीरे की कणियों से।।
जो दिया मुनिवर ने जग को वह अनमोल खजाना है।
उपदेश मनन उनका करलो सुख समृद्धि यदि पाना है।।

काव्य कलश को पढ़कर के जो जग में रसपान करेगा।
वर्षा होगी वैभव की जीवन में उत्थान करेगा।।
जब जब भी जिसको समय मिले एक यही बस काम करें।
नित महाप्राज्ञ पन्ना के वह चरणों में कोटि प्रणाम करें।।

जिन जिन गलियों में वे घूमे उनको मैंने नमन किया।
नमन किया उस वन को भी गुरुवर ने जिसको चमन किया।।
पूजा की मैंने सड़कों की हर पगडंडी को पूजा है।
जिनने भी उनके दर्श किये उनको जा जा कर बूझा है।।

नाम सुना हर्षाये श्रावक श्रमणों ने जय जय कार किया।
उस दिव्य पुन्ज ने इस धरती का आकर के उद्धार किया।।
श्रावक और श्राविका उनका नाम लेते ना थकते हैं।
श्रमण श्रमणियों को अब भी वे दिव्य रूप में दिखते हैं।।

सूरज, चाँद, सितारे उनकी निशदिन झलक दिखाते हैं।
सन्देश पवन के झोकों से नित अब भी उनके आते हैं।।
विश्व शान्ति के लिए उन्होंने मैत्री का सन्देश दिया।
शोषण चक्र मिटाने का नित मुनिवर ने उपदेश दिया।।

क्षमा वीर का है भूषण सब धारण इसको धीर करें।
त्याग भाव को अपना करके दूर धरा की पीर करें।।

हे मानव ! तुम जिनवाणी का यहां अहर्निश पान करो।
पाना है भगवान अगर तो दीनों का सम्मान करो।।

तोड़ अहम् की दीवारें अब सबको गले लगाना है।
शूल हटाकर जग बगिया में हमको सुमन खिलाना है।।
शिक्षा और चिकित्सा दोनों उत्तम सेवा कर्म है।
कर्म निर्जरा होती इनसे ये ही पावन धर्म है।।

तमिस्त्र बाह्य हरने वाला तो कहलाता आदित्य है।
मन का तमस हरे जो जग में वह होता साहित्य है।।
अष्ट प्रहर उजियाला तुमको इस धरती पर पाना है।
सद्ग्रन्थों की करनी पूजा उनको ही अपनाना है।।

सद् पुरुषों के जीवन पर 'शशिकर' ने कलम चलाई है।
अक्षर को आकार दिया महिमा अंतर से गाई है।।
पन्ना की काव्य कथा जग में जो सुनकर यदि सुनायेगा।
दुःख होंगे उसके दूर सभी वह लाभ मोक्ष का पायेगा।।

पूज्य प्रवर्तक जय हो जय हो।
सत्य समर्थक जय हो जय हो।।
धर्म सुपोषक जय हो जय हो।
शुभ उद्घोषक जय हो जय हो।।
जिन आराधक जय हो जय हो।
त्यागी साधक जय हो जय हो।।
दीन दयाला जय हो जय हो।
प्रण प्रतिपाला जय हो जय हो।।
एक ही स्वर यहाँ एक हो ताल।
जय प्यारे गुरुवर पन्नालाल।।

परम्परा और प्रशस्ति

१

महा पुण्यवान जीव जहां जहां जन्म लेते,
वहां वहां धरती का मान बढ़ जाता है।
सदियों से धन्य धन्य धरा इस भारत की,
जन्म जीव जीवन को सफल बनाता है।
कुछ ऐसे धीर वीर प्रकट होते यहां,
जिन्हें देख जग सारा शीश को झुकाता है।
'शशिकर' कुल में तो लगते हैं चार चांद,
जीवन सफल सबका ही बन जाता है ।।

प्रभु महावीर का चमन यह प्यारा प्यारा,
कितने ही फूल खिले कितनी ही कलियां।
हर बार आई है बहार नया रूप ले के,
राज पथ महके तो महकी हैं गलियां।
भाव ऐसे मीठे थे कि कुछ मत पूछिये,
उनसे ही मीठी बनी मिश्री की डलियां।
'शशिकर' समय के आगे जोर चले नहीं,
उन्हें छीन ले गया है काल बली छलिया ।।

हुए पूज्य जीवराज, कैसे भूल जायें आज,
उनके ही कुल में तो फैला उजियारा है।
आचार्य श्री भगवन्त, पूजनीय महासन्त,
नानक का नाम लगे सबको ही प्यारा है।
उनका सुनाम वंश, तेरे सन्त कलहंस,
चुगे ज्ञान मोती लेकर धर्म सहारा है।

नानक को धन्य धन्य, सब उनका ही पुण्य,
'शशिकर' बगिया को पन्ना ने संवारा है ।।

निहाल, सदा, नंदा, मया वे गोरधन अरु ज्ञान थे ।
छः शिष्य जो उनको मिले सब धर्म की पहचान थे ।।
पाये आचार्य श्री निहाल ने शिष्य रत्न सात थे ।
तुलसी, उम्मेद, माणक तेज व लक्ष्मी विख्यात थे ।।

वीरभाण व सुखलाल जी भी हुए इस परिवार में ।
आचार्य बन जीवन किया यहाँ सार्थक संसार में ।।
आचार्य वीरभाण को सभी शिष्य मेधावी मिले ।
नित धर्म की जयकार करते वे यहां आगे चले ।।

सौ साधु एक माधु, देव, जय, मोती व लक्ष्मीचंद ।
मेघ, लक्ष्मण संग आये वे गंभीर तजकर द्वन्द ।।
मुनि श्री लक्ष्मणदास जी के शिष्य थे त्रिरत्न प्यारे ।
वदन, मगन, हमीर तीनों बन गये चक्षु के तारे ।।

मगन मुनि महाराज के वे शिष्य पांच महान थे ।
मोती, गज, विजय, केशरी अरु रिखब भू की शान थे ।।
पीर, पन्ना, मोती के शिष्य बने दोनों दुलारे ।
देवी, शंकर, भीखम तीनों ही पन्ना के प्यारे ।।

बाल संग वल्लभ मुनि फिर शिष्य पन्ना ने बनाये ।
पर 'प्राज्ञ किंकर' वल्लभ मुनि बिन गुरु के रह न पाये ।।
वे चल दिये जग छोड़ करके देखते सब रह गये ।
एक दिन जाना है सबको जाते जाते कह गये ।।

छोड़ बिलखता यह जग सारा पन्ना ने महा प्रयाण किया ।
सबने मुनि छोट को मिलकर यहां सम्प्रदाय का भार दिया ।।
उनको प्रवर्तक का पद देकर के नर नारी इठलाते थे ।
लेकिन नाम पन्ना का मुनिवर हर पल ही दोहराते थे ।।

कर निज मुख से वे संलेखना और संथारा छोड़ गये ।
रहा देखता यह जग सारा वे तो मुखड़ा मोड़ गये ।।
वे ज्योतिर्विद, आगम के ज्ञाता कुन्दन बोल नहीं पाये ।
डाली से टूटा फूल देखकर मुख को खोल नहीं पाये ।।

घर श्री चौथमल आँचलिया के दिव्य कुन्दन ने जन्म लिया ।
पाकर के कुक्षी झेलकंवर की शंभूगढ़ को धन्य किया ।।
दीक्षा, ग्राम जामोला में लेकर श्री संघ को मान दिया ।
शास्त्र ज्ञान देकर पन्ना ने नित कुन्दन का उत्थान किया ।।

सदियों बाद धरा पर ऐसा कोई ज्योतिर्विद आता है ।
जिसे देखकर जिन शासन का सिर ऊपर को उठ जाता है ।।
मुनि कुन्दन बने संघ के नायक पद प्रवर्तक का पाया ।
उनका गौरव गान संघ ने निश दिन मुक्त कंठ से गाया ।।

धर्म और शासन का मुनि नेतव निश दिन ही उत्थान किया ।
फिर पाँव पाँव चलता वह सूरज दिव्य लोक में लौट गया ।।
सहसा महा तमस सबकी आँखों में उस दिन ऐसा छाया ।
लेकिन होनी को जग में तो रोक नहीं कोई भी पाया ।।

एक फूल दो कलियाँ महकी बिसन लाल के आंगन में ।
अवनि धन्य मसूदा की थी तेज घीसी के आनन में ।।
सुत घीसीबाई का प्यारा वह बालचंद कहलाया ।
रहकर वे बड़ली में अपना जीवन उच्च बनाया ।।

सुगन कंवर के साथ बाल की महकी जीवन क्यारी थी ।
मदन मिला सुत उनको प्यारा महक उठी फुलवारी थी ।।
जिस दिन मां ने ममता को त्याग स्वर्ग का पथ अपनाया ।
उस दिन से मदन हृदय के अन्दर भी वैराग्य समाया ।।

बोला मुझको माया का अब बन्धन नहीं सुहाता है ।
मन मेरा तो एक ठौर पर यह ठहर नहीं पाता है ।।
लगता है कोई दिव्य तेज मुझको तो वहां बुलाये ।
वहां क्या कारण है गुरुदेव पन्ना चलो बताये ।।

जा पिता पुत्र ने पन्ना के चरणों में शीश झुकाया।
कितनी ही बाधाएँ आई मन पीछे नहीं हटाया॥
पिता-पुत्र के चक्षु से जब दूर हटा अंधियारा।
जामोला में दोनों ने ही व्रत संयम का स्वीकारा॥

वहाँ बालचन्द जी बाल मुनि बन संयम पथ पर आये।
वे मदन लाल भी वल्लभ बनकर इस जग में हर्षाये॥
गुरुदेव की गौरव महिमा वे तो हर क्षण गाते थे।
प्राज्ञ किंकर बनकर के वे तब फूले नहीं समाते थे॥

उन्हें जन्म देने का गौरव बड़ली को यहां मिला है।
शूल कहो या फूल यह 'शशिकर' भी वहीं खिला है॥
जिस मिट्टी में मदन खेल अपने पांवों पर खड़ा हुआ।
सौभाग्य यह मैं भी वहां घुटनों से चलकर बड़ा हुआ॥

प्यारे वल्लभ सदा मुझे वचपन के गीत सुनाते थे।
क्या दिन थे वे वड़ली के मुस्काकर वहां वताते थे॥
सच उस मिट्टी से अव भी मेरा जुड़ा हुआ नाता है।
जव भी उस पर पांव धरूं वचपन वैठा हो जाता है॥

वड़े वड़े वट वृक्ष वहां के पानी ताल तलैया का।
घर के वाहर सांझ पड़े नित वह रंभाना गैया का॥
लेकिन माता की मृत्यु ने मेरे मन को हिला दिया।
जाते जाते उसने तो शायद ज्ञानामृत पिला दिया॥

सौभाग्य गुरु चरणों का यहाँ भूल कभी ना पाऊंगा।
सांसें हैं जव तक जीवन में प्राज्ञ किंकर कहलाऊंगा॥
कहते पन्ना पर कलम चला तुमने पुण्य कमाया है।
सच मानो तो अव तुमने जीवन को धन्य वनाया है॥

कालजयी यह कृति वनेगी आशीर्वाद हमारा है।
महाप्राज्ञ के साथ आज जुड़ गया नाम तुम्हारा है॥
अजमेर नगर में कहे गये शब्द भूल नहीं पाता हूँ।
छवि प्राज्ञ किंकर की मैं आंखों में नित्य वसाता हूँ॥

देकर के मंगल पाठ प्यार से मुझको विदा किया था।
दिल्ली से कब लौटोगे मैंने उत्तर कहाँ दिया था॥
जल्दी आना लौट यहां पर समय बहुत ही थोड़ा है।
मैं समझ नहीं कुछ पाया यह भाव हृदय क्यों दौड़ा है?

दिल्ली में ही जाना कि पंछी पिंजरे को छोड़ गया।
वज्रघात हो गया यह मैं अजयमेरु को दौड़ गया॥
बसा हुआ था सन्नाटा कह कोई कुछ ना पाता था।
स्मरण कर उनको बार बार जीवन का अर्थ बताता था॥

यश, रावतमल सहित फिर शिष्य मौखम गज ने पाया।
शिष्य सोहन को बना मौखम हृदय में हर्ष छाया॥
जन्म देवलिया लिया खुशी थी हर ओर छाई।
छाजेड़ कुल भूषण बने सुज्ञान की ज्योति जलाई॥

सुआलाल व भंवरीबाई सुत को पाकर धन्य हुए।
अग्रज मोहन ने भाई को आज्ञा देकर चरण छुए॥
दो हजार एक फागुन की शुक्ला पंचमी आई।
तीर्थराज पुष्कर में दीक्षा गुरु कृपा से पाई॥

आशु कवि श्री सोहन मुनि ने नानक वंश दिपाया।
स्वाध्याय शिरोमणि मरुधर छवि पद मुनिवर ने पाया॥
सम्प्रदाय की महिमा मुनि ने जग में बहुत बढ़ाई।
देकर पद आचार्य श्री का शुभ चादर ओढ़ाई॥

गुरु के दर्शन कर दो बालक निज को रोक न पाये।
सुदर्शन व प्रियदर्शन दोनों बनकर मुनि इठलाये॥
पुनः खिला इक सुमन मनोहर जो सन्तोष कहाया।
सब सन्तों को देख देख कर जिन शासन हर्षाया॥

मुनि विजयलाल जी ने यहां धूल मुनि को पा पाया।
उन्होंने श्री छोट को अपना ज्ञानी शिष्य बनाया॥
नित्य मुनि छोट ने कुन्दन को अनुपम ज्ञान सिखाया
उनके शिष्य चांद ने निज को चंदा सा चमकाया

नानक वंश महान है, जाने सब संसार ।
जैसे यहाँ विचार हैं, वैसा ही आचार ।।

आचार्य श्री सोहन मुनि, सरल हृदय है बाल ।
सुदर्शन अरु प्रियदर्शन, रखते नित्य खयाल ।।

मुनिवर श्री सन्तोष है, इन सबके ही साथ ।
धर्म ध्यान अरु ज्ञान की, करते हर पल बात ।।

हर पल नानक वंश से, दीप्त हो रहा देश ।
सतियां ज्ञानी बन सभी, करती हैं उपदेश ।।

चार तीर्थ मिलकर करें, सबका ही उपकार ।
नानक, पन्ना की करे, यह जग जय जय कार ।।

भगवान श्री महावीर ने जब ज्ञान का दीपक जलाया ।
तब नारी ने खोया हुआ सम्मान अपना पुनः पाया ।।
उस सती चन्दना को प्रथम श्रमणी का मिला सम्मान था ।
यहां सन्नारियां आगे बढ़ें यह वीर का आह्वान था ।।

तब से अनेकों महासतियां हुई और होती रहेंगी ।
नित पंक्तियां इतिहास की तो उनकी गाथाएं कहेंगी ।।
पावन श्री नानक वंश में भी सैकड़ों सतियां हुई हैं ।
सदा त्याग-तप से धर्म का जो नाम रोशन कर गई हैं ।।

महासती जयवन्त जी को पाकर के श्री संघ धन्य है ।
सच आप जैसी सती जग में आज नहीं दिखती अन्य हैं ।।
वे तिलोली में जन्म लेकर जालिया में दीक्षा पाई ।
हुए तात राजमल जी बाफणा मात उनकी घटुबाई ।।

उत्तम माघ शुक्ला तीज संवत् दो हजार तीन आया ।
जालिया में शुभ दीक्षा लेकर सफल जीवन को बनाया ।।
शिष्य महासती उमराव कंवर जी का मिला नेश्राय था ।
यहां त्याग-तप के साथ गुरु से शिक्षा सदा स्वाध्याय था ।।

जड़ाव, घेवर, रोशन, मैना, रतन ने आ दीक्षा पाई ।
वन सती कमला कुमारी, लता ज्ञान की भी लहलहाई ।।

अनवरत सुशीला व निर्मला भी अग्रजा का ले सहारा ।
वे चल पड़ीं मुक्ति के पथ पर हृदय व्रत संयम का धारा ।।

दर्शन लता, चारित्र लता सुनाम सतियों ने है पाया ।
शिक्षा मिली उनको थी पूरी शोध का भी मन बनाया ।।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र संग पी-एच. डी. कमला ने पाई ।
सब श्री नानक वंश के संग देते सतियों को बधाई ।।

सती घेवर कंवर मैना कंवर भी ज्योति बन कर जल रही ।
कीर्ति और कल्प के संग वे सती सुशीलाजी चल रही ।।

लेकर के संयम मान ने भी ज्ञान से सम्मान पाया ।
यहां सर्व सतियों ने सदा ही धर्म का गुणगान गाया ।।

आचार्य श्री और सन्त सतियां ज्ञान की सौरभ लुटाते ।
वे सब ही मुक्ति हेतु अहर्निश आत्मा अपना जगाते ।।

सदा धन्य भारतवर्ष प्यारा कण कण यहां का धन्य है ।
नहीं इस देश सा कोई अभी तक देश भू पर अन्य है ।।

वे शुभ कर्म पूर्व जन्म के इस जन्म में हैं काम आये ।
अनवरत लेखनी के संग में कंठ मेरे गुनगुनाये ।।

यहाँ साँस है जब तक 'शशिकर' सतत धर्म पर चलते रहो ।
नित्य सौरभ मिले संसार को बस सुमन से खिलते रहो ।।

साम्राज्य जब तक तमस का है नित धर्म की ज्योति जलेग
भटक ना जावे कोई भी यह रोशनी जग को मिले

अब नमन के संग आज मन के द्वार [illegible]।
'शशिकर' धर्म के संग दिव्य पुष्पों की सदा [illegible]।

सत्य अहिंसा प्रेम का गूंजे घर घर गान।
दया दान से फिर बढे, भारत की पहचान ।।

सोने की चिड़िया बने, अपना भारत देश।
धर्म भाव सब में जगे, यही सन्त उपदेश ।।

खण्ड खण्ड पाखण्ड हो, करें सभी सत्कर्म।
वीर प्रभ की वाणी का, समझे दुनियां मर्म ।।

विश्व शान्ति होगी तभी, जागे समता भाव।
जो तपते हैं धूप में, दें उनको हम छांव ।।

जीओ और जीने दो, यही धर्म का सार।
वो ही 'शशिकर' धन्य है, करे सभी से प्यार ।।